यूनियन सृजन

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष 11, अंक - 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2026

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
Union Bank of India
अच्छे लोग, अच्छा बैंक
Good people to bank with

यूनियन सृजन
प्रकाशन तिथि- 14.05.2026
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका
वर्ष 11, अंक - 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2026

अनुक्रमणिका

✤	सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का संदेश		1
✤	परिदृश्य		2
✤	संपादकीय		3
✤	राजभाषा सृजन - राजभाषा कार्यान्वयन में हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा का महत्व	पवन कुमार झा	4
✤	राजभाषा सृजन - राजभाषा विभाग की नवोन्मेषी पहल	नारायण सिंह	7
✤	कार्यान्वयन सृजन - कॉर्पोरेट कार्यनीति एवं कारोबार उत्कृष्टता वर्टिकल की शब्दावली	चयनिका दुबे	9
✤	भारत में बचत की बदलती आदतें और बैंकिंग क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव	पुनीत कुमार	11
✤	फिनटेक साझेदारी एवं जोखिम नियंत्रण	अभिषेक कुमार सिन्हा	13
✤	काव्य सृजन – अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस	रश्मि कुमारी	14
✤	आज की कमाई, कल की आज़ादी	निखिल पांडे	15
✤	बैंकिंग की असली आधारशिला—ईमानदारी	रोली जोहरी	17
✤	काव्य सृजन – संघर्ष से उत्कर्ष	सत्येंद्र कुमार	18
✤	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	दिव्यांशु पाठक	19
✤	ग्राहक फीडबैक	शारदा साव	21
✤	काव्य सृजन – क्या खोया... क्या पाया	चीना अरोड़ा	22
✤	यात्रा सृजन - बादलों के पार	सी. जिष्णु मोहन	23
✤	केंद्रीय कार्यालय में आयोजित महिला विशेष हिंदी कार्यशाला -2026		26
✤	महिला विशेष हिंदी कार्यशाला – 2026		27
✤	विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम/प्रतियोगिताएँ		29
✤	पर्यावरण बनाम विकास	हिमांशु अग्रवाल	31
✤	सहकारिता और वसुधैव कुटुंबकम	महेशकुमार सदरु कात्रजकर	33
✤	काव्य सृजन – अनहद की ओर	तीर्थंकर सूतधर	34
✤	नए अनुभवों को अपनाने का साहस	रोज़ी गुप्ता	35
✤	काव्य सृजन – मैं भी राष्ट्र कर्मयोगी...	प्रवीण कुमार	36
✤	यात्रा सृजन - वैष्णो देवी और हिमाचल प्रदेश के शक्ति पीठों की यात्रा	जी. राधिका	37
✤	काव्य सृजन – पिता	कुन्दन पाटीदार	38
✤	साहित्य सृजन - विनोद कुमार शुक्ल	अभिषेक चौबे	39
✤	कहानी - समझौता	अभिषेक राज	41
✤	काव्य सृजन – ऋतुराज	सोनम	42
✤	संस्मरण — शुक्रिया फुलरक	साक्षी सिंह	43
✤	काव्य सृजन – मैं खुद को फिर से पाने चला हूँ	मनोज कुमार श्रीवास्तव	44
✤	संस्मरण - एक अविस्मरणीय यात्रा	राजेश मिश्रा	45
✤	आयुष्मान भवः - तेज धूप और गर्मी के मौसम में सेहत	मंगेश टिकार	46
✤	पुस्तक समीक्षा - कलम का सिपाही	शैलेन्द्र कुमार	47
✤	क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया		49
✤	राजभाषा पुरस्कार/समाचार		50
✤	आपकी नज़र में		55

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, मानव संसाधन विभाग, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित।

ई-मेल: union.srijan@unionbankofindia.bank.in | gayathri.ravikiran@unionbankofindia.bank.in दूरभाष: 022-41829288 | मोबाइल: 9849615496

गायत्री रवि किरण द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रिंट्रेड इश्यूज (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, ईएल-179, टीटीसी इंड. एरिया, इलेक्ट्रॉनिक ज़ोन, महापे, ठाणे - 400 710, महाराष्ट्र में मुद्रित और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, 239, यूनियन बैंक भवन, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई-400021 से प्रकाशित।

यूनियन सृजन में प्रकाशित विचार लेखक के अपने हैं। प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि- 14.05.2026

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष 11, अंक - 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2026

मुख्य संरक्षक

आशीष पाण्डेय
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संरक्षक

नितेश रंजन
कार्यपालक निदेशक

एस. रामसुब्रमणियन
कार्यपालक निदेशक

संजय रुद्र
कार्यपालक निदेशक

अमरेश प्रसाद
कार्यपालक निदेशक

मुख्य संपादक

सुरेश चन्द्र तेली
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

संपादकीय सलाहकार

विकास कुमार
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)

जी. एन. दास
महाप्रबंधक

कार्यकारी संपादक

विवेकानंद
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.)

संपादक

गायत्री रवि किरण
मुख्य प्रबंधक (रा.भा.)

संपादकीय सहयोग

मोहित सिंह ठाकुर
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

जागृति उपाध्याय
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

अंशुली आर्या, आई.ए.एस.
सचिव
ANSHULI ARYA, I.A.S.
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की हिंदी गृह पत्रिका "यूनियन सृजन" के मार्च, 2026 अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जहाँ भाषाई विविधता इसकी सांस्कृतिक समृद्धि की परिचायक है। ऐसे बहुभाषिक परिदृश्य में, संवैधानिक रूप से राजभाषा हिंदी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट है। यह हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है कि हम अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को सुनिश्चित करें तथा उसकी प्रतिष्ठा और व्यापक स्वीकार्यता को निरंतर सुदृढ़ करने हेतु सक्रिय प्रयास करें।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के विकास एवं उसके प्रभावी प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ-साथ कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने हेतु अनुकूल वातावरण के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होता है। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने आधुनिक बैंकिंग आवश्यकताओं के अनुरूप प्रौद्योगिकी के प्रभावी और समावेशी उपयोग को अपनी कार्यनीति का अभिन्न अंग बनाते हुए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में डिजिटल नवाचारों को अपनाकर सराहनीय पहल की है।

मैं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को पत्रिका "यूनियन सृजन" के नूतन अंक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(अंशुली आर्या)

तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन, जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001
फोन : (91) (11) 23438266, फैक्स : (91) (11) 23438267, ई-मेल : secy-ol@nic.in

परिदृश्य

प्रिय यूनियनाइट्स,

1. सर्वप्रथम, मैं आप सभी को आपके अथक परिश्रम, निष्ठा और समर्पण के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आपके सामूहिक प्रयासों से बैंक ने वित्तीय वर्ष 2025–26 में अब तक का सर्वोत्तम निवल लाभ दर्ज किया है।

2. मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के अंतर्गत राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के लिए वित्तीय सेवाएं विभाग के द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को द्वितीय स्थान प्रदान किया गया है। यह निश्चय ही हम सब के लिए गौरव का क्षण है।

3. पदोन्नति प्रक्रिया में सफलता प्राप्त साथियों को मैं हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। पदोन्नति एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, तथापि, यह स्वयं में अंतिम नहीं है। वास्तव में जो मायने रखता है वह है - निरंतर सीखना और पेशेवर विकास के प्रति प्रतिबद्ध रहना। मैं सभी से आग्रह करता हूँ कि आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ते रहें और बैंक की प्रगति में योगदान जारी रखें।

4. वित्तीय वर्ष 2025–26 के दौरान बैंक ने ग्राहक सेवा उत्कृष्टता, परिचालन दक्षता तथा कर्मचारी कौशल विकास के क्षेत्र में कई पहल की है। कासा संग्रहण को बढ़ावा देने, खुदरा व एमएसएमई कारोबार के विस्तार, डिजिटल संपर्क माध्यमों के सुदृढ़ीकरण, महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने तथा विभिन्न आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से बैंक ने अपने कुल कारोबार में संतोषजनक वृद्धि दर्ज की है। खुदरा मीयादी जमा और खुदरा ऋण संवर्ग में भी हमें ठोस परिणाम प्राप्त हुए हैं। इन उपलब्धियों के लिए मैं विशेष रूप से फील्ड में कार्यरत सभी स्टाफ सदस्यों के प्रयासों की सराहना करता हूँ।

5. **यूनियन दृष्टिकोण** से आप सभी सुपरिचित हैं। यह कर्मचारियों के साथ सीधा और प्रभावी संवाद स्थापित करने का एक माध्यम है। अटल ग्राहक केंद्रितता के लिए हमारे बैंक को जाना जाता है जो ग्राहकों के साथ सटीक संवाद और ग्राहक संतुष्टि पर केंद्रित है। ग्राहकों को दी जा रही प्रत्येक सेवा और सहयोग विनियामक तथा बैंक के दिशा निर्देशों के अनुरूप, पूर्ण जिम्मेदारी और समानुभूति के साथ प्रदान किया जाना चाहिए।

6. हमारा संगठनात्मक मंत्र **"कारोबार सर्वोपरि, अनुपालन निरंतर"** केवल एक विचारधारा नहीं, बल्कि हमारी कार्यसंस्कृति का मूल आधार है। स्थायी और संतुलित विकास तभी संभव है जब कारोबारी विस्तार के साथ-साथ नियामकीय अनुपालन, जोखिम प्रबंधन और प्रक्रियात्मक अनुशासन को समान महत्व दिया जाए। यही संतुलन बैंक की साख, विश्वसनीयता और दीर्घकालिक सफलता को सुनिश्चित करता है।

7. नए वित्तीय वर्ष में भी बैंक का फोकस कृषि, खुदरा ऋण, एमएसएमई और कासा क्षेत्रों पर केंद्रित रहेगा। परिचालन अपेक्षाओं के साथ-साथ अनुपालन सुनिश्चित करना, समयबद्ध रिपोर्टिंग तथा रिकॉर्ड के रखरखाव पर विशेष ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। विनियामक दिशा-निर्देशों का सख्ती से अनुपालन बैंक की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए अनिवार्य है। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि प्रक्रियात्मक अनुशासन के साथ अपने कार्यों का निष्पादन करें। मुझे विश्वास है कि हम सब अपने सामूहिक प्रयास, दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता के बल पर सफलता के नए आयाम स्थापित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर अपनी मातृ संस्था को राजभाषा कार्यान्वयन और कारोबार उत्कृष्टता की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(आशीष पाण्डेय)

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

'यूनियन सृजन' के इस नवीन अंक के साथ एक बार फिर आपके समक्ष उपस्थित होना हमारे लिए हर्ष का विषय है। बदलते सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिदृश्य के बीच यह गृह-पत्रिका बैंकिंग जगत की नब्ज़ को पकड़ते हुए भाषा, साहित्य, संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं की समग्र अभिव्यक्ति करने हेतु प्रयत्नशील है।

मार्च 2026 के इस अंक में विषयवस्तु, दृष्टिकोण और प्रस्तुति—तीनों स्तरों पर विविधता और संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े नीतिगत विषयों के साथ-साथ बैंकिंग और सामान्य रुचि के विभिन्न लेखों को इस अंक में स्थान दिया गया है। यह विविधता 'यूनियन सृजन' की उस दूरदर्शी सोच को रेखांकित करती है, जिसमें ज्ञान और संवेदना, कार्य और विचार—दोनों को समान महत्व प्राप्त है।

इस अंक में 'राजभाषा कार्यान्वयन में हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा का महत्व' तथा 'कॉर्पोरेट कार्यनीति एवं कारोबार उत्कृष्टता वर्टिकल की शब्दावली' जैसे आलेख राजभाषा हिंदी की प्रशासनिक, तकनीकी और व्यावहारिक भूमिका को उजागर करते हैं।

बैंकिंग क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग के साथ हिंदी की भूमिका निरंतर विस्तृत हो रही है—और यह परिवर्तन नीतियों से लेकर ग्राहक सेवा तक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। वर्तमान समय की वित्तीय आवश्यकताओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए 'आज की कमाई, कल की आज़ादी', 'भारत में बचत की बदलती आदतें और बैंकिंग क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव' तथा 'फिनटेक साझेदारी एवं जोखिम नियंत्रण' जैसे लेख बैंकिंग के वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की दिशा—दोनों की यथार्थपरक झलक प्रस्तुत करते हैं। ये लेख न केवल व्यावसायिक रूप से प्रासंगिक हैं, बल्कि पाठकों को वित्तीय रूप से जागरूक, सजग और आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस अंक का साहित्यिक और रचनात्मक पक्ष इसे बौद्धिक मंच के रूप में स्थापित करता है। 'पर्यावरण बनाम विकास' और 'सहकारिता और वसुधैव कुटुंबकम' जैसे आलेख समकालीन चुनौतियों, मानवीय मूल्यों और सामूहिक उत्तरदायित्वों पर गंभीर तथा सार्थक विमर्श प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त कविताएँ, यात्रा वृत्तांत, अनुभव कथाएँ और व्यक्तित्व आलेख पाठकों को आत्ममंथन, संवेदना और सृजनात्मक आनंद का सजीव अनुभव कराते हैं।

वास्तव में, 'यूनियन सृजन' विचारों, अनुभवों और रचनात्मक ऊर्जा का साझा मंच है—जहाँ स्टाफ सदस्यों, और रचनाकारों की सहभागिता इसे निरंतर समृद्ध करती रहती है। हमारे लिए यह अत्यंत गर्व का विषय है कि पाठकों का निरंतर स्नेह, विश्वास और सहयोग इस पत्रिका को निरंतर आगे बढ़ा रहा है।

हम संपादकीय मंडल, मार्गदर्शकों, लेखकों और सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिनके निरंतर प्रयासों और रचनात्मक योगदान से यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हो सका। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आपको सूचना और जानकारी प्रदान करने के साथ रोचकता एवं पठनीयता की दृष्टि से भी संतुष्ट करेगा।

आपके बहुमूल्य विचारों, सुझावों और रचनात्मक सहभागिता की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीया,

गायत्री रवि किरण

राजभाषा कार्यान्वयन
हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा का महत्व

राजभाषा हिंदी का संवैधानिक आधार भारतीय संविधान में स्पष्ट रूप से स्थापित है। हिंदी न केवल प्रशासनिक कार्यों की भाषा है, बल्कि यह राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय की भी प्रतीक है। संविधान ने हिंदी को सम्मानजनक स्थान देते हुए अन्य भारतीय भाषाओं के साथ संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया है। अतः हिंदी का विकास और उसका व्यापक प्रयोग देश की एकता और प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 के माध्यम से सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों एवं बैंकों में हिंदी के प्रयोग की रूपरेखा स्पष्ट की गई है।

बैंक एक प्रशासनिक एवं सेवा संस्थान हैं, जिनका सीधा संबंध करोड़ों आम नागरिकों से है। अतः यदि बैंक के कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हो, तो जनता से उनका संवाद और भी सहज, सुगम और प्रभावी होगा।

हिंदी दिवस का महत्व

हिंदी दिवस केवल भाषा का उत्सव नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, एकता और राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक भी है। हिंदी दिवस न केवल भाषाई गौरव का प्रतीक है, बल्कि यह राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उठाए गए कदमों को भी सशक्त बनाता है। हिंदी दिवस का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा को राष्ट्र की पहचान और संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करना है। प्रशासनिक कार्यों में सरलता, पारदर्शिता और सुगमता लाने के लिए यह आवश्यक है कि राजभाषा का प्रयोग बढ़े। भारत की बड़ी जनसंख्या हिंदी बोलती और समझती है, ऐसे में सरकारी कामकाज को हिंदी में किए जाने से आम नागरिक को शासन-प्रशासन से सहज जुड़ाव मिलता है।

इस प्रकार, हिंदी दिवस हमें राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की याद दिलाता है और नई ऊर्जा प्रदान करता है। हिंदी दिवस हमें यह संदेश देता है कि राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है जब भाषा, संस्कृति और पहचान को संरक्षित किया जाए।

राजभाषा कार्यान्वयन केवल नियमों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भाषा को व्यवहार में लाने की प्रक्रिया है। हिंदी दिवस के अवसर पर मंत्रालयों, विभागों तथा विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु विशेष कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। इससे न केवल कर्मचारियों और अधिकारियों में हिंदी के प्रयोग की प्रवृत्ति विकसित होती है, बल्कि आमजन तक यह संदेश भी पहुँचता है कि हिंदी केवल भावनात्मक जुड़ाव की भाषा नहीं, बल्कि प्रशासन और कार्यपालिका की सशक्त भाषा भी है।

हिंदी दिवस यह भी स्मरण कराता है कि राजभाषा कार्यान्वयन का लक्ष्य पूरे देश के लिए एक साझा संवाद माध्यम उपलब्ध कराना है। हिंदी के प्रयोग से कार्यालयीन कार्य सरल होते हैं और नागरिकों का शासन व्यवस्था पर विश्वास बढ़ता है। राजभाषा विभाग तथा विभिन्न सरकारी कार्यालयों द्वारा वर्षभर चलाए जाने वाले कार्यक्रम इसी उद्देश्य को सशक्त करते हैं।

इसके साथ ही हिंदी दिवस का महत्व यह भी है कि प्रशासन, शिक्षा, न्यायपालिका और बैंकिंग जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हिंदी को और अधिक अपनाया जाए ताकि आम नागरिक को सरल और सहज भाषा में सरकारी सेवाएँ उपलब्ध हों। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि हिंदी केवल संचार का साधन नहीं, बल्कि जन-जन को जोड़ने वाली शक्ति है।

हिंदी दिवस हमें अपनी भाषाई अस्मिता और सांस्कृतिक पहचान के महत्व का एहसास कराता है। राजभाषा कार्यान्वयन तभी सफल होगा जब हिंदी का प्रयोग केवल औपचारिकता न होकर व्यावहारिक जीवन का हिस्सा बने। यही कारण है कि हिंदी दिवस पर यह संकल्प लिया जाता है कि हम अपने कार्यालयीन कार्यों, संवाद और लेखन में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे।

अतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी दिवस राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में एक प्रेरक अवसर है। यह न केवल भाषा के संवर्धन और प्रसार का माध्यम है, बल्कि नागरिक और प्रशासन के बीच संवाद को सहज बनाने का भी महत्वपूर्ण साधन है।

बैंकिंग क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन की आवश्यकता

बैंकिंग क्षेत्र, जो आम नागरिकों के जीवन का प्रत्यक्ष अंग है। इसमें राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन केवल भाषा का प्रचार-प्रसार नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और वित्तीय समावेशन की दिशा में एक ठोस कदम है। जब ग्राहक अपनी भाषा में बैंक से संवाद करेगा, तभी वह पूरी निष्ठा और आत्मविश्वास के साथ वित्तीय सेवाओं से जुड़ पाएगा। राजभाषा कार्यान्वयन के माध्यम से हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें। इससे न केवल ग्राहक संतुष्टि बढ़ेगी बल्कि बैंकिंग क्षेत्र अधिक सशक्त, पारदर्शी और जनोन्मुख बन सकेगा।

1. **ग्राहकों की सुविधा हेतु:** बैंक का मुख्य उद्देश्य जनता को वित्तीय सेवाएँ प्रदान

करना है। यदि बैंकिंग सेवाएँ केवल अंग्रेज़ी या अन्य सीमित भाषाओं में उपलब्ध हों, तो बड़ी संख्या में ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्र के ग्राहक सेवाओं से वंचित रह जाते हैं। हिंदी राजभाषा के रूप में कार्यान्वित होने पर ग्राहकों को उनकी मातृभाषा के निकटतम भाषा में सेवाएँ प्राप्त होती हैं। इससे बैंकिंग प्रणाली में उनका विश्वास बढ़ता है और वे अधिक सक्रिय रूप से वित्तीय गतिविधियों से जुड़ते हैं।

2. **वित्तीय समावेशन को बढ़ावा:** भारत सरकार का लक्ष्य है कि समाज का प्रत्येक वर्ग बैंकिंग सेवाओं से जुड़कर मुख्यधारा में आए। जब बैंक अपने फॉर्म, पासबुक, एटीएम संदेश, मोबाइल बैंकिंग ऐप और अन्य दस्तावेज़ हिंदी में उपलब्ध कराते हैं, तो आमजन को सहजता से इन सेवाओं का लाभ उठाने का अवसर मिलता है। यह वित्तीय समावेशन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
3. **कर्मचारी दक्षता और कार्यकुशलता:** बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग से कर्मचारियों को ग्राहकों से संवाद करने में आसानी होती है। प्रशिक्षण, पत्राचार और आंतरिक कार्यों में राजभाषा का प्रयोग करने से कार्य की गति और पारदर्शिता में वृद्धि होती है।
4. **राष्ट्रीय एकता और भाषा का संवर्धन:** हिंदी देश की संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है। जब बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा तो न केवल प्रशासनिक कार्यों में सरलता आएगी बल्कि राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक जुड़ाव भी मजबूत होगा। बैंकिंग जैसी सार्वजनिक सेवा संस्था में हिंदी के प्रयोग से भाषा का सम्मान और व्यापक प्रयोग सुनिश्चित होता है।

बैंकिंग में हिंदी दिवस के मुख्य उद्देश्य:

बैंकिंग संस्थानों में हिंदी दिवस मनाने का उद्देश्य मात्र एक औपचारिकता निभाना नहीं है, बल्कि यह कर्मचारियों, ग्राहकों और प्रबंधन को यह स्मरण कराना है कि हिंदी का प्रयोग उनकी कार्य संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है।

बैंकिंग क्षेत्र सीधे आम जनता से जुड़ा हुआ है। भारत में करोड़ों लोग ऐसे हैं जिनकी अंग्रेज़ी पर पकड़ कमज़ोर है, लेकिन वे हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में सहजता महसूस करते हैं। ऐसे में बैंकिंग में हिंदी का प्रयोग कई मायनों में ज़रूरी हो जाता है। हिंदी दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि राष्ट्र की सशक्त पहचान उसकी भाषा और संस्कृति से जुड़ी होती है। बैंकिंग जैसे संवेदनशील और व्यापक क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग न केवल सुविधा प्रदान करता है, बल्कि वित्तीय साक्षरता और समावेशन की दिशा में भी अहम भूमिका निभाता है। अतः हिंदी दिवस का महत्व केवल उत्सव तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बैंकिंग और अन्य क्षेत्रों में हिंदी को बढ़ावा देकर जनता के सशक्तिकरण का मार्ग भी प्रशस्त करता है। बैंकिंग में हिंदी दिवस के कुछ उद्देश्य निम्नलिखित हैः-

- बैंक अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
- ग्राहकों को यह विश्वास दिलाना कि उनकी भाषा में सेवा उपलब्ध है।
- तकनीकी शब्दावली, बैंकिंग दस्तावेज़ और प्रक्रियाओं को हिंदी में सरल रूप में प्रस्तुत करना।
- राजभाषा अधिनियम और नियमों के पालन की याद दिलाना।

हिंदी पखवाड़ा/माह: जागरूकता और सहभागिता का अभियान

केवल एक दिन का उत्सव पर्याप्त नहीं है। इसी विचार से विभिन्न कार्यालयों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा/दिवस/माह मनाने की परंपरा है। इस अवधि में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनसे कर्मचारियों और ग्राहकों के बीच हिंदी के प्रयोग के प्रति प्रोत्साहन पैदा होता है। हिंदी हमारी मातृभाषा ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा का स्वर भी है। इसके संरक्षण और प्रसार के लिए प्रतिवर्ष हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा अथवा हिंदी माह जैसे आयोजन किए जाते हैं। इन अभियानों का उद्देश्य केवल भाषा का प्रचार करना नहीं, बल्कि जनमानस में अपनी भाषा के प्रति गर्व और अपनत्व की भावना जगाना है।

इसलिए, हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि सहभागिता और संवेदनशीलता का अवसर है। यदि हम सब सक्रिय होकर इसमें भाग लें, तो हिंदी न केवल राष्ट्रभाषा बल्कि विश्वपटल पर और भी सशक्त पहचान बनाकर उभरेगी।

बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी पखवाड़ा के प्रमुख आयोजन:

1. **हिंदी निबंध, वाद-विवाद, कविता और लेखन प्रतियोगिताएँ–** कर्मचारियों और अधिकारियों में हिंदी लेखन-पठन की प्रवृत्ति बढ़ाने हेतु।
2. **कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण–** बैंकिंग तकनीकी शब्दावली, सॉफ्टवेयर और रिपोर्टिंग में हिंदी के प्रयोग हेतु प्रशिक्षण।
3. **हिंदी पत्रिका/न्यूज़लेटर प्रकाशन–** शाखाओं और मंडलों में हिंदी सामग्री साझा करने से सृजनात्मकता को बढ़ावा।
4. **ग्राहक जागरूकता अभियान –** ग्राहकों को हिंदी में सेवा सुविधा की जानकारी देना।
5. **पुरस्कार एवं सम्मान –** राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों/शाखाओं को सम्मानित करना।

हिंदी दिवस/पखवाड़ा: परिणाम और प्रभाव

बैंकों में हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा मनाने के फलस्वरूप अनेक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इन आयोजनों का उद्देश्य केवल भाषा के प्रचार-प्रसार तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह कर्मचारियों में आत्मविश्वास, कार्यकुशलता तथा सांस्कृतिक जुड़ाव की भावना भी विकसित करता है।

1. **बैंकों के दस्तावेज़ और पत्राचार में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है।**

   पखवाड़ा आयोजित होने से कर्मचारियों को यह प्रोत्साहन मिलता है कि वे टिप्पण लेखन, पत्र-व्यवहार तथा रिपोर्ट तैयार करने में हिंदी का प्रयोग करें। इससे आधिकारिक कार्यों में हिंदी का स्थान और मजबूत हुआ है।

2. **कर्मचारियों की रुचि हिंदी लेखन-पठन में बढ़ी है।**

   विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबंध लेखन, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी इत्यादि के माध्यम से कर्मचारियों का रुझान हिंदी की ओर स्वाभाविक रूप से बढ़ा है। वे अब न केवल कार्य में बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी हिंदी लेखन-पठन को अपनाने लगे हैं।

3. **ग्राहकों की भाषा में संवाद से सुविधा और विश्वास बढ़ा है।**

   जब कर्मचारी ग्राहकों से हिंदी में बात करते हैं, तो उन्हें अधिक आत्मीयता और सहजता का अनुभव होता है। बैंकिंग सेवाओं को समझना सरल हो जाता है और ग्राहकों का विश्वास बैंक पर और अधिक मजबूत होता है।

4. **कार्यालयीन कार्यों में सरलता और पारदर्शिता आई है।**

   हिंदी भाषा का प्रयोग होने से काम अधिक स्पष्ट, सरल और सहज हो गया है। जटिल तकनीकी या अंग्रेज़ी शब्दों की तुलना में हिंदी भाषा ग्राहकों और कर्मचारियों दोनों के लिए समझने योग्य सिद्ध हो रही है।

5. **कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता दिखाने का अवसर मिलता है।**

   हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियाँ आयोजित होती हैं। इनमें भाग लेकर कर्मचारी अपनी लेखन-क्षमता, वक्तृत्व-कला और सृजनात्मक सोच को सामने लाते हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास का विकास होता है।

हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा, बैंकिंग क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को गति प्रदान करने वाले महत्वपूर्ण अवसर हैं। ये न केवल कर्मचारियों और अधिकारियों को हिंदी प्रयोग के प्रति जागरूक करते हैं, बल्कि ग्राहकों को यह विश्वास भी दिलाते हैं कि उनकी भाषा को महत्व दिया जा रहा है।

वास्तव में, जब तक बैंकिंग सेवाएँ जनता की भाषा में उपलब्ध नहीं होंगी, तब तक आर्थिक समावेशन और वित्तीय साक्षरता के लक्ष्य पूर्ण नहीं हो पाएँगे। अतः आवश्यकता है कि हिंदी दिवस और पखवाड़े को औपचारिकता न मानकर, एक आंदोलन और सामूहिक प्रतिबद्धता के रूप में देखा जाए। वास्तव में तभी हिंदी में बैंकिंग - बैंकिंग में हिंदी संभव हो पाएगा।

पवन कुमार झा
अं. का., पटना

दिनांक 27.03.2026 को केंद्रीय कार्यालय की 185वीं राभाकास बैठक में श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, कार्यपालक निदेशकगण श्री नितेश रंजन, श्री एस. रामसुब्रमणियन तथा अन्य कार्यपालकों द्वारा हिंदी कार्टून पुस्तिकाएँ 'यूनियन ग्रीन कार्ड' तथा 'स्मार्ट कदम, सुरक्षित कल' का विमोचन किया गया।

राजभाषा विभाग की नवोन्मेषी पहल

राजभाषा विभाग, भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन कार्य करता है। यह विभाग संविधान द्वारा प्रदत्त एक महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करता है। इसका प्रमुख उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि संघ सरकार के सभी कार्यालयों, जिनमें मंत्रालय, विभाग, कार्यालय, संस्थान, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (पीएसयू) और राष्ट्रीयकृत बैंक शामिल हैं, में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हो। इसके साथ साथ राजभाषा विभाग यह भी सुनिश्चित करता है कि सरकारी कर्मचारियों को हिंदी सीखने और उसका प्रयोग करने के लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा का सशक्तिकरण

कंप्यूटर और मोबाइल के क्षेत्र में आई तकनीकी क्रांति ने कार्यप्रणाली को पूरी तरह बदल दिया है। इस परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने सी डैक, पुणे (इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक संस्था) के सहयोग से कई सॉफ्टवेयर, ई टूल्स और तकनीकी समाधान विकसित किए हैं।

इन नवोन्मेषी पहलों का उद्देश्य अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी भाषा सीखने में सहायता प्रदान करना, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान/ हिंदी शिक्षण योजना द्वारा संचालित स्व शिक्षण पाठ्यक्रमों को सरल बनाना, सरकारी दस्तावेजों का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करना, कार्यालयों के अधिकांश दैनिक कार्य कंप्यूटर पर हिंदी में करने में सुविधा प्रदान करना है। इनमें से कई ई टूल्स को इंटरनेट (वर्ल्ड वाइड वेब) तथा स्मार्टफोन (एंड्रॉयड एवं आईओएस प्लेटफॉर्म) पर भी उपलब्ध कराया गया है। इन पहलों का संक्षिप्त परिचय कुछ इस प्रकार है -

हिंदी शब्द सिंधु

(एक बृहत् और समावेशी डिजिटल शब्दकोश)

राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को समाहित करते हुए 'हिंदी शब्द सिंधु' नामक हिंदी से हिंदी बृहत शब्दकोश का निर्माण करना है। हिंदी शब्द सिंधु राजभाषा विभाग की एक महत्वपूर्ण और अनूठी पहल है। इस पहल का लक्ष्य हिंदी को समृद्ध और आधुनिक स्वरूप प्रदान करना है। यह हिंदी से हिंदी का विशाल डिजिटल शब्दकोश है, जिसमें भारत की भाषाईविविधता को समाहित किया गया है। यह परियोजना वर्ष 2021 में राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) और केंद्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय) के संयुक्त तत्वावधान में शुरू की गई। इसमें विभिन्न विषयों– जनसंचार, आयुर्वेद, खेलकूद, अंतरिक्ष विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव-विज्ञान, वैमानिकी, कंप्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, भू-गर्भशास्त्र, मानविकी आदि से संबंधित शब्दावली के साथ-साथ पारंपरिक शब्दावली को भी समाहित किया जा रहा है। इस शब्दकोश में शब्द की प्रविष्टि के साथ-साथ उसकी व्याकरणिक कोटि, अर्थ, पर्याय, आवश्यकतानुसार प्रयोग, विलोम, मुहावरे एवं तत्संबंधी अन्य आवश्यक जानकारी दी गई है। यह एक ऐसा शब्दकोश होगा जो पूर्णतः अद्यतन और समावेशी होगा तथा इसमें हिंदी में प्रयुक्त होने वाले सभी शब्दों का अर्थ सहित संग्रह होगा।

मुख्य विशेषताएँ

- हिंदी और हिंदी क्षेत्र की बोलियों व उपभाषाओं के शब्द
- अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्द
- शब्दकोश केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानकीकृत वर्तनी के अनुसार
- तकनीक और विज्ञान के शब्द
- यह शब्दकोश पूर्णतया डिजिटल तथा खोजपरक (सर्चेबल) है
- पूरी तरह डिजिटल और वेब आधारित
- यूनिकोड फॉन्ट का उपयोग
- हिंदी, अंग्रेजी में टंकन कर शब्द खोजने की सुविधा
- बोल कर शब्द खोजने की क्षमता
- भारतीय भाषाओं के बीच साझा शब्द-संपदा का सेतु निर्मित करना
- आठवीं अनुसूची में शामिल भारतीय भाषाओं के की-बोर्ड की सहायता से टंकण कर शब्द खोजने की सुविधा
- किसी भी शब्द के विस्तृत डाटा की उपलब्धता

हिंदी शब्द सिंधु का उद्देश्य हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को संरक्षित करना, तकनीकी शब्दावली को मानकीकृत करना और सरकारी, शैक्षणिक व प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को सरल और प्रभावी बनाना है। यह पहल भारत की भाषाईविविधता को सहेजते हुए डिजिटल युग में हिंदी के सशक्तिकरण की दिशा में एक मील का पत्थर है। वेबलिंक: https://hindishabdsindhu.rajbhasha.gov.in/

भारती – बहुभाषी अनुवाद सारथी

भारती- बहुभाषी अनुवाद सारथी परियोजना गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की एक पलह है, जिसे सी-डैक के सहयोग से विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य भारतीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देना और हिंदी तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध अन्य 15 भारतीय भाषाओं -जो विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की प्रथम भाषाएं हैं- के बीच समन्वय को मजबूत करना है। भारती-बहुभाषी अनुवाद सारथी का केंद्रीय उद्देश्य न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन

(एनएमटी) और ऑटोमैटिक स्पीच रिकग्निशन (एएसआर) जैसी उन्नत तकनीकों का प्रयोग कर उच्च-गुणवत्ता वाले अनुवाद उपलब्ध कराना है।

प्रमुख लक्ष्य

- प्रभावी अनुवाद के लिए उन्नत सॉफ्टवेयर विकसित करना
- अनुवाद प्रक्रिया को सुगम और व्यवस्थित बनाना
- स्मार्ट तकनीक का उपयोग कर अनुवाद को याद रखना और पुन: उपयोग करना
- विभिन्न भारतीय भाषाओं का समर्थन करना
- उपयोग में आसान टूल्स डिजाइन करना
- प्रतिक्रिया के आधार पर सिस्टम में निरंटर सुधार करना

मुख्य तकनीकी विशेषताएँ

- लोकल एवं ग्लोबल टी.एम. बनाना
- कार्यप्रवाह (वर्क-फ्लो) एकीकरण
- फोल्डर बनाने/ अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/ अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा
- फाइलों साझा करना
- एक समय-विशेष में बनाए गए फोल्डर, फाइलें तथा अनुवाद स्मृति की रिपोर्ट
- द्विभाषिक फाइल को डाउनलोड करना
- विभिन्न फाइल एक्सटेंशन को समर्थन
- फाइल फॉर्मोट को यथावत रखना
- न्यूरल मशीन अनुवाद
- स्वचालित वाक् पहचान
- चौटबॉट

वेबलिंक: https://bharti.rajbhasha.gov.in/

भारतीय भाषा अनुभाग

भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना इस विभाग की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसका शुभारंभ 14-15 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में हिंदी दिवस समारोह, 2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी द्वारा किया गया है। इस अनुभाग की स्थापना किए जाने का प्रयोजन एक ऐसा तंत्र विकसित करना है जिससे केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच पत्राचार राज्य की प्रथम आधिकारिक भाषा में हो सके। इसमें संविधान की आठवीं अनुसूची 15 भारतीय भाषाओं में अनुवाद की सार्वभौमिक व्यवस्था विकसित की गई है।

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य भाषाईसमरसता को बढ़ावा देना है, ताकि विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच संवाद बाधारहित हो सके। इससे नागरिकों को उनकी मातृभाषा में अधिक से अधिक जानकारी उपलब्ध होगी, जिससे शिक्षा, न्याय, प्रशासन और व्यापार के क्षेत्रों में भाषा संबंधी कठिनाइयों कम होंगी।

राजभाषा विभाग के नवोन्मेषी ई-टूल्स केवल हिंदी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को सशक्त बनाने का माध्यम हैं। इससे नागरिकों को उनकी मातृभाषा में सूचना उपलब्ध कराने में सहायता मिलती है और प्रशासन अधिक समावेशी बनता है। राजभाषा विभाग के नवोन्मेषी कार्य और तकनीकी टूल्स हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को डिजिटल युग के अनुरूप सशक्त बना रहे हैं। ये पहलें न केवल राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देती हैं, बल्कि सरल प्रशासन, प्रभावी संचार और राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत करती हैं।

नारायण सिंह
राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग,
कें.का., मुंबई

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति द्वारा दिनांक 06.01.2026 को नराकास, कोच्चि(बैंक एवं बीमा) का निरीक्षण संबंधी प्रमाणपत्र समिति अध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब के कर-कमलों से श्री एस. सक्थिवेल, अध्यक्ष, नराकास(बैंक व बीमा) एवं अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम ने प्राप्त किया। साथ हैं सुश्री बिनु टी एस, सदस्य-सचिव, नराकास(बैंक), कोच्चि।

कॉर्पोरेट कार्यनीति एवं कारोबार उत्कृष्टता वर्टिकल की शब्दावली

कार्यनीति वर्टिकल को सुदृढ़ कर "कॉर्पोरेट कार्यनीति एवं कारोबार उत्कृष्टता" वर्टिकल के रूप में स्थापित किया गया है, जो बैंक के विकास का केंद्रीय आधार बनेगा। विभिन्न कार्यों—जैसे कार्यनीति निर्माण, विश्लेषण, आर्थिक अनुसंधान और परियोजना प्रबंधन—को एकीकृत कर यह वर्टिकल विचारों को कार्यान्वयन में और आंकड़ों को प्रभावी निर्णयों में परिवर्तित करने में सक्षम बनाता है।

यह व्यवस्था कारोबार पहलों के बेहतर प्राथमिकता निर्धारण, डिजिटल प्रक्रियाओं के त्वरित कार्यान्वयन, परियोजनाओं की सुदृढ़ निगरानी तथा समन्वय को सुदृढ़ करती है, साथ ही कर्मचारी एवं ग्राहक केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से समयबद्ध और प्रभावी सुधार सुनिश्चित करती है।

विश्लेषणात्मक मॉडल	Analytical Model
अनुमोदन	Approval
आस्ति गुणवत्ता	Asset Quality
स्वचालित प्रणाली	Automated System
जागरूकता अभियान	Awareness Campaign
शाखा विस्तार	Branch Expansion
बजट अनुमोदन	Budget Approval
कारोबार विस्तार	Business Expansion
कारोबार जुटाना	Business Mobilization
कारोबार परिचालन	Business Operations
कारोबार योजना	Business Plan
विक्रय संभाव्यता	Market Potential
कारोबार प्रक्रिया रूपांतरण (बीपीटी)	Business Process Transformation (BPT)
कासा खाते	CASA Accounts
स्थान की पहचान	Centre Identification
परिवर्तन प्रबंधन	Change Management
कारोबार का प्रारंभ	Commencement of Business
सक्षम प्राधिकारी	Competent Authority
अनुपालन	Compliance
सतत सुधार	Continuous Improvement
समन्वय	Coordination
सुधारात्मक कार्रवाई	Corrective Action

लागत नियंत्रण	Cost Control
ऋण विस्तार	Credit Expansion
ग्राहक केंद्रित दृष्टिकोण	Customer Centric Approach
ग्राहक अनुभव	Customer Experience
ग्राहक संतुष्टि	Customer Satisfaction
डैशबोर्ड	Dashboard
डेटा विश्लेषण	Data Analysis
डेटा भंडार	Data Repository
निर्णयन तंत्र	Decision Making Machinery
निर्णय समर्थन प्रणाली	Decision Support System
जमा संग्रहण	Deposit Mobilization
डिजिटल पहल	Digital Initiative
डिजिटल रूपांतरण	Digital Transformation
प्रभावी उपयोग	Effective Utilization
दक्षता/कुशलता	Efficiency
त्रुटि में कमी	Error Reduction
उत्कृष्टता	Excellence
व्यय प्रबंधन	Expense Management
संभाव्यता अध्ययन	Feasibility Study
अंतराल विश्लेषण	Gap Analysis
अवसंरचना	Infrastructure
नवाचार	Innovation
संस्थागत जमा	Institutional Deposits

आंतरिक समिति	Internal Committee
आईटी अवसंरचना	IT Infrastructure
प्रबंधन सूचना प्रणाली	Management Information System
बाजार विश्लेषण	Market Analysis
बाजार में पैठ/पहुंच	Market Penetration
विपणन समर्थन	Marketing Support
निगरानी	Monitoring
नेटवर्क विस्तार	Network Expansion
नेटवर्क विस्तार समिति	Network Expansion Committee
नेटवर्क साध्यता परीक्षण	Network Feasibility Test
नई शाखा की स्थापना	New Branch Opening
अनर्जक आस्ति	NPA
परिचालन दक्षता/कुशलता	Operational Efficiency
संगठनात्मक ढांचा	Organizational Structure
कार्यनिष्पादन निगरानी	Performance Monitoring
कार्यनिष्पादन समीक्षा	Performance Review
नीति	Policy
नीति कार्यान्वयन	Policy Implementation
निवारक कार्य/कार्रवाई	Preventive Action
प्रक्रिया	Process
प्रक्रिया सुधार	Process Improvement
प्रक्रिया सरलीकरण	Process Simplification
उत्पादकता	Productivity
प्रगति रिपोर्ट	Progress Report
परियोजना प्रबंधन	Project Management
परियोजना निगरानी	Project Monitoring
प्रस्ताव	Proposal
प्रचार-प्रसार	Publicity
क्रय आदेश	Purchase Order

गुणवत्ता सुधार	Quality Improvement
वसूली प्रबंधन	Recovery Management
विनियामक दिशानिर्देश	Regulatory Guidelines
रिपोर्टिंग अवसंरचना	Reporting Structure
संसाधन उपयोग	Resource Utilization
उत्तरदायित्व समनुदेशन	Responsibility Assignment
खुदरा ऋण	Retail Loans
जोखिम प्रबंधन	Risk Management
जोखिम न्यूनीकरण	Risk Mitigation
मूल कारण विश्लेषण	Root Cause Analysis
सेवा प्रदान करना	Service Delivery
सेवा गुणवत्ता	Service Quality
हितधारक	Stakeholder
मानकीकरण	Standardization
कार्यनीतिक योजना	Strategic Plan
कार्यनीति	Strategy
सर्वेक्षण	Survey
लक्ष्य प्राप्ति	Target Achievement
लक्ष्य निर्धारण	Target Setting
टीम प्रबंधन	Team Management
समयसीमा	Timeline
पारदर्शिता	Transparency
निस्तारण समय	Turnaround Time
विक्रेता	Vendor
कार्य आबंटन	Work Allocation
कार्य आदेश	Work Order

चयनिका दुबे
राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग,
कें.का., मुंबई

भारत में बचत की बदलती आदतें और बैंकिंग क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव

कम लागत वाली जमाराशि में कमी और बैंकों के समक्ष चुनौतियाँ

कुछ साल पहले तक अगर आप किसी मध्यमवर्गीय परिवार में जाते, तो घर के बुजुर्ग यही कहते- 'बेटा, जो कमाओ उसका कुछ हिस्सा बचाकर रखो। बुरे वक्त में काम आता है।' यह महज़ एक सलाह नहीं थी, यह एक पूरी पीढ़ी का जीवन- दर्शन था। बैंक की पासबुक संभालकर रखना, मियादी जमा करवाना, पोस्ट ऑफिस में खाता खुलवाना- ये सब उस सोच की अभिव्यक्तियां थीं।

लेकिन बीते दस- बारह सालों में कुछ बदला है। यह बदलाव सतह पर दिखने वाला नहीं है- यह बहुत धीरे- धीरे, अंदर से हुआ है। लोग बचत कर रहे हैं, लेकिन अब उनकी बचत बैंक के बचत खाते में नहीं जा रही। वह कहीं और जा रही है। इसी 'कहीं और' ने भारतीय बैंकिंग तंत्र के सामने एक नई चुनौती खड़ी कर दी है।

पहले कैसा था?

पुरानी पीढ़ी के लिए बचत का मतलब था- महीने का खर्च निकालो, बाकी बैंक में डाल दो। बचत खाते में पैसे रखना एक किस्म की मानसिक शांति देता था। वह पैसा 'दिखता' था, पासबुक में लिखा होता था, ज़रूरत पर हाथ बढ़ाओ तो मिलता था।

इसके अलावा सोना खरीदना, ज़मीन में पैसे लगाना, चिट फंड में हिस्सा लेना आदि। लेकिन बैंक की बचत खाते की अपनी जगह थी, वह सबसे पहला और सबसे सुरक्षित विकल्प माना जाता था।

वेतनभोगी तबका तो और भी अनुशासित था। वेतन मिला, घर का खर्च निकाला, बाकी बैंक में। यही चक्र था। इसी से बैंकों को एक स्थिर, सस्ती जमाराशि मिलती थी जिसे वे आगे ऋण देने में लगाते थे। यह एक तरह का अलिखित समझौता था- ग्राहक पैसे जमा करते हैं, बैंक उन्हें सुरक्षित रखता है।

क्या बदला?

- **मोबाइल ने सब पलट दिया**

  2016 के आसपास जब डिजिटल भुगतान का दौर आया, तो लगा कि बस लेनदेन आसान हो गया। लेकिन इसका असर उससे कहीं गहरा था। जब पैसे भेजना और पाना इतना आसान हो गया, तो लोगों ने सोचना शुरू किया कि पैसे को 'बस रखने' से क्या फायदा? उसे काम पर लगाओ। और यहीं से बात बदली। बचत खाते में पड़े पैसे, जो पहले 'सुरक्षित' लगते थे, अब 'बेकार' लगने लगे। क्योंकि उन पर मिलने वाला ब्याज इतना कम था कि महँगाई उसे निगल जाती थी। यह एहसास धीरे- धीरे फैला, लेकिन फैला ज़रूर।

- **उधार लेना आसान हो गया, बचाना मुश्किल**

  एक और बड़ा बदलाव आया- क्रेडिट की सुलभता। क्रेडिट कार्ड, आसान पर्सनल लोन, 'अभी लो बाद में चुकाओ' जैसी सुविधाएँ। इससे उस मानसिकता पर सीधी चोट पड़ी जो कहती थी 'पहले बचाओ, फिर खरीदो।' अब खरीदारी पहले होने लगी, चुकाना बाद में। नतीजा? जो पैसा पहले बचत खाते में जाता था, वह अब ईएमआई में जाने लगा। घर का बजट वही रहा, लेकिन उसका बँटवारा बदल गया।

- **म्यूचुअल फंड ने असली खेल बदला**

  सबसे बड़ा असर शायद म्यूचुअल फंड ने डाला। 'म्यूचुअल फंड सही है'- यह जुमला मज़ाक में भी लिया जाता था, लेकिन काम उसने सच में कर दिया। 2016 में जो उद्योग 13 लाख करोड़ रुपये का था, वह 2026 तक 82 लाख करोड़ के पार चला गया। यह पैसा आसमान से नहीं आया- यह वही पैसा है जो पहले बैंक के बचत खाते में बैठा रहता था। एसआईपी ने तो कमाल ही कर दिया। हर महीने छोटी- छोटी रकम, सीधे बचत खाते से कट जाती है। ग्राहक को पता भी नहीं चलता और बैंक की कासा जमाराशि घट जाती है।

- **युवाओं के विचार**

  नई पीढ़ी- जो बैंक की शाखा कभी गई ही नहीं, उनके लिए वित्तीय सेवाएँ मोबाइल स्क्रीन पर हैं। वे जानते हैं कि बचत खाते में 3.5% मिलता है और कहीं और 12-15% मिल सकता है तो वे वहाँ जाते हैं। यह लालच नहीं, यह समझदारी है। इस पीढ़ी के लिए बचत का मतलब एसआईपी है, शेयर बाज़ार है, कभी- कभी तो क्रिप्टो भी। बैंक का बचत खाता उनके लिए सिर्फ वह जगह है जहाँ तनख्वाह आती है और जहाँ से खर्च निकलता है।

कासा- बैंकों की ताकत

बैंकिंग की भाषा में एक शब्द है- कासा, यानी चालू खाता एवं बचत खाता। यह बैंक की उस जमाराशि का हिस्सा है जो बचत खाते और चालू खाते में है। इसे 'कम लागत जमाराशि' कहा जाता है क्योंकि बचत खाते पर बैंक को ज़्यादा ब्याज नहीं देना पड़ता- कोई 3-4%- और चालू खाते पर तो कुछ भी नहीं। इसकी तुलना में अगर बैंक को मीयादी जमा से पैसे उठाने हों, तो उसे 6-7% ब्याज देना पड़ता है। यह अंतर बहुत मायने रखता है। जितना ज़्यादा कासा, उतना कम खर्च, उतना ज़्यादा लाभ। यही कासा अनुपात बैंक की 'वित्तीय सेहत' का एक बड़ा पैमाना है।

वर्ष 2019-20 तक कई बड़े बैंकों का कासा 40-45% के आसपास था। वर्ष 2025- 26 में पहुँचते यह घटकर 35-38% रह गया। कुछ

बैंकों में गिरावट इससे भी ज़्यादा है। यह आँकड़ा छोटा लग सकता है, लेकिन इसका मतलब है कि बैंकों की हज़ारों करोड़ की सस्ती जमाराशि दूसरी जगह चली गई।

बैंकों के सामने क्या मुश्किलें हैं?

- **पैसा महँगा हो गया**

  जब कासा घटता है तो बैंक के पास एक ही रास्ता बचता है- महँगे दाम पर ज़मा संग्रहण। इससे उनकी लागत बढ़ती है और 'निवल ब्याज मार्जिन' सिकुड़ने लगता है। लाभ कम होता है। और जब लाभ कम हो तो ऋण देने की क्षमता भी प्रभावित होती है।

- **छोटे बैंकों की मुश्किल और बड़ी है**

  बड़े बैंकों के पास ब्रांड है, नेटवर्क है, तकनीक है। वे किसी तरह अपना कासा बनाए रख लेते हैं। लेकिन जिला सहकारी बैंक, छोटे वित्त बैंक, ग्रामीण बैंक- इनके पास वह ताकत नहीं है। वे ग्राहकों को रोकने के लिए उच्च ब्याज दरें देते हैं, जिससे उनकी लागत बढ़ जाती है। यह एक ऐसा चक्कर है जिसमें से निकलना आसान नहीं।

- **डिजिटल दुनिया की प्रतिस्पर्धा**

  भुगतान बैंक और डिजिटल वित्तीय सेवाएँ भी मैदान में हैं। वे उधार नहीं दे सकते, लेकिन जमाराशि ले सकते हैं और लेनदेन की सुविधा दे सकते हैं-वह भी अक्सर परंपरागत बैंकों से बेहतर अनुभव के साथ। तो ग्राहक वहाँ भी जाता है। बैंकों के लिए यह प्रतिस्पर्धा वैसी नहीं है जैसी पहले थी- अब उन्हें उन लोगों से भी लड़ना है जो बैंक नहीं हैं, लेकिन बैंक का काम करते हैं।

- **ऋण बाँट रहे हैं, जमा नहीं जुटा पा रहे**

  भारतीय रिज़र्व बैंक के आँकड़े बताते हैं कि देश में क्रेडिट जमा अनुपात काफ़ी ऊँचा है लगभग 82% जो कि 2016 में 75%- 77% था । सीधे शब्दों में बैंक जितना जमा इकट्ठा कर रहे हैं, उससे ज़्यादा उधार दे रहे हैं। यह अल्पकाल में चल सकता है, लेकिन लंबे समय तक यही चलता रहे तो किसी संकट के समय पूरा तंत्र डगमगा सकता है।

  भारतीय रिज़र्व बैंक इस स्थिति को लेकर चिंतित है और उसने यह बात खुलकर कही भी है। केंद्रीय बैंक ने बैंकों को बार-बार याद दिलाया है कि ऋण वृद्धि और जमाराशि वृद्धि में जो खाई बढ़ रही है, वह ठीक नहीं है। यह खाई अगर बड़ी होती रही, तो कभी भी चलनिधि का संकट आ सकता है।

  भारतीय रिज़र्व बैंक ने चलनिधि कवरेज अनुपात को लेकर भी सख्त रुख अपनाया है। बैंकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि संकट के समय उनके पास पर्याप्त चलनिधी हो। यह नियामकीय दबाव है- और इसे नज़रअंदाज़ करना बैंकों के लिए संभव नहीं।

बैंक क्या कर रहे हैं?

- **ब्याज दरें बढ़ाई जा रही हैं**

  कई बैंक बचत खाते पर अब पहले से ज़्यादा ब्याज देने लगे हैं। खासकर छोटे वित्त बैंक इसमें आगे हैं- कुछ तो 7% तक दे रहे हैं। यह एक तरफ से ग्राहक को रोकने की कोशिश है, लेकिन दूसरी तरफ से यह उनकी अपनी लागत भी बढ़ाता है। फिर भी, कासा को थामे रखने के लिए यह एक ज़रूरी कदम है।

- **अपना डिजिटल इकोसिस्टम बनाना**

  बैंक अब यह सोच रहे हैं कि ग्राहक अगर निवेश करना ही चाहता है, तो वह हमारे प्लेटफॉर्म पर करें। इसीलिए वे अपने मोबाइल ऐप्स में म्यूचुअल फंड, बीमा, शेयर- सब जोड़ रहे हैं। विचार यह है कि पैसा बैंक से निकले भी तो बैंक के ही किसी उत्पाद में जाए। यह रणनीति कितनी सफल होगी, यह देखना बाकी है।

- **वेतन खाते और जन धन का सहारा**

  कंपनियों के साथ वेतन खाता करार करना कासा का एक पुराना और आज़माया हुआ तरीका है। जब हर महीने तनख्वाह सीधे खाते में आती है, तो कुछ दिनों के लिए वह रकम वहीं पड़ी रहती है - यही कासा का आधार बनती है। साथ ही, जन धन खातों के माध्यम से सरकारी लाभ जिन खातों में आते हैं, वे भी बैंकों खासकर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको को एक स्थिर आधार देते हैं।

भविष्य की दिशा

यह बदलाव रुकने वाला नहीं है। जो पीढ़ी आज 25-30 साल की है, वह कल 40-45 की होगी और उसकी वित्तीय आदतें नहीं बदलेंगी। बल्कि जो पीढ़ी अभी स्कूल में है, वह तो और भी डिजिटल होगी।

ऐसे में बैंकों को एक ज़रूरी सवाल खुद से पूछना होगा- हम ग्राहक के वित्तीय जीवन में किस काम के हैं? अगर जवाब सिर्फ 'पैसे रखने की जगह' है, तो मुश्किल आने वाली है। लेकिन अगर बैंक खुद को एक भरोसेमंद वित्तीय साथी के रूप में ढाल सकें- जहाँ ग्राहक अपनी पूरी वित्तीय ज़िंदगी को एक जगह सँभाल सके तो कासा की चुनौती भी संभाली जा सकती है। ग्रामीण भारत में अभी बहुत कुछ बदलना बाकी है। वहाँ के लोग बैंक पर भरोसा करते हैं, उसकी शाखा में जाते हैं, पासबुक अपडेट करवाते हैं। यह वर्ग कासा का एक ऐसा आधार है जो अब भी मज़बूत है- बशर्ते बैंक उनके साथ ईमानदारी से खड़े रहें।

भारत में बचत हमेशा रही है और रहेगी- यह इस देश के स्वभाव में है। लेकिन बैंकों को यह मान लेना छोड़ना होगा कि वह बचत उनके पास ही आएगी। अब ग्राहक के पास विकल्प हैं, समझ है और तुलना करने की क्षमता है। कासा में आ रही गिरावट एक संकेत है- यह बताती है कि ग्राहक और बैंक के बीच का पुराना रिश्ता बदल रहा है। यह रिश्ता खत्म नहीं हो रहा, लेकिन इसकी शर्तें बदल रही हैं। और इन बदली हुई शर्तों पर जो बैंक ढल पाएँगे, वही आने वाले दशकों में प्रासंगिक रहेंगे।

पुनीत कुमार
क्षे.का., बेंगलूरु-उत्तर

फिनटेक साझेदारी एवं जोखिम नियंत्रण

वर्तमान समय को डिजिटल क्रांति का युग कहा जाता है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने जीवन के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। वित्तीय क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। बैंकिंग, भुगतान, निवेश, बीमा और ऋण सेवाओं में तेजी से तकनीकी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इसी परिवर्तन का परिणाम है फिनटेक का उदय। फिनटेक का मूल उद्देश्य तकनीकी नवाचारों के माध्यम से वित्तीय सेवाओं को अधिक कुशल, तेज़, सुरक्षित और सुलभ बनाना है।

फिनटेक कंपनियाँ नई तकनीकों का उपयोग करके पारंपरिक वित्तीय सेवाओं को आधुनिक स्वरूप प्रदान कर रही हैं। दूसरी ओर, बैंक और अन्य वित्तीय संस्थाएँ लंबे समय से ग्राहकों को वित्तीय सेवाएँ प्रदान करती आ रही हैं और उनके पास व्यापक ग्राहक आधार, पूँजी और नियामकीय ढाँचा मौजूद है। जब पारंपरिक बैंकिंग संस्थान और तकनीकी नवाचार करने वाली फिनटेक कंपनियाँ मिलकर काम करती हैं, तो इसे फिनटेक साझेदारी कहा जाता है। यह साझेदारी वित्तीय क्षेत्र में नवाचार और दक्षता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

फिनटेक शब्द "फाइनेंस" और "टेक्नोलॉजी" के संयोजन से बना है। इसका अर्थ है वित्तीय सेवाओं को तकनीकी साधनों के माध्यम से अधिक प्रभावी बनाना। फिनटेक कंपनियाँ आधुनिक तकनीकों जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन, क्लाउड कंप्यूटिंग और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करके वित्तीय सेवाओं में नवाचार करती हैं।

फिनटेक का उपयोग कई क्षेत्रों में किया जाता है। डिजिटल भुगतान प्रणाली इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है। मोबाइल वॉलेट, ऑनलाइन बैंकिंग और यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस जैसी प्रणालियों ने भुगतान की प्रक्रिया को बेहद सरल बना दिया है। इसके अलावा ऑनलाइन ऋण प्लेटफॉर्म, निवेश प्रबंधन प्लेटफॉर्म, बीमा तकनीक और क्राउडफंडिंग जैसे क्षेत्रों में भी फिनटेक का व्यापक उपयोग हो रहा है।

फिनटेक का मुख्य उद्देश्य ग्राहकों को बेहतर अनुभव प्रदान करना है। इसके माध्यम से ग्राहक घर बैठे मोबाइल या कंप्यूटर के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं। इससे समय और लागत दोनों की बचत होती है। फिनटेक तकनीक वित्तीय प्रक्रियाओं को अधिक पारदर्शी और तेज़ बनाती है, जिससे वित्तीय प्रणाली की दक्षता बढ़ती है।

फिनटेक कंपनियों और पारंपरिक बैंकिंग संस्थानों के बीच साझेदारी का विचार इसलिए उभरा क्योंकि दोनों की अपनी-अपनी सीमाएँ और क्षमताएँ हैं। बैंकिंग संस्थान लंबे समय से वित्तीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं और उनके पास मजबूत नियामकीय ढाँचा, पूँजी और विश्वसनीयता होती है। दूसरी ओर, फिनटेक कंपनियाँ तकनीकी नवाचार में अधिक सक्षम होती हैं और वे तेजी से नए समाधान विकसित कर सकती हैं।

जब ये दोनों संस्थाएँ मिलकर काम करती हैं तो एक ऐसा मॉडल विकसित होता है जिसमें बैंकिंग अनुभव और तकनीकी नवाचार का समन्वय होता है। इससे ग्राहकों को अधिक सुविधाजनक और आधुनिक सेवाएँ मिलती हैं। उदाहरण के लिए, कई बैंक आज फिनटेक कंपनियों के साथ मिलकर मोबाइल बैंकिंग एप्लिकेशन, डिजिटल भुगतान प्रणाली और ऑनलाइन ऋण प्लेटफॉर्म विकसित कर रहे हैं। फिनटेक साझेदारी से बैंक अपनी सेवाओं को अधिक आधुनिक बना सकते हैं और नए ग्राहकों तक पहुँच सकते हैं। दूसरी ओर, फिनटेक कंपनियों को बैंकिंग ढाँचा और वित्तीय संसाधन प्राप्त होते हैं, जिससे वे अपने नवाचारों को व्यापक स्तर पर लागू कर सकती हैं।

फिनटेक साझेदारी से वित्तीय सेवाओं की गुणवत्ता और पहुँच दोनों में सुधार होता है। डिजिटल तकनीकों के उपयोग से बैंकिंग प्रक्रियाएँ अधिक तेज़ और सरल हो जाती हैं। ग्राहकों को बैंक शाखा में जाने की आवश्यकता कम हो जाती है और वे मोबाइल एप्लिकेशन या वेबसाइट के माध्यम से अधिकांश सेवाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार की साझेदारी से ग्राहक अनुभव में भी सुधार होता है। फिनटेक कंपनियाँ उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस और उन्नत तकनीकी समाधान विकसित करती हैं, जिससे सेवाएँ अधिक सुविधाजनक बनती हैं। उदाहरण के लिए, डिजिटल भुगतान एप्लिकेशन के माध्यम से कुछ ही सेकंड में पैसे का लेन-देन किया जा सकता है।

फिनटेक साझेदारी का एक अन्य महत्वपूर्ण लाभ वित्तीय समावेशन है। भारत जैसे विकासशील देशों में बड़ी संख्या में लोग लंबे समय तक औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से बाहर रहे हैं। मोबाइल तकनीक और डिजिटल भुगतान प्रणाली के माध्यम से अब ग्रामीण और दूरदराज़ क्षेत्रों के लोग भी बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त फिनटेक तकनीक डेटा विश्लेषण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से बेहतर निर्णय लेने में सहायता करती है। वित्तीय संस्थाएँ ग्राहकों की आवश्यकताओं और व्यवहार का विश्लेषण करके उन्हें अधिक उपयुक्त सेवाएँ प्रदान कर सकती हैं। इससे वित्तीय सेवाओं की दक्षता और पारदर्शिता दोनों बढ़ती हैं।

हालाँकि, डिजिटल तकनीक पर आधारित वित्तीय सेवाओं में साइबर सुरक्षा का जोखिम सबसे बड़ा माना जाता है। यदि किसी प्लेटफॉर्म की सुरक्षा प्रणाली मजबूत नहीं है, तो हैकर ग्राहक डेटा या वित्तीय जानकारी तक पहुँच सकते हैं। इससे वित्तीय नुकसान के साथ-साथ ग्राहकों का विश्वास भी प्रभावित हो सकता है। फिनटेक कंपनियाँ बड़ी मात्रा में ग्राहक डेटा एकत्रित करती हैं और उसका

विश्लेषण करती हैं। यदि इस डेटा का उचित संरक्षण नहीं किया गया तो इसका दुरुपयोग हो सकता है। इसलिए डेटा सुरक्षा के लिए सख्त नीतियों और तकनीकी उपायों की आवश्यकता होती है।

तकनीकी विफलता भी एक महत्वपूर्ण जोखिम है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आधारित सेवाओं में सर्वर डाउन होना, सॉफ्टवेयर त्रुटियाँ या नेटवर्क समस्याएँ सेवा बाधित कर सकती हैं। यदि वित्तीय सेवाएँ लंबे समय तक उपलब्ध नहीं रहतीं तो इससे ग्राहकों और संस्थाओं दोनों को नुकसान हो सकता है।

नियामकीय जोखिम भी फिनटेक साझेदारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वित्तीय क्षेत्र अत्यधिक विनियमित होता है और विभिन्न नियमों और दिशानिर्देशों का पालन करना आवश्यक होता है। यदि फिनटेक कंपनियाँ या उनके साझेदार संस्थान नियामकीय आवश्यकताओं का पालन नहीं करते तो उन्हें कानूनी कार्रवाई या आर्थिक दंड का सामना करना पड़ सकता है।

भारत में फिनटेक क्षेत्र पिछले कुछ वर्षों में अत्यंत तेजी से विकसित हुआ है। डिजिटल इंडिया अभियान, इंटरनेट की बढ़ती पहुँच और स्मार्टफोन के व्यापक उपयोग ने फिनटेक को तेजी से बढ़ावा दिया है। इसके अलावा सरकार और नियामक संस्थाओं द्वारा किए गए प्रयासों ने भी इस क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली विशेष रूप से लोकप्रिय हुई है। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस के माध्यम से लोग आसानी से और तुरंत पैसे का लेन-देन कर सकते हैं। इसके अलावा कई स्टार्टअप कंपनियाँ भी फिनटेक क्षेत्र में नवाचार कर रही हैं और नई सेवाएँ विकसित कर रही हैं। भारत का फिनटेक पारिस्थितिकी तंत्र दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते पारिस्थितिकी तंत्रों में से एक माना जाता है। यह न केवल आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है बल्कि वित्तीय समावेशन को भी मजबूत करता है। नई तकनीकों जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ब्लॉकचेन और मशीन लर्निंग के उपयोग से वित्तीय सेवाएँ और अधिक उन्नत और सुरक्षित बनेंगी। ओपन बैंकिंग जैसी अवधारणाएँ भी वित्तीय क्षेत्र में नए अवसर पैदा करेंगी।

यदि फिनटेक साझेदारी को सही दिशा में विकसित किया जाए और जोखिम प्रबंधन को प्राथमिकता दी जाए, तो यह न केवल वित्तीय क्षेत्र को अधिक आधुनिक और सुरक्षित बना सकती है बल्कि आर्थिक विकास और सामाजिक समावेशन में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

अभिषेक कुमार सिन्हा
क्षे.का., हल्द्वानी

काव्य सृजन

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

आज महिला दिवस आया है,
सबको अचानक याद आया है।
जो कल तक कहते थे "चाय बनाओ",
आज बोले – "आराम करो, हम बनाते हैं... पर बताओ कैसे?"

पति बोले बड़ी शान से,
"आज तुम रानी बन जाओ।"
रसोई में पाँच मिनट गए,
फिर बोले – "जरा नमक कहाँ है, बताओ?"

बेटा बोला मम्मी से,
"आज आपका दिन खास है।"
लेकिन मोबाइल छोड़ न पाया,
बस व्हाट्सएप पर भेज दिया संदेश।

ऑफिस में भी कमाल हुआ,
सबने भाषण खूब सुनाया।
"महिलाएँ बहुत महान हैं",
कहकर सारा काम उन्हीं को थमाया।

फिर भी महिला मुस्कुराती है,
सबका घर-आंगन सजाती है।
हँसते-हँसते हर मुश्किल को,
आसानी से पार लगाती है।

इसलिए आज के दिन हम कहें,
थोड़ा मज़ाक, थोड़ा सम्मान।
महिलाएँ सच में कमाल हैं,
इनसे ही चलता है सारा जहान।

रश्मि कुमारी
सी.ओ.अनेक्स.,
पटना

आज की कमाई, कल की आज़ादी:

जेन ज़ी के लिए वित्तीय योजना की नई सोच

जेन ज़ी केवल एक आयु समूह नहीं है, बल्कि एक मानसिकता है। इस पीढ़ी ने बचपन से ही डिजिटल दुनिया को देखा, समझा और अपनाया है। उनके लिए अवसर पहले से कहीं अधिक हैं, साथ ही जोखिम और अनिश्चितताएँ भी उतनी ही बढ़ गई हैं। ऐसे में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या यह पीढ़ी अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के लिए पर्याप्त रूप से तैयार है।

जेन ज़ी की सबसे बड़ी विशेषता है उनकी आकांक्षा और स्वतंत्रता की चाह। वे पारंपरिक करियर पथ तक सीमित नहीं रहना चाहते। फ्रीलांसिंग, स्टार्टअप, कंटेंट क्रिएशन और गिग इकॉनमी जैसे विकल्प उनके लिए सामान्य हो चुके हैं। इन विकल्पों के साथ एक महत्वपूर्ण चुनौती भी आती है, आय की अनिश्चितता। जब आय नियमित और स्थिर न हो, तो वित्तीय योजना का महत्व और भी बढ़ जाता है।

पारंपरिक पीढ़ियों के विपरीत, जहाँ बचत को प्राथमिकता दी जाती थी, जेन ज़ी में खर्च करने की प्रवृत्ति अधिक दिखाई देती है। इसका एक कारण है तात्कालिक संतुष्टि की संस्कृति, जो सोशल मीडिया और डिजिटल विज्ञापनों के माध्यम से लगातार प्रोत्साहित होती है। "अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें" जैसी अवधारणाएँ इस प्रवृत्ति को और बढ़ाती हैं। परिणामस्वरूप कई युवा बिना सोचे समझे ऋण के जाल में फँस सकते हैं।

यहीं पर वित्तीय योजना एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाती है। यह केवल खर्च को सीमित करने की बात नहीं करती, बल्कि यह सिखाती है कि कैसे आय, खर्च और बचत के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। यदि जेन ज़ी अपने करियर के प्रारंभिक चरण में ही इस संतुलन को समझ लें, तो वे भविष्य में आर्थिक तनाव से बच सकते हैं।

वित्तीय योजना का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है आत्म जागरूकता। यह समझना कि आपकी आय कितनी है, आप कहाँ खर्च करते हैं और आपकी प्राथमिकताएँ क्या हैं। बिना इस समझ के कोई भी योजना प्रभावी नहीं हो सकती। कई बार युवा यह मान लेते हैं कि छोटी राशि का कोई महत्व नहीं है, लेकिन यही छोटी बचत समय के साथ एक बड़ा रूप ले सकती है।

इसके साथ ही बजट बनाना एक सरल लेकिन प्रभावी उपकरण है। यह न केवल खर्चों को नियंत्रित करता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि कहाँ सुधार की आवश्यकता है। जेन ज़ी के लिए यह और भी आसान है, क्योंकि उनके पास डिजिटल ऐप्स और उपकरण उपलब्ध हैं, जो इस प्रक्रिया को सरल बना देते हैं।

एक और महत्वपूर्ण पहलू है आपातकालीन निधि का निर्माण। जीवन में अनिश्चितताएँ कभी भी आ सकती हैं, चाहे वह नौकरी का नुकसान हो, स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो या कोई अन्य आकस्मिक स्थिति। ऐसे में यदि आपके पास कुछ महीनों के खर्च के बराबर राशि सुरक्षित है, तो आप मानसिक और आर्थिक दोनों रूप से अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं।

इसके अलावा जेन ज़ी को यह समझना होगा कि केवल कमाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस आय को सही दिशा में लगाना भी उतना ही आवश्यक है। कई युवा निवेश को जटिल और जोखिम भरा मानते हैं, इसलिए वे उससे दूर रहते हैं। परंतु सच्चाई यह है कि यदि सही जानकारी और धैर्य के साथ निवेश किया जाए, तो यह भविष्य की आर्थिक स्वतंत्रता का सबसे मजबूत आधार बन सकता है।

यहाँ वित्तीय साक्षरता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। स्कूल और कॉलेज स्तर पर अक्सर इस विषय पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता, जिसके कारण युवा अपने वित्तीय निर्णयों में अनिश्चितता महसूस करते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि वे स्वयं इस दिशा में पहल करें, सीखें और समझें।

जेन ज़ी के लिए एक और चुनौती है तुलना की संस्कृति। सोशल मीडिया पर दूसरों की जीवनशैली को देखकर कई बार ऐसा लगता है कि सब कुछ तुरंत हासिल कर लेना चाहिए। यह दबाव अनावश्यक खर्च और गलत वित्तीय निर्णयों की ओर ले जा सकता है। ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि हर व्यक्ति की वित्तीय यात्रा अलग होती है और उसे अपने लक्ष्यों के अनुसार ही निर्णय लेने चाहिए।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि जेन ज़ी के लिए वित्तीय योजना केवल एक कौशल नहीं, बल्कि अत्यावश्यकता है, जिससे उन्हें वर्तमान में संतुलन तथा भविष्य के लिए भी एक मजबूत आधार तैयार करती है। यदि यह पीढ़ी समय रहते इस दिशा में सजग हो जाती है, तो वह न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र होगी, बल्कि एक अधिक जिम्मेदार और सशक्त समाज के निर्माण में भी योगदान दे सकेगी।

अब यह समझना आवश्यक है कि वित्तीय योजना को व्यवहार में कैसे उतारा जाए। केवल जागरूकता पर्याप्त नहीं होती, इसके

लिए सही रणनीति और अनुशासन आवश्यक हैं। यही वह बिंदु है जहाँ साधारण समझ एक मजबूत वित्तीय भविष्य में परिवर्तित होता है।

सबसे पहले जेन ज़ी को अपनी वित्तीय यात्रा को लक्ष्य आधारित दृष्टिकोण से देखना चाहिए। बिना स्पष्ट लक्ष्य के कोई भी योजना दिशा हीन हो जाती है। यह लक्ष्य अल्पकालिक भी हो सकते हैं, जैसे किसी कोर्स के लिए बचत और दीर्घकालिक भी, जैसे घर खरीदना या जल्दी सेवानिवृत्ति की योजना बनाना। जब लक्ष्य स्पष्ट होते हैं, तो बचत और निवेश के निर्णय अधिक सटीक और प्रेरणादायक बनते हैं।

इसके बाद आता है निवेश की समझ। आज के समय में निवेश के अनेक विकल्प उपलब्ध हैं, परंतु सही विकल्प का चयन करना ही महत्वपूर्ण है। जेन ज़ी के पास समय का लाभ है। यदि वे अपने करियर की शुरुआत में ही निवेश करना शुरू कर दें, तो चक्रवृद्धि के माध्यम से वे दीर्घकाल में मजबूत स्थिति में पहुँच सकते हैं। नियमित और अनुशासित निवेश, चाहे वह छोटी राशि से ही क्यों न शुरू हो, समय के साथ बड़ा रूप ले सकता है।

यह भी आवश्यक है कि निवेश को केवल लाभ कमाने का साधन न समझा जाए, बल्कि इसे जोखिम प्रबंधन के एक उपकरण के रूप में भी देखा जाए। विभिन्न निवेश विकल्पों में संतुलन बनाए रखना, जैसे कुछ सुरक्षित और कुछ विकास उन्मुख विकल्प चुनना, एक विवेकपूर्ण रणनीति हो सकती है।

डिजिटल युग में, वित्तीय प्रबंधन के तरीके तेजी से बदल रहे हैं। आज कई प्लेटफॉर्म और ऐप निवेश को सरल बनाते हैं, लेकिन बिना पर्याप्त जानकारी के निर्णय नुकसानदायक हो सकते हैं। कई बार सोशल मीडिया या ऑनलाइन ट्रेंड्स के प्रभाव में आकर युवा बिना गहन समझ के निवेश कर बैठते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि किसी भी वित्तीय निर्णय से पहले पर्याप्त शोध किया जाए और आवश्यकता होने पर विशेषज्ञ की सलाह ली जाए। साथ ही यह समझना भी जरूरी है कि हर आकर्षक विकल्प निवेश के लिए उपयुक्त नहीं होता। धैर्य और विवेक इस यात्रा में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

ऋण प्रबंधन भी वित्तीय योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आज के समय में क्रेडिट कार्ड और त्वरित ऋण की सुविधा आसानी से उपलब्ध है, जिससे खर्च करना सरल हो गया है। ऋण एक उपयोगी उपकरण है, लेकिन लापरवाही से यह आर्थिक बोझ बन सकता है।

इसके अतिरिक्त कर नियोजन की समझ भी धीरे-धीरे विकसित करनी चाहिए। अक्सर युवा इस पहलू को नजरअंदाज कर देते हैं, जबकि यह उनकी कुल आय पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। सही योजना के माध्यम से न केवल कर दायित्व को कम किया जा सकता है, बल्कि निवेश के अवसरों को भी बेहतर बनाया जा सकता है।

एक और महत्वपूर्ण पहलू है आय के विविध स्रोत विकसित करना। जेन ज़ी के पास यह अवसर है कि वे अपनी आय को केवल एक स्रोत तक सीमित न रखें। फ्रीलांसिंग, ऑनलाइन कार्य या अन्य रचनात्मक माध्यमों से अतिरिक्त आय अर्जित की जा सकती है, जिससे आर्थिक स्थिरता बढ़ती है।

इसके साथ ही वित्तीय योजना में अनुशासन और निरंतरता का विशेष महत्व है। कई बार युवा प्रारंभ में उत्साह के साथ बचत और निवेश शुरू करते हैं, परंतु समय के साथ यह आदत कमजोर पड़ जाती है। यह समझना आवश्यक है कि आर्थिक सफलता किसी एक बड़े निर्णय का परिणाम नहीं होती, बल्कि छोटे छोटे नियमित प्रयासों का संचय होती है। यदि हर माह एक निश्चित राशि बचाने और निवेश करने की आदत विकसित की जाए, तो यह धीरे-धीरे एक मजबूत वित्तीय आधार तैयार करती है। इसी प्रकार अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण और दीर्घकालिक सोच का विकास भी इस प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाता है।

अंततः यह समझना आवश्यक है कि वित्तीय योजना एक निरंतर प्रक्रिया है। जीवन के विभिन्न चरणों में आवश्यकताएँ और प्राथमिकताएँ बदलती रहती हैं, इसलिए योजना को समय समय पर अद्यतन करना आवश्यक है।

जेन ज़ी के पास अवसरों की कोई कमी नहीं है, परंतु उनका सही उपयोग तभी संभव है जब उनके साथ विवेक और अनुशासन जुड़ा हो। वित्तीय योजना उन्हें यह क्षमता प्रदान करती है कि वे अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं के बीच संतुलन बना सकें और एक सुरक्षित भविष्य की ओर बढ़ सकें।

आज लिए गए छोटे-छोटे वित्तीय निर्णय ही आने वाले वर्षों में बड़े परिणाम देते हैं। यदि जेन ज़ी समय रहते इस दिशा में जागरूक और सक्रिय हो जाते हैं, तो वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र और अधिक जिम्मेदार बन सकते हैं।

अंत में यह कहा जा सकता है कि सच्ची स्वतंत्रता केवल कमाने में नहीं, बल्कि अपने संसाधनों को समझदारी से प्रबंधित करने में है। यह मार्ग आज की पीढ़ी को एक सुरक्षित, सशक्त और संतुलित भविष्य की ओर ले जाएगा।

निखिल पांडे
नामली शाखा,
क्षे. का., इंदौर

बैंकिंग की असली आधारशिला—ईमानदारी

बैंकिंग व्यवस्था का मूल स्वरूप केवल आर्थिक लेन-देन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विश्वास, उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों पर आधारित एक जटिल एवं संवेदनशील संरचना है। प्रत्येक ग्राहक जब बैंक में प्रवेश करता है, तो वह केवल अपने धन का नहीं, बल्कि अपने विश्वास का भी समर्पण करता है। यह विश्वास किसी दस्तावेज़ में अंकित नहीं होता, परंतु यह प्रत्येक प्रक्रिया, प्रत्येक संवाद और प्रत्येक सेवा के माध्यम से जीवित रहता है। यही कारण है कि बैंक केवल वित्तीय संस्थान नहीं, बल्कि समाज के विश्वास के संरक्षक के रूप में स्थापित होते हैं।

हमारी शाखा में घटित एक सच्ची घटना इस अदृश्य विश्वास की गहराई और उसकी वास्तविकता को अत्यंत सहजता से उजागर करती है। एक सामान्य कार्यदिवस की व्यस्तता के बीच, जब सब कुछ अपनी नियमित गति से चल रहा था, तभी लॉकर कक्ष में एक अत्यंत मूल्यवान वस्तु प्राप्त हुई। यह वस्तु किसी कर्मचारी की नहीं थी, न ही किसी दस्तावेज में उसका कोई उल्लेख था। वह एक ग्राहक की निजी धरोहर थी, जो अनजाने में वहीं रह गई थी। यह स्थिति अपने आप में एक परीक्षा थी—न केवल प्रक्रियाओं की, बल्कि मानवीय मूल्यों की भी।

ऐसी परिस्थितियों में जहाँ बाहरी निरीक्षण का कोई दबाव नहीं था और जहाँ निर्णय पूर्णतः व्यक्तिगत विवेक पर निर्भर था, हमारे कार्यालय सहायक कृष्ण ने जिस प्रकार का आचरण प्रस्तुत किया, वह वास्तव में प्रेरणादायक है। उन्होंने बिना किसी विलंब के उस वस्तु की सूचना संबंधित अधिकारी को दी और उसे सुरक्षित रखने की प्रक्रिया का पालन सुनिश्चित किया। यह केवल एक औपचारिक कार्यवाही नहीं थी, बल्कि एक गहरी नैतिक चेतना का परिचायक था, जो उनके व्यक्तित्व और उनके कर्तव्य के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

जब वह बहुमूल्य वस्तु उसके वास्तविक स्वामी को सौंपी गई, तो उस क्षण की भावनाएँ शब्दों में व्यक्त करना कठिन था। ग्राहक के चेहरे पर उभरी राहत, आँखों में छलकता आभार और बैंक के प्रति पुनः स्थापित हुआ विश्वास यह स्पष्ट कर रहा था कि ईमानदारी का प्रभाव केवल एक घटना तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह दीर्घकालिक संबंधों की नींव को सुदृढ़ करता है। यह एक ऐसा क्षण था, जिसने यह सिद्ध किया कि बैंकिंग केवल प्रक्रियाओं का पालन नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं का सम्मान भी है।

ईमानदारी को यदि बैंकिंग की अदृश्य संपत्ति कहा जाए, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह वह गुण है जो किसी तुलन पत्र में परिलक्षित नहीं होता, फिर भी इसकी उपस्थिति किसी भी संस्थान को ऊँचाइयों तक ले जाने की क्षमता रखती है। नियम, नियंत्रण और ऑडिट प्रणाली संस्थागत संरचना को सुदृढ़ बनाते हैं, परंतु उनका प्रभाव तभी सार्थक होता है जब उन्हें लागू करने वाले व्यक्तियों में नैतिकता और सत्यनिष्ठा का समावेश हो। एक ईमानदार कार्य, चाहे वह कितना ही साधारण क्यों न प्रतीत हो, संस्थान की प्रतिष्ठा को असाधारण रूप से प्रभावित करता है।

प्रत्येक ग्राहक यह चाहता है कि उसकी संपत्ति पूर्णतः सुरक्षित रहे और उसे किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। यह बैंकों की जिम्मेदारी है कि वे अपनी प्रणालियों को और अधिक सुदृढ़ करें, पारदर्शिता बनाए रखें और ग्राहकों के साथ संवाद को सशक्त बनाएं। परंतु इसके साथ-साथ यह भी उतना ही आवश्यक है कि उन सकारात्मक उदाहरणों को भी सामने लाया जाए, जो इस व्यवस्था को मजबूती प्रदान करते हैं।

बैंकिंग क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारी केवल अपने निर्धारित दायित्वों का निर्वहन ही नहीं करते, बल्कि वे प्रतिदिन विश्वास की रक्षा का कार्य भी करते हैं। वे अपने कार्यकाल के अतिरिक्त समय में भी ग्राहकों की समस्याओं का समाधान करते हैं, जटिल परिस्थितियों में धैर्य और संवेदनशीलता का परिचय देते हैं और प्रत्येक स्थिति में संस्था की गरिमा को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। यह समर्पण और निष्ठा ही बैंकिंग को एक विश्वसनीय प्रणाली के रूप में स्थापित करते हैं। कृष्ण जैसे कर्मचारी इस व्यवस्था की वास्तविक शक्ति का प्रतीक हैं, जो बिना किसी अपेक्षा के अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं और अपने आचरण से यह सिद्ध करते हैं कि नैतिकता केवल एक सिद्धांत नहीं, बल्कि एक जीवन शैली है। उनका यह कार्य भले ही व्यापक स्तर पर चर्चा का विषय न बना हो, परंतु यह उस मौन शक्ति का प्रतीक है जो किसी भी संस्थान को भीतर से मजबूत बनाती है। ऐसे उदाहरण यह दर्शाते हैं कि ईमानदारी केवल एक व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि एक सामूहिक संस्कृति का हिस्सा हो सकती है।

बैंकिंग जैसे संवेदनशील और उत्तरदायित्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने वाले अधिकांश कर्मचारी अपने कर्तव्यों के प्रति पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ कार्य करते हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ प्रत्येक दिन हजारों-लाखों लेन-देन होते हैं, अनगिनत ग्राहकों की परिसंपत्तियाँ सुरक्षित रखी जाती हैं, और विश्वास का आदान-प्रदान निरंतर चलता रहता है। इन सभी प्रक्रियाओं के सुचारु संचालन के पीछे जो सबसे महत्वपूर्ण तत्व कार्य करता है, वह है—मानवीय ईमानदारी। समय-समय पर अनेक ऐसे उदाहरण सामने आते रहे हैं, जहाँ बैंक कर्मचारियों ने अपनी सत्यनिष्ठा का परिचय देते हुए ग्राहकों की खोई हुई वस्तुएँ लौटाईं, गलत तरीके से जमा की गई राशि को स्वयं सुधारते हुए वापस किया, या फिर किसी भी प्रकार के प्रलोभन को अस्वीकार करते हुए नैतिकता का पालन किया। यह केवल कर्तव्य का निर्वहन नहीं, बल्कि एक गहरी आंतरिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जो बैंकिंग सेवा को एक उच्च नैतिक स्तर प्रदान करती है।

यह भी उल्लेखनीय है कि जब-जब इस प्रकार की सकारात्मक घटनाएँ घटित होती हैं, तब संस्थान स्वयं भी इन्हें पहचानने और प्रोत्साहित करने का कार्य करता है। बैंक समय-समय पर ऐसे कर्मचारियों को सम्मानित करता है, उनकी सराहना करता है और उन्हें एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है, ताकि अन्य कर्मचारियों को भी प्रेरणा मिल सके। इस प्रकार की मान्यता न केवल व्यक्तिगत स्तर पर उत्साहवर्धन करती है, बल्कि संपूर्ण संगठन

में एक सकारात्मक और नैतिक वातावरण का निर्माण करती है। यह वातावरण ही वह आधार है, जो किसी भी संस्था को दीर्घकालिक रूप से सुदृढ़ और विश्वसनीय बनाता है। यदि हम व्यापक दृष्टिकोण से देखें, तो पाएंगे कि बैंकिंग प्रणाली में कार्यरत अधिकांश लोग अपने दायित्वों को केवल एक नौकरी के रूप में नहीं, बल्कि एक सेवा के रूप में देखते हैं। वे यह भली-भांति समझते हैं कि उनके प्रत्येक निर्णय और प्रत्येक कार्य का सीधा प्रभाव ग्राहक के विश्वास पर पड़ता है। यही कारण है कि वे हर परिस्थिति में सही और नैतिक मार्ग का चयन करने का प्रयास करते हैं, चाहे वह परिस्थिति कितनी ही चुनौतीपूर्ण क्यों न हो। अतः यह कहना पूर्णतः उचित होगा कि बैंकिंग प्रणाली की वास्तविक पहचान कुछ विरल घटनाओं से नहीं, बल्कि उन असंख्य ईमानदार प्रयासों से बनती है, जो प्रतिदिन बिना किसी प्रचार या प्रशंसा के किए जाते हैं। यही प्रयास इस व्यवस्था को जीवंत बनाए रखते हैं और यही वह शक्ति है, जो इसे निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

वर्तमान समय में जब बैंकिंग क्षेत्र तकनीकी उन्नति और बढ़ती प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहा है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि मानवीय मूल्यों को उतना ही महत्व दिया जाए जितना कि तकनीकी नवाचार को दिया जा रहा है। केवल उन्नत प्रणालियाँ ही पर्याप्त नहीं होतीं, जब तक कि उन्हें संचालित करने वाले व्यक्तियों में नैतिकता और उत्तरदायित्व की भावना न हो। यही संतुलन बैंकिंग प्रणाली को स्थायित्व और विश्वसनीयता प्रदान करता है।

विश्वास की पुनर्स्थापना केवल औपचारिक प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए निरंतर और सुसंगत आचरण की आवश्यकता होती है। जब संस्थान अपने कर्मचारियों में नैतिकता को प्रोत्साहित करते हैं, ईमानदारी के उदाहरणों को पहचानते हैं और ग्राहकों के साथ पारदर्शी संवाद स्थापित करते हैं, तब एक ऐसा वातावरण निर्मित होता है जहाँ विश्वास स्वाभाविक रूप से विकसित होता है। यह एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है, जो प्रत्येक छोटे प्रयास से सशक्त होती है।

अंततः यह स्पष्ट होता है कि बैंकिंग प्रणाली की वास्तविक शक्ति उसकी भौतिक संरचनाओं में नहीं, बल्कि उन मूल्यों में निहित होती है जो उसे संचालित करते हैं। समय-समय पर आने वाली चुनौतियाँ इस प्रणाली की परीक्षा अवश्य लेती हैं, परंतु ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और संवेदनशीलता जैसे गुण इसे स्थिर बनाए रखते हैं। यही कारण है कि आज भी, सभी जटिलताओं के बावजूद, ग्राहक बैंक में विश्वास के साथ आते हैं और अपनी सबसे मूल्यवान संपत्तियों को सुरक्षित रखने का निर्णय लेते हैं।

यही विश्वास बैंकिंग का वास्तविक आधार है, और यही वह शक्ति है जो इसे भविष्य की ओर अग्रसर करती है। जब तक इस व्यवस्था में कृष्ण जैसे कर्मचारी मौजूद रहेंगे, तब तक यह विश्वास अडिग बना रहेगा। बैंकिंग की असली पहचान तिजोरियों की मजबूती में नहीं, बल्कि उन हाथों की सच्चाई में है जो उन्हें संभालते हैं। यही सच्चाई इस व्यवस्था की मौन शक्ति है, और यही इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि भी।

रोली जोहरी
नोएडा शाखा,
क्षे.का., गाजियाबाद

काव्य सृजन

संघर्ष से उत्कर्ष

संघर्ष ही जीवन का सच्चा शिक्षक,
संघर्ष से जीवन नए उत्कर्ष को पाता है।
जैसे कोयला अपने संघर्ष में,
अग्नि में तपकर हीरा बन जाता है।
वैसे ही मानव भी संघर्षों से,
गुजरकर नए शिखर को पाता है।

नदी भी चट्टानों से टकराकर राह बनाती है,
हर बाधा को चीरकर आगे बढ़ती जाती है।
रुकना उसका स्वभाव नहीं, बहना उसका धर्म।
इसी निरंतर प्रयास से पाती सागर का मर्म।
निरंतरत आगे बढ़कर संपूर्णता को है वह पाती,
बिना रुके लगातार पूर्ण करती है अपना कर्म।

तरुवर भी कब अपने बिछड़ों का शोक मनाता है।
पतझड़ के संघर्ष से तपकर, वसंत में मुस्कुराता है।
धैर्य रखकर प्रकृति का नियम निभाता है।
फिर पुष्पित पल्लवित होकर, अपने वैभव को पाता है।
नन्हीं तितली जब बार-बार जोर लगाती है।
फिर कोकून को तोड़कर अपने पंख फैलाती है।

सफलता का है यही नियम, यही विधान।
संघर्षों के बाद ही मिलता, नवजीवन का सम्मान।
मानव जीवन भी इन्हीं नियमों से चलता है।
हर कठिन परीक्षा से उसका साहस पलता है।
संघर्ष ही वह दीप है जो अंधकार को मिटाता है।
संघर्ष करने वाला ही अपना इतिहास बनाता है।

सत्येंद्र कुमार
जगनपुरा शाखा
क्षे.का. पटना

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक

भारत जैसे विशाल, विविधतापूर्ण और अपार संभावनाओं से परिपूर्ण देश में आर्थिक विकास केवल नीतियों और योजनाओं के सहारे संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए एक सुदृढ़, समावेशी, उत्तरदायी और विश्वसनीय बैंकिंग तंत्र की आवश्यकता होती है, और इस तंत्र के केंद्र में स्थित हैं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, जो वास्तव में देश के विकास के रक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। यदि यह कहा जाए कि "जहाँ बैंक, वहाँ विकास", तो यह कथन पूर्णतः सार्थक सिद्ध होता है, क्योंकि इन बैंकों ने सदैव समाज के प्रत्येक वर्ग तक अपनी पहुँच सुनिश्चित करने का प्रयास किया है। "बूँद-बूँद से सागर भरता है" की कहावत को चरितार्थ करते हुए, इन बैंकों ने छोटे-छोटे खातों, सूक्ष्म ऋणों और वित्तीय सेवाओं के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार प्रदान किया है। आज भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में स्थान बना रही है, और इसके पीछे सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का मौन लेकिन अत्यंत प्रभावशाली योगदान निहित है।

वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का योगदान अभूतपूर्व और ऐतिहासिक रहा है। जन-धन योजना के अंतर्गत 50 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले जाना केवल एक आँकड़ा नहीं, बल्कि करोड़ों परिवारों के जीवन में आए सकारात्मक परिवर्तन का प्रमाण है। इन खातों में दो लाख करोड़ रुपये से अधिक की जमा राशि यह दर्शाती है कि आम जनता का बैंकिंग प्रणाली पर विश्वास निरंतर बढ़ रहा है। पहले जहाँ ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाएँ "ऊँट के मुँह में जीरा" के समान थीं, वहीं आज स्थिति यह है कि प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से सैकड़ों सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे लाभार्थियों के खातों में पहुँच रहा है। इससे पारदर्शिता में वृद्धि हुई है, बिचौलियों की भूमिका कम हुई है और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा है। वास्तव में, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने वित्तीय समावेशन को "घर-घर की कहानी" बना दिया है, जिससे आर्थिक सशक्तिकरण को नई दिशा मिली है।

सुधारों की दिशा में उठाए गए ठोस कदमों ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को नई ऊर्जा प्रदान की है। सेवा उत्कृष्टता, पारदर्शिता, जवाबदेही और तकनीकी उन्नयन को बढ़ावा देने वाले सुधारों के विभिन्न चरणों ने इन बैंकों की कार्यप्रणाली को आधुनिक और प्रतिस्पर्धी बनाया है। इन सुधारों के परिणामस्वरूप हाल के वर्षों में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का कार्यनिष्पादन उल्लेखनीय रूप से बेहतर हुआ है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में पीएसबी का कुल निवल शुद्ध लाभ लगभग 1.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा, जो कि अब तक का एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इसके अतिरिक्त, सकल अनर्जक आस्तियों का अनुपात, जो कुछ वर्ष पूर्व लगभग 5 प्रतिशत तक पहुँच गया था, अब घटकर लगभग 2.6 से 3 प्रतिशत के बीच आ गया है। इन प्रयासों ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को न केवल सुदृढ़ बनाया है, बल्कि उन्हें भविष्य के लिए अधिक सक्षम भी बनाया है।

डिजिटल क्रांति के इस युग में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने तकनीकी प्रगति को अपनाते हुए बैंकिंग सेवाओं को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। आज भारत में प्रति माह अरबों की संख्या में डिजिटल लेन-देन हो रहे हैं, जिनमें सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। त्वरित भुगतान प्रणाली के माध्यम से कुछ ही सेकंड में धन का अंतरण संभव हो गया है, जिससे लेन-देन की प्रक्रिया अत्यंत सरल और तेज हो गई है। डिजिटल बैंकिंग की उपयोगिता स्वयं ही स्पष्ट है। मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग और डिजिटल ऋण जैसी सुविधाओं ने बैंकिंग को आम नागरिक के लिए सहज और सुलभ बना दिया है। इससे न केवल समय और लागत की बचत हुई है, बल्कि आर्थिक गतिविधियों को भी नई गति मिली है।

कृषि तथा लघु एवं मध्यम उद्योगों के क्षेत्र में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक रही है। देश के कुल प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र ऋण का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा इन्हीं बैंकों द्वारा प्रदान किया जाता है, जिससे किसानों, कारीगरों और छोटे उद्यमियों को आवश्यक वित्तीय सहायता मिलती है। करोड़ों किसानों को समय पर ऋण उपलब्ध कराना, सूक्ष्म और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देना तथा स्वरोजगार को बढ़ावा देना—ये सभी कार्य यह दर्शाते हैं कि ये बैंक वास्तव में देश की आर्थिक जड़ों को मजबूत कर रहे हैं। "जहाँ चाह, वहाँ राह" की भावना के साथ पीएसबी हर उस व्यक्ति तक पहुँचने का प्रयास करते हैं जो अपने जीवन को बेहतर बनाना चाहता है। इस प्रकार, पीएसबी न केवल आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं, बल्कि आत्मनिर्भरता की भावना को भी प्रोत्साहित करते हैं।

भारत को वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य केवल एक सपना नहीं, बल्कि एक संकल्प है, और इस संकल्प को साकार करने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आधारभूत संरचना, ऊर्जा, परिवहन और शहरी विकास जैसी परियोजनाओं के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता मुख्यतः पीएसबी के माध्यम से उपलब्ध कराई जाती है। इसके अतिरिक्त, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के

लिए भी पीएसबी सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। हरित परियोजनाओं में निवेश को प्रोत्साहित करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और सतत विकास के सिद्धांतों को अपनाना—ये सभी प्रयास यह दर्शाते हैं कि ये बैंक भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कार्य कर रहे हैं। "एक पंथ दो काज" की कहावत यहाँ पूर्णतः सार्थक सिद्ध होती है, क्योंकि पीएसबी आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी योगदान दे रहे हैं।

विश्वसनीयता के दृष्टिकोण से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सदैव जनता के विश्वास पर खरे उतरे हैं। जब भी आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न होती है, तब जनता का भरोसा इन्हीं बैंकों पर टिका रहता है। हाल के वर्षों में पीएसबी द्वारा अर्जित रिकॉर्ड स्तर के लाभ और उनकी सुदृढ़ वित्तीय स्थिति इस बात का प्रमाण है कि पीएसबी न केवल स्थिर हैं, बल्कि निरंतर प्रगति कर रहे हैं। देश के प्रमुख बैंकों में एक अग्रणी बैंक ने भी अपनी उत्कृष्ट सेवाओं, डिजिटल नवाचार और ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से शीर्ष बैंकों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। यह इस बात का प्रमाण है कि भारतीय बैंकिंग प्रणाली वैश्विक स्तर पर भी प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हो चुकी है। "विश्वास ही सबसे बड़ी पूँजी है", और यही पूँजी पीएसबी को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में भी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ निभाया है। वित्तीय साक्षरता अभियान चलाना, समाज के कमजोर वर्गों को सशक्त बनाना, डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देकर कागज के उपयोग को कम करना तथा विभिन्न सामाजिक पहलों में सक्रिय भागीदारी—ये सभी कार्य यह सिद्ध करते हैं कि पीएसबी केवल आर्थिक संस्थाएँ नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के वाहक भी हैं। "मानव सेवा ही माधव सेवा है" की भावना इनके कार्यों में स्पष्ट रूप से झलकती है।

वैश्विक स्तर पर भी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने भारत की आर्थिक छवि को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज भारतीय बैंकिंग प्रणाली को विश्व की सुदृढ़ और विश्वसनीय प्रणालियों में गिना जाने लगा है, जिसका श्रेय काफी हद तक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को जाता है। विदेशी निवेश को आकर्षित करने, अंतरराष्ट्रीय कारोबार को वित्तीय सहायता प्रदान करने तथा वैश्विक मानकों के अनुरूप बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराने में इन बैंकों ने उल्लेखनीय कार्य किया है। इसके साथ ही, पीएसबी द्वारा प्रदान की गई सुलभ ऋण सुविधाओं, बचत योजनाओं और वित्तीय सेवाओं ने आम नागरिक के जीवन स्तर में भी उल्लेखनीय सुधार किया है। आज एक सामान्य व्यक्ति भी अपने घर, शिक्षा, व्यवसाय और स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो पा रहा है, जिससे "आम आदमी से खास बनने" की यात्रा संभव हुई है।

इसके अतिरिक्त, विभिन्न परिस्थितियों में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन अत्यंत प्रभावी ढंग से किया है। मुद्रा योजना के अंतर्गत करोड़ों छोटे उद्यमियों को बिना गारंटी ऋण उपलब्ध कराना जिससे स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिला है। नोटबंदी के समय सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने दिन-रात कार्य करते हुए देश की आर्थिक व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहाँ "दिन-रात एक करना" वास्तव में चरितार्थ हुआ। इसी प्रकार, कोरोना महामारी के दौरान भी इन बैंकों ने राहत पैकेज, ऋण पुनर्गठन और आपातकालीन ऋण सुविधाओं के माध्यम से लोगों और उद्योगों को संबल प्रदान किया। कठिन समय में भी इन बैंकों ने यह सिद्ध किया कि वे केवल वित्तीय संस्थान नहीं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था के सच्चे संरक्षक हैं, जो हर परिस्थिति में राष्ट्र के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहते हैं

हालाँकि चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। साइबर सुरक्षा के बढ़ते खतरे, वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताएँ, प्रतिस्पर्धा का दबाव और बदलती ग्राहक अपेक्षाएँ—ये सभी ऐसे कारक हैं जो इन बैंकों के सामने नई चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं। परंतु "जहाँ समस्या, वहाँ समाधान" की सोच के साथ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक इन चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। तकनीकी नवाचार, सुदृढ़ नीतियाँ और निरंतर सुधारों के माध्यम से ये बैंक भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को ढाल रहे हैं और अपनी कार्यक्षमता को निरंतर बढ़ा रहे हैं।

अंततः यह कहना पूर्णतः उचित है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक केवल बैंक नहीं, बल्कि देश के विकास के सच्चे रक्षक हैं। ये बैंक समाज के हर वर्ग को जोड़ते हैं, आर्थिक अवसर प्रदान करते हैं और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार हैं। "सशक्त बैंक, सशक्त भारत" केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक साकार होती वास्तविकता है। जब भारत वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित होगा, तब सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का योगदान स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा, क्योंकि वास्तव में यही वे स्तंभ हैं, जिन पर देश की आर्थिक प्रगति, सामाजिक समावेशन और उज्ज्वल भविष्य टिका हुआ है।

दिव्यांशु पाठक
कूटगल शाखा,
क्षे.का., मैसूर

ग्राहक फीडबैक

बैंकिंग संस्थाओं की प्रगति और विश्वसनीयता का आधार

बैंकिंग संस्थाएँ किसी भी देश की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ होती हैं। आधुनिक समय में बैंक केवल वित्तीय लेन-देन करने वाले संस्थान नहीं रह गए हैं, बल्कि वे एक ग्राहक-केन्द्रित सेवा उद्योग के रूप में विकसित हो चुके हैं। तकनीकी प्रगति, डिजिटल बैंकिंग, निजी बैंकों और फिनटेक कंपनियों की बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने ग्राहकों की अपेक्षाओं को अत्यंत व्यापक और जटिल बना दिया है। ऐसे परिवेश में बैंकिंग संस्थाओं के लिए यह जानना अत्यंत आवश्यक हो गया है कि ग्राहक उनकी सेवाओं, व्यवहार और प्रक्रियाओं को किस दृष्टि से देखते हैं। यहीं पर ग्राहक फीडबैक, अर्थात ग्राहक फीडबैक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। ग्राहक फीडबैक बैंक को आत्ममंथन का अवसर देती है और उसे निरंतर सुधार की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

ग्राहक फीडबैक का महत्व

ग्राहक फीडबैक बैंक और ग्राहक के बीच संवाद का सबसे सशक्त माध्यम है। बैंक द्वारा प्रदान की जा रही सेवाएँ वास्तव में कितनी प्रभावी हैं, यह केवल आंतरिक रिपोर्टों या आँकड़ों से स्पष्ट नहीं हो सकता। वास्तविक स्थिति तब सामने आती है जब ग्राहक अपने अनुभव साझा करते हैं। ग्राहक संतुष्टि, असंतोष, अपेक्षाएँ और सुझाव—ये सभी फीडबैक के माध्यम से बैंक तक पहुँचते हैं। बैंकिंग क्षेत्र विश्वास पर आधारित होता है। जब ग्राहक यह अनुभव करता है कि बैंक उसकी बात सुनता है, उसकी समस्याओं को गंभीरता से लेता है और समाधान करता है, तो उसके मन में बैंक के प्रति विश्वास और निष्ठा उत्पन्न होती है। इसके विपरीत यदि ग्राहक की प्रतिक्रियाओं की अनदेखी की जाए, तो असंतोष जन्म लेता है, जो धीरे-धीरे बैंक की छवि और कारोबार दोनों को प्रभावित करता है।

सेवा गुणवत्ता और प्रक्रियाओं में सुधार

ग्राहक फीडबैक बैंक की सेवा गुणवत्ता का वास्तविक प्रतिबिंब होता है। शाखा में मिलने वाली सेवा, कर्मचारियों का व्यवहार, कार्य निष्पादन की गति, प्रक्रियाओं की सरलता अथवा जटिलता—इन सभी पहलुओं पर ग्राहक फीडबैक बैंक को यह समझने में सहायता करती है कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। अक्सर बैंक अपनी प्रक्रियाओं को तकनीकी या नियामकीय दृष्टि से सही मानते हैं, परंतु वही प्रक्रियाएँ ग्राहक के लिए कठिन, समय-साध्य या भ्रमपूर्ण हो सकती हैं। फीडबैक के माध्यम से बैंक इन जटिलताओं को पहचान कर प्रक्रियाओं को अधिक सरल, पारदर्शी और ग्राहक-अनुकूल बना सकते हैं।

शिकायत निवारण और ग्राहक संरक्षण

ग्राहक की शिकायत को सामान्यतः नकारात्मक रूप में देखा जाता है, वास्तव में यह बैंक के लिए सुधार का अवसर होती है। शिकायतें यह दर्शाती हैं कि प्रणाली में कहीं न कहीं कमी है। यदि इन शिकायतों का समयबद्ध और प्रभावी समाधान किया जाए, तो ग्राहक का असंतोष, संतुष्टि में परिवर्तित हो सकता है। भारतीय रिज़र्व बैंक और अन्य नियामक संस्थाएँ ग्राहक संरक्षण पर विशेष जोर देती हैं। ग्राहक फीडबैक और शिकायतों का विश्लेषण बैंक को न केवल नियामकीय अनुपालन में सहायता करता है, बल्कि परिचालन जोखिम और प्रतिष्ठागत जोखिम को भी कम करता है।

ग्राहक प्रतिधारण और प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त

वर्तमान समय में ग्राहकों के पास अनेक बैंकिंग विकल्प उपलब्ध हैं। यदि किसी बैंक में ग्राहक को अपेक्षित सेवा नहीं मिलती, तो वह आसानी से किसी अन्य बैंक की ओर रुख कर सकता है। इस संदर्भ में ग्राहक फीडबैक बैंक को यह अवसर देता है कि वह ग्राहक की बदलती आवश्यकताओं को समझे और समय रहते अपनी सेवाओं में सुधार करे। ग्राहक प्रतिधारण बैंक के लिए नए ग्राहक जोड़ने की तुलना में अधिक किफायती और स्थायी होता है। संतुष्ट ग्राहक न केवल लंबे समय तक बैंक से जुड़े रहते हैं, बल्कि अपने अनुभव के माध्यम से बैंक के लिए नए ग्राहक भी लाते हैं। इस प्रकार ग्राहक फीडबैक बैंक को प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त प्रदान करता है।

नवाचार और उत्पाद विकास में भूमिका

ग्राहक केवल सेवाओं के उपभोक्ता नहीं होते, बल्कि वे बैंक के लिए सुझावों का महत्वपूर्ण स्रोत भी होते हैं। उनकी प्रतिक्रियाओं से यह स्पष्ट होता है कि बाजार में किस प्रकार के उत्पादों और सेवाओं की आवश्यकता है। डिजिटल सेवाएँ, विशेष खातें, ऋण उत्पाद, निवेश योजनाएँ—इन सभी के विकास में ग्राहक फीडबैक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब बैंक ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पाद विकसित करते हैं, तो उनकी स्वीकार्यता बढ़ती है और व्यावसायिक वृद्धि सुनिश्चित होती है। इस प्रकार ग्राहक फीडबैक नवाचार की नींव बनता है।

डिजिटल बैंकिंग और तकनीकी सुधार

डिजिटल युग में ग्राहक अनुभव का एक बड़ा हिस्सा मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग और एटीएम सेवाओं से जुड़ा होता है। तकनीकी त्रुटियाँ, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ या उपयोग

में कठिनाई—इन सभी पहलुओं पर प्राप्त फीडबैक बैंक को अपनी डिजिटल प्रणालियों को अधिक सुरक्षित, सुगम और प्रभावी बनाने में सहायता करता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सकारात्मक ग्राहक अनुभव बैंक की आधुनिक और प्रगतिशील छवि को मजबूत करता है, जबकि नकारात्मक अनुभव बैंक की प्रतिष्ठा को क्षति पहुँचा सकता है।

कर्मचारी कार्यनिष्पादन और सेवा संस्कृति

ग्राहक फीडबैक अप्रत्यक्ष रूप से बैंक कर्मचारियों के कार्यनिष्पादन का भी मूल्यांकन करती है। कर्मचारियों का व्यवहार, संवाद कौशल और कार्यकुशलता—ये सभी ग्राहक अनुभव को प्रभावित करते हैं। फीडबैक के विश्लेषण से बैंक यह पहचान सकते हैं कि किन क्षेत्रों में प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इससे न केवल कर्मचारियों का कौशल विकास होता है, बल्कि बैंक में एक सकारात्मक सेवा संस्कृति का निर्माण भी होता है, जो दीर्घकालीन सफलता के लिए आवश्यक है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि ग्राहक फीडबैक बैंकिंग संस्थाओं के लिए मात्र एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सतत सुधार और दीर्घकालीन विकास का मूल आधार है। यह बैंक को आत्मविश्लेषण का अवसर देता है, ग्राहक और बैंक के बीच विश्वास को सुदृढ़ करता है तथा प्रतिस्पर्धी वातावरण में बैंक को प्रासंगिक बनाए रखता है। जो बैंक ग्राहक फीडबैक को अपनी नीति और कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग बनाते हैं, वही भविष्य में अधिक सफल, विश्वसनीय और जनप्रिय सिद्ध होते हैं। फीडबैक, ग्राहक सेवा को दिशा, गहराई और प्रभावशीलता प्रदान करता है। यह ग्राहक सेवा को एकतरफा प्रक्रिया से निकालकर द्विपक्षीय संवाद में परिवर्तित करता है। बैंकिंग संस्थाएँ यदि ग्राहक फीडबैक को गंभीरता से अपनाएँ और उसे सेवा सुधार का आधार बनाएँ, तो न केवल ग्राहक संतुष्टि बढ़ेगी, बल्कि बैंक की छवि, विश्वसनीयता और दीर्घकालीन सफलता भी सुनिश्चित होगी।

शारदा साव
क्षे.का., धनबाद

काव्य सृजन

क्या खोया....क्या पाया....

ये दुनिया जो हमने बनाई है,
ये ज़िंदगी जो बड़े जतन से कमाई है।
इसमें रफ्तार तो.. भरपूर है,
पर ना तो ठहराव है, ना तो गहराई है।

हमने बैंक अकाउन्ट में कई शून्य तो जोड़ लिए,
लेकिन अपने शून्य होने का एहसास घटा नहीं पाए।
ट्विटर पर ब्लू टिक तो ले लिया, पर अपनी लाइफ से
रेड फ़्लैग हटा नहीं पाए।

आसमान से जुड़ने की जिद् में,
हम अपनी जमीनो से टूट गए।
सफलता और सुख में अंतर है,
कामयाबी और खुशी में फरक है,
ये समझानेवाले बुजुर्ग कहीं पीछे ही छूट गए...

पेंट हाउस बना लिया, लेकिन इतनी फुरसत कहाँ?
कि बच्चों के साथ रेत के घरौंदे बना पाते!
कलाई में चार लाख की घड़ी पहन ली और,
वक़्त इतना भी नहीं कि चार पल अपनों के साथ बिता पाये।

गुरु की जगह गूगल को दे दी,
जो गूगल कहें वहीं सत्यम-शिवम-सुंदरम है।
तभी तो आज हमारे पास जानकारी ज्यादा
और समझदारी कम है।

बड़े-बड़े अरमान पूरे किए,
छोटी-छोटी आरजूएं हाथ मलती हैं।
घर से निकलते हुए कभी माँ की दुआएं साथ चलती थीं,
और अब ब्लड प्रेशर की दवाएं साथ चलती हैं।

एक वो भी क्या दिन थे, एक... वो भी क्या दिन थे
कि जहाँ थक गए वहीं सो गए और आज लाखों का मैटरस है,
लेकिन गहरी नींद में सोए महीनों हो गए।

दिखावा ऐसा कि हम टूटे हुए पैरों में ब्रांडेड जूते कसते है
और अदाकारी ऐसी की अंदर जितने जयादा आंसू हैं,
बाहर उतना ही जोर से हंसते हैं।

इस डिजिटल दुनिया में कहाँ ढूंढे माँ की चिट्टियाँ कहा चलीं गईं,
बाबू जी के तार कहाँ खो गए,
फेस्बुक पर चार हज़ार फ्रेंड्स हैं, पर
जो एक आवाज़ में दौड़ चले आते थे, वो चार यार कहाँ खो गए???

ये दुनिया जो हमने बनाई है,
ये जिंदगी जो बड़े जतन से कमाई है।
इसमें जितना शोर है उतना ही सन्नाटा है,
जितनी भीड है उतनी ही तन्हाई है।

एक वजूद जो हज़ारों टुकडों में बट गया
दिल कहीं है, दिमाग कहीं है और होश कहीं है...
जब हमारे पास कुछ नहीं था, तो लगता था कि सब कुछ है,
और आज सब कुछ है
तो लगता है कि कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं!

चीना अरोड़ा
क्षे.का., विजयवाडा

बादलों के पार:

दोस्तों के साथ एक यादगार सफ़र

जीवन में कुछ यात्राएं ऐसी होती हैं जिन्हें हम बहुत सोच-समझकर और बारीकी से प्लान करते हैं—टिकट बुक करना, हर घंटे की इटिनेररी बनाना और महीनों पहले होटल रिजर्व करना। लेकिन कुछ यात्राएं ऐसी होती हैं जो बस स्वाभाविक रूप से, एक अहसास के साथ शुरू होती हैं, जो किसी तय समय सारणी से नहीं बल्कि दोस्तों के साथ जुड़ी भावनाओं से चलती हैं। हमारी हालिया मुन्नार यात्रा कुछ ऐसी ही थी। यह केवल एक छोटी सी सैर या 'गेटअवे' नहीं था; यह सहजता, गहरी दोस्ती और कुछ असाधारण देखने की एक साझा भूख से बुना हुआ एक ऐसा अनुभव था जिसने हमारी रूह को ताज़ा कर दिया।

हम चार दोस्त थे—अनवर, विष्णु, अनु और मैं (जिष्णु)। हम सब अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी की थकान—काम का दबाव, ऑफिस की डेडलाइन्स और एक ही जैसे नीरस रूटीन—से बुरी तरह ऊब गए थे। जो चीज़ हमें एक साथ लाई वह बहुत सरल थी: बस कुछ दिनों के लिए इन सबसे दूर भाग जाने की ज़रूरत। हमारा प्लान बहुत 'लूज' और सादा था—अपनी गाड़ी उठाकर मुन्नार तक ड्राइव करना, आस-पास की अनछुई जगहों को तलाशना और रास्ते में बस यादें बनाना। लेकिन जैसा कि अक्सर होता है, इस सफ़र में हमारे लिए कुछ ऐसा इंतज़ार कर रहा था जो हमारी उम्मीदों से कहीं ज़्यादा गहरा, सुंदर और जादुई था।

वो ड्राइव जिसने पूरे सफ़र का मिज़ाज तय कर दिया

हर यादगार सफ़र की शुरुआत एक ऐसी ड्राइव से होती है जो आपको महसूस करा दे कि कुछ बहुत खास होने वाला है। हमारा यह सफ़र हमारे दोस्त अनवर की नई गाड़ी के आरामदायक अहसास के साथ शुरू हुआ। यह गाड़ी जल्द ही हमारे लिए सिर्फ एक वाहन नहीं, बल्कि पहियों पर हमारी अपनी एक नन्ही सी दुनिया बन गई। यह एक ऐसा चलता-फिरता ठिकाना बन गया जहाँ बाहरी दुनिया का शोर थम गया था और सिर्फ सामने फैली घुमावदार सड़क मायने रख रही थी।

जैसे ही हमने शहर के जाने-पहचाने शोर, कंक्रीट के जंगलों और ट्रैफिक को पीछे छोड़ा, हवा का मिज़ाज बदलने लगा। मैदानों की वो उमस भरी और भारी हवा अब एक ताज़ा, ठंडी और हल्की हवा में बदल गई थी, जिसमें गीली मिट्टी, नीलगिरी के पेड़ों और जंगली फूलों की सोंधी खुशबू बसी थी। जैसे-जैसे हम ऊँचाई की ओर बढ़ रहे थे, सड़कें संकरी होने लगीं, तापमान गिरने लगा और खिड़की के बाहर हर तरफ सिर्फ हरियाली ही हरियाली नज़र आने लगी। मुन्नार का अपना एक तरीका है आपका स्वागत करने का—यह अचानक नहीं होता, बल्कि धीरे-धीरे, एक पुरानी किताब की तरह खुलता है, जहाँ हर मोड़ पर एक नया और खूबसूरत अध्याय आपकी आँखों के सामने होता है।

पूरी ड्राइव के दौरान हमारी बातचीत कभी बहुत गंभीर होती तो कभी पूरी तरह से बेतुकी और बचकानी। हमने सालों पुरानी कॉलेज की यादों को फिर से ताज़ा किया, उन किस्सों को ढूँढ निकाला जिन्हें हम भागदौड़ में लगभग भूल चुके थे, और ऐसे नए इनसाइड जोक्स बनाए जो शायद आने वाले कई सालों तक हमारे बीच सुनाए जाएंगे।

रास्ते में कुछ पल ऐसे भी आए जब हम सब बिल्कुल खामोश हो गए। ऐसा इसलिए नहीं था कि कहने को कुछ बचा नहीं था, बल्कि इसलिए क्योंकि बाहर का नज़ारा हमारी पूरी तवज्जो माँग रहा था। चाय के बागानों से ढकी पहाड़ियाँ दूर क्षितिज तक मखमली कालीन की तरह फैली हुई थीं, और उनके बीच तैरता कोहरा ऐसा लग रहा था मानो किसी ने पहाड़ों के कंधों पर सफेद रेशमी चादर डाल दी हो। हमने कई बार गाड़ी रोकी—ज़रूरत के लिए नहीं, बल्कि उस बेपनाह खूबसूरती को निहारने के लिए। हर मोड़ एक नया नज़ारा पेश कर रहा था, जिसे कैमरे के लेंस में कैद करना मुमकिन तो था, लेकिन उस अहसास को कैद करना नामुमकिन था। हमने महसूस किया कि कुछ दृश्य सिर्फ आंखों से देखने के लिए नहीं, बल्कि दिल में उतारने के लिए होते हैं।

वट्टावडा की शांत और अनछुई खूबसूरती

मुन्नार का मुख्य शहर तो हमेशा पर्यटकों की भीड़ से भरा रहता है, लेकिन हमारी असली तलाश हमें थोड़ा और दूर, शांति के एक टापू वट्टावडा की ओर ले गई।

वट्टावडा एक ऐसा रहस्य जैसा महसूस होता है जिसे दुनिया की शोर-शराबे वाली नज़रों ने अभी तक पूरी तरह से नहीं खोजा है। केरल और तमिलनाडु की सीमा के पास पहाड़ी की गोद में बसा यह गाँव मुन्नार के कमर्शियल इलाकों से बिल्कुल अलग है। यहाँ एक पुरानी

दुनिया वाली शांति, सादगी और ठहराव है जो आजकल की इस 'फास्ट-फॉरवर्ड' ज़िंदगी में मिलना लगभग नामुमकिन है। वट्टावडा तक का रास्ता खुद में एक बड़ा रोमांच है—सड़कें और भी संकरी होती जाती हैं, रास्ता कहीं-कहीं पथरीला होता है और आस-पास का नज़ारा और भी कच्चा, जंगली और असली लगने लगता है।

मुन्नार के सजे-धजे और कतारबद्ध चाय बागानों के उलट, वट्टावडा एक अलग तरह की देहाती सुंदरता पेश करता है। यहाँ आपको सीढ़ीदार खेतों में सब्ज़ियों के बड़े-बड़े खेत और फलों के बाग मिलते हैं। यहाँ की हवा इतनी साफ़ और मीठी है कि आप उसे पी सकते हैं, और यहाँ पहुँचते ही वक्त जैसे अपनी गति भूलकर ठहर सा जाता है। हमने घंटों बस वहाँ के खेतों में घूमने में बिताए—गोभी, गाजर और लहसुन के खेतों के बीच से गुज़रते हुए, वहाँ के स्थानीय लोगों से बात करते हुए जिनकी सादगी और मुस्कान पहाड़ों की धूप जैसी गर्म और सच्ची थी। यहाँ की मिट्टी की महक में कुछ ऐसा जादुई है जो आपको जड़ों से जोड़ देता है। वट्टावडा ने हमें सिखाया कि खुशी अक्सर उन चीज़ों में नहीं होती जिन्हें हम खरीदते हैं, बल्कि उन पलों में होती है जिन्हें हम बस जीते हैं।

वो एक फैसला जिसने सब बदल दिया: कोलुक्कुमलाई

शाम को जब हम सब चाय के प्यालों के साथ वट्टावडा की उस हल्की ठंड में साथ बैठे थे, तभी अचानक सूर्योदय (सनराइज़) देखने का विचार आया। और यह कोई साधारण सनराइज़ नहीं था, बल्कि दुनिया के सबसे ऊँचे ऑर्गेनिक चाय बागान—कोलुक्कुमलाई—का वो मशहूर सवेरा था जिसके बारे में हमने सिर्फ सुना था।

"चलो कल सुबह सनराइज़ देखने चलते हैं," विष्णु ने अचानक सुझाव दिया।

"कितने बजे?" मैंने अपनी नींद की फिक्र करते हुए थोड़ा सहजता से पूछा।

"सुबह 4 बजे," विष्णु ने दृढ़ता से जवाब दिया।

एक पल के लिए हम सबके बीच सन्नाटा छा गया। छुट्टी के दिन, जब आप सुकून की तलाश में आए हों, सुबह 4 बजे उठना किसी के लिए भी आसान नहीं होता। हमने एक तरफ अपने गर्म और मुलायम कंबलों के बारे में सोचा और दूसरी तरफ पहाड़ी की उस कड़ाके वाली, हड्डियों को कंपा देने वाली ठंड के बारे में। लेकिन उस पल की सहजता और रोमांच ने हमें 'हां' कहने पर मजबूर कर दिया। हमें उस समय बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि हमारा यह एक छोटा सा फैसला पूरी ट्रिप का सबसे शानदार, यादगार और जीवन बदलने वाला हिस्सा बनने वाला है।

अंधेरे का सफ़र: सुबह 4 बजे की वो 'टफ' जीप सफारी

अगली सुबह, या यूँ कहें कि आधी रात के ठीक बाद, हम कड़ाके की ठंड में कांपते हुए और नींद से भरी आँखों के साथ बाहर निकले। दुनिया बिल्कुल खामोश थी—एक ऐसी भारी और डरावनी खामोशी जो शहरों में कभी महसूस नहीं की जा सकती। आसमान में सितारों की चमक इतनी साफ थी मानों वे आसमान पर नहीं बल्कि हमारे ठीक ऊपर ही हों।

कोलुक्कुमलाई की उस चोटी तक पहुँचने के लिए हमें अपनी आरामदायक गाड़ी को सुरक्षित पार्किंग में छोड़ना पड़ा और एक स्थानीय, विशेष रूप से बनी 4/4 उबड़-खाबड़ महिंद्रा जीप में सवार होना पड़ा। अनवर की चिकनी और शांत गाड़ी के मुकाबले यह सफ़र पूरी तरह से अलग और शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण होने वाला था। कोलुक्कुमलाई का रास्ता दुनिया भर में अपनी 'टफ टेरेन' (बेहद कठिन रास्तों) के लिए मशहूर है। यह कोई सड़क नहीं थी; यह बड़े-बड़े पत्थरों, गहरी कीचड़ भरी खाइयों, खड़ी चढ़ाइयों और खतरनाक मोड़ों का एक ऐसा सिलसिला था जो घने अंधेरे में और भी ज़्यादा चुनौतीपूर्ण लग रहा था।

जीप अपनी पूरी ताकत के साथ उन पत्थरों पर उछल रही थी। यह सफ़र रोमांचक तो था ही, लेकिन साथ ही शरीर को थका देने वाला भी था। हर झटका जो हमें अपनी सीट से कुछ इंच ऊपर उछाल देता, हर वो तीखा मोड़ जहाँ जीप के टायर फिसलन भरे पत्थरों पर अपनी पकड़ बनाते, हमारी धड़कनें और हमारे डर को बढ़ा रहा था। हम अंधेरे में एक-दूसरे के ऊपर गिर रहे थे, चिल्ला रहे थे और घबराहट में पागलों की तरह हंस रहे थे। डस्ट और धुएं के बीच से रास्ता तलाशती वो जीप हमें ऊँचाइयों की ओर ले जा रही थी।

वो बर्फीली हवा जब हमारे चेहरे पर लग रही थी, उसने हमें किसी भी 'स्ट्रांग' कॉफी से ज़्यादा जगा दिया था। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ रहे थे, दिल की धड़कन और उत्सुकता दोनों बढ़ती जा रही थी। हम घने अंधेरे को चीरते हुए उस पल का पीछा कर रहे थे जब रोशनी पहली बार ज़मीन को छुएगी।

एक बेमिसाल सूर्योदय: बादलों के ऊपर का स्वर्ग

और फिर, करीब डेढ़ घंटे की हड्डी-तोड़ सवारी के बाद, हम कोलुक्कुमलाई की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँच गए।

शुरुआत में, क्षितिज पर बस एक बहुत ही हल्की, मद्धम सी चमक थी। गहरा नीला आसमान, जो अभी तक तारों से भरा था, धीरे-धीरे गहरा नीला, फिर बैंगनी और फिर

सुनहरे-नारंगी रंगों की परतों में बदलने लगा। जब हम उस पुरानी जीप से नीचे उतरे, तो सामने का जो नज़ारा था, उसने हमारी आवाज़ ही छीन ली। वह किसी फिल्म का सेट या कोई काल्पनिक पेंटिंग जैसा था।

हमारे नीचे ज़मीन नहीं थी, बल्कि बादलों का एक अंतहीन, अनंत समंदर फैला हुआ था। 'क्लाउड बेड' जिसकी हम कहानियाँ सुनते हैं, वह हमारी आँखों के ठीक नीचे था। वे बादल इतने घने, इतने नरम और इतने सफेद थे कि ऐसा लग रहा था मानो हम बादलों के ऊपर किसी दूसरी दुनिया के किनारे पर खड़े हों।

जैसे ही सूरज तमिलनाडु के मैदानों के पार से, पहाड़ों की ओट से धीरे-धीरे बाहर निकलने लगा, पूरा नज़ारा एक जादुई रोशनी से भर गया। बादलों की उन परतों ने सूरज की पहली किरणों को पकड़ लिया और वे अचानक गुलाबी, नारंगी और चमकदार सुनहरे रंगों में बदल गए। उस पल हम चारों में से कोई कुछ नहीं बोला। उस खामोशी में एक अजीब सा रूहानी सुकून और विस्मय था। यह उन दुर्लभ क्षणों में से एक था जब आप दुनिया की हर चिंता, हर अधूरा काम, हर ईमेल और हर ज़िम्मेदारी को पूरी तरह भूल जाते हैं। वहाँ उस चोटी पर, हम सिर्फ चार दोस्त थे जो ब्रह्मांड के उस महान करिश्मे के साक्षी बन रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे समय रुक गया है और दुनिया में बस हम और वो उगता हुआ सूरज है।

वापसी की राह और एक नया अहसास

जैसे-जैसे सूरज ऊपर चढ़ने लगा और गर्मी बढ़ने लगी, बादलों की वो चादर धीरे-धीरे फटने लगी और नीचे की घाटियाँ नज़र आने लगीं। वापसी के रास्ते ने हमें वो सब कुछ दिखाया जिसे हमने ऊपर जाते समय अंधेरे में पार किया था। उन खतरनाक ढलानों, तीखे मोड़ों और दुनिया के सबसे ऊँचे चाय बागान की उन झाड़ियों को दिन की रोशनी में देखना और भी ज़्यादा रोमांचक और थोड़ा डरावना था। हमें यकीन नहीं हो रहा था कि हम उस उबड़-खाबड़ रास्ते से ऊपर पहुँच गए थे।

जब हम वापस अपनी एक्सयूवी में बैठे और वट्टावडा की सड़कों पर फिर से निकले, तो हम सब के अंदर एक अजीब सी शांति और संतुष्टि थी। हमने एक-दूसरे की आँखों में वो खुशी देखी जो शब्दों में बयान नहीं की जा सकती।

सफ़र का निष्कर्ष: क्यों ये यादें खास हैं

यह यात्रा हमें बहुत कुछ सिखा गई। यह हमें याद दिलाती है कि सफ़र सिर्फ डेस्टिनेशन पर पहुँचने के बारे में नहीं होता; यह उन अनुभवों, उन मुश्किलों और उन लोगों के बारे में होता है जिनके साथ आप उन्हें बाँटते हैं। यह उन लंबी ड्राइव्स के दौरान हुई हमारी बेमतलब की बातों के बारे में है, अनवर की वो प्यारी टांग खिंचाई के बारे में है जिसने पूरे रास्ते हमें हँसाया, और उस जादुई खामोशी के बारे में है जो हम सबने बादलों के ऊपर खड़े होकर एक साथ महसूस की।

हमारी मुन्नार, वट्टावडा और कोलुक्कुमलाई की यह यात्रा किसी पाँच-सितारा लग्ज़री या बहुत बड़ी प्लानिंग से नहीं बनी थी। यह बनी थी हमारी सहजता, हमारी सादगी और एक-दूसरे के साथ से। हमने महसूस किया कि असली एडवेंचर तब शुरू होता है जब आप अपने 'कम्फर्ट ज़ोन' से बाहर निकलते हैं।

कुछ आखिरी बातें

जब हम वापस अपने घर की ओर बढ़ रहे थे और पहाड़ों को पीछे छोड़ रहे थे, तो मन में एक भारीपन था क्योंकि यह जादुई सफ़र खत्म हो रहा था। लेकिन उस उदासी से कहीं ज़्यादा एक गहरा आभार था—उस सफ़र के लिए जिसने हमें फिर से जीना सिखाया, अनवर, विष्णु और अनु जैसे दोस्तों के लिए जो हर मुश्किल रास्ते को हँसी में बदल देते हैं, और विष्णु के उस एक सुझाव के लिए कि "चलो सनराइज़ देखते हैं।"

कुछ यात्राएं आपको सिर्फ सुंदर तस्वीरें देती हैं जिन्हें आप सोशल मीडिया पर डालते हैं। कुछ आपको कहानियाँ देती हैं। लेकिन कुछ यात्राएं—जैसे यह—आपको एक ऐसा अहसास, एक ऐसा 'फील' देती हैं जिसे आप ताउम्र अपने दिल के एक कोने में संजो कर रखते हैं।

अगर आप कभी मुन्नार जाएं, तो सिर्फ टूरिस्ट स्पॉट्स तक न रुकें। उन रास्तों पर ज़रूर निकलें जहाँ भीड़ कम और प्रकृति ज़्यादा हो। सुबह जल्दी उठने का वो 'कष्ट' सहें, उस कठिन जीप सफारी का रिस्क लें और कोलुक्कुमलाई की उस चोटी पर ज़रूर खड़े हों। क्योंकि बादलों के ऊपर कहीं आपका वो एक लम्हा इंतज़ार कर रहा है, जो शायद हमेशा के लिए दुनिया को देखने का आपका नज़रिया बदल देगा।

सी. जिष्णु मोहन
क्षे.का., कोल्लम

केंद्रीय कार्यालय में आयोजित महिला विशेष हिंदी कार्यशाला -2026

दिनांक 07.03.2026 को राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन श्री आशीष पाण्डेय, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की अध्यक्षता एवं श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में श्री हरीश सिंह चौहान, उप निदेशक(का.), क्षे. का. का.(मुंबई) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में सुश्री चित्रा देसाई, लेखिका एवं अधिवक्ता उपस्थित रहे। इस अवसर पर वरिष्ठ महिला कार्यपालकों को सम्मानित किया गया और 150 महिला कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया।

महिला विशेष हिंदी कार्यशाला - 2026

अं. का. एव क्षे. का., मेरठ

अं. का. एवं क्षे. का., जयपुर

अं. का., दिल्ली तथा सभी क्षे. का.

अं. का., भोपाल

अं. का., वाराणसी

अं. का., विजयवाडा

अं. का., विशाखपट्टणम

अं. का., हैदराबाद

क्षे. का., अनंतपुर

क्षे. का., अहिल्यानगर

क्षे. का., आगरा

क्षे. का., आणंद

क्षे. का., एर्णाकुलम

क्षे. का., कर्नूल

क्षे. का., कलबुर्गी

क्षे. का., कोट्टायम

क्षे. का., कोल्लम

क्षे. का., खम्मम

महिला विशेष हिंदी कार्यशाला - 2026

क्षे. का., ग्रेटर-कोलकाता

क्षे. का., ग्रेटर-पुणे

क्षे. का., जालंधर

क्षे. का., तिरुवनंतपुरम

क्षे. का., तृश्शूर

क्षे. का., नागपुर

क्षे. का., पटना

क्षे. का., बड़ौदा

क्षे. का., बरेली

क्षे. का., बालेश्वर

क्षे. का., बेंगलूरु (उत्तर)

क्षे. का., बेंगलूरु (दक्षिण)

क्षे. का., बोरीवली

क्षे. का., ब्रह्मपुर

क्षे. का., भागलपुर

क्षे. का., मंगलूरु

क्षे. का., मछलीपट्टणम

क्षे. का., मुंबई-अंधेरी

क्षे. का., मैसूरु

क्षे. का., रायगडा

क्षे. का., रायपुर

क्षे. का., लुधियाना

क्षे. का., समस्तीपुर

क्षे. का., सेलम

अं. का. एवं क्षे. का., एर्णाकुलम

अं. का. एवं क्षे. का., मेरठ

अं. का., चंडीगढ़

अं. का., दिल्ली एवं क्षे. का., दिल्ली (दक्षिण)

अं. का., पुणे, क्षे. का., ग्रेटर-पुणे एवं पुणे-मेट्रो

अं. का., बेंगलूरु

अं. का., भोपाल

अं. का., विजयवाडा

अं. का., विशाखपट्टणम

अं. का., हैदराबाद

क्षे. का., मुंबई-बोरीवली

क्षे. का., अमरावती

क्षे. का., अहिल्यानगर

क्षे. का., आगरा

क्षे. का., आणंद

क्षे. का., उडुपि

क्षे. का., उदयपुर

क्षे. का., करनाल

क्षे. का., कर्नूल

क्षे. का., कलबुरगी

क्षे. का., काकिनाडा

क्षे. का., कोटा

क्षे. का., कोट्टायम

क्षे. का., कोल्लम

क्षे. का., कोषिक्कोड

क्षे. का., खम्मम

क्षे. का., गाजियाबाद एवं गुरुग्राम

क्षे. का., चंदौली

आयोजित कार्यक्रम/प्रतियोगिताएँ

क्षे. का., चेन्नै-उत्तर

क्षे. का., जयपुर

क्षे. का., जालंधर

क्षे. का., जोरहाट

क्षे. का., ठाणे

क्षे. का., तृश्शूर

क्षे. का., दिल्ली-उत्तर

क्षे. का., देहरादून

क्षे. का., नागपुर

क्षे. का., नासिक

क्षे. का., निज़ामाबाद

क्षे. का., पटना

क्षे. का., बठिंडा

क्षे. का., बरेली

क्षे. का., बालेश्वर

क्षे. का., बेंगलूरु- उत्तर

क्षे. का., भागलपुर

क्षे. का., मऊ

क्षे. का., मचिलीपटनम

क्षे. का., महबूबनगर

क्षे. का., मुंबई- अंधेरी

क्षे. का., मैसूरु

क्षे. का., राजकोट

क्षे. का., रायगड़ा

क्षे. का., लुधियाना

क्षे. का., विजयनगरम

क्षे. का., विशाखपट्टणम

क्षे. का., शिमला

क्षे. का., श्रीकाकुलम

क्षे. का., समस्तीपुर

क्षे. का., हल्द्वानी

क्षे. का., हिसार

क्षे.का., तिरुवनंतपुरम

पर्यावरण बनाम विकास

मानव सभ्यता के विकास की यात्रा जितनी पुरानी है, उतना ही पुराना है उसका प्रकृति से संबंध। आरंभिक काल में जब मनुष्य शिकारी और संग्राहक था, तब उसका जीवन पूर्णतः पर्यावरण पर निर्भर था। न तो मशीनों का अस्तित्व था, न कारखानों का धुआँ, न ही शहरों की भीड़भाड़। समय के साथ जब मानव ने आग का उपयोग करना सीखा, खेती करने लगा, और स्थायी बस्तियाँ बसाईं, तभी से उसने प्रकृति में हस्तक्षेप करना आरंभ किया। यही हस्तक्षेप आगे चलकर विकास कहलाया, लेकिन इस विकास की कीमत आज पर्यावरण चुका रहा है। इसीलिए "पर्यावरण बनाम विकास" का प्रश्न हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बन गया है।

विकास का अर्थ प्रगति से है — ऐसी स्थिति जहाँ समाज आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी दृष्टि से आगे बढ़े। जब किसी देश में उद्योग बढ़ते हैं, सड़कें बनती हैं, बिजली उत्पादन होता है, रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, तो हम कहते हैं कि वह देश विकसित हो रहा है। लेकिन यह विकास अक्सर पर्यावरणीय संतुलन की कीमत पर होता है। कारखानों से निकलने वाला धुआँ, वाहनों से उत्सर्जित गैसें, वनों की कटाई, नदियों का प्रदूषण, और जैव विविधता का ह्रास — ये सब विकास की अंधी दौड़ के परिणाम हैं। इस प्रकार विकास और पर्यावरण के बीच संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब आर्थिक प्रगति के लिए प्रकृति का दोहन किया जाता है, लेकिन उसकी पुनर्स्थापना नहीं की जाती।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के बाद जिस प्रकार मशीनों और कारखानों का प्रसार हुआ, उसने विश्व की अर्थव्यवस्था को तो गति दी, परंतु पर्यावरणीय क्षति की नींव भी रख दी। बढ़ते औद्योगिकीकरण ने न केवल वायु और जल को दूषित किया बल्कि तापमान वृद्धि और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ भी पैदा कीं। कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों के अत्यधिक उपयोग से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ी, जिससे ग्रीनहाउस प्रभाव और वैश्विक ऊष्मीकरण का खतरा उत्पन्न हुआ। आज ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, और चरम मौसमी घटनाएँ जैसे बाढ़, सूखा और तूफान अधिक बार और अधिक तीव्रता से हो रहे हैं। ये सब इस बात के प्रमाण हैं कि मानव ने विकास की राह में पर्यावरण की सीमाओं की उपेक्षा की है।

विकासशील देशों में यह समस्या और भी जटिल है। एक ओर करोड़ों लोग गरीबी, बेरोजगारी और पिछड़ेपन से जूझ रहे हैं, तो दूसरी ओर पर्यावरण की रक्षा की आवश्यकता भी उतनी ही जरूरी है। सरकार जब औद्योगिक क्षेत्र बढ़ाने, सड़कें और हवाई अड्डे बनाने या बिजली उत्पादन बढ़ाने की योजनाएँ बनाती है, तो उसे पर्यावरणीय प्रभाव का मूल्यांकन भी करना पड़ता है। लेकिन अक्सर विकास की आवश्यकता इतनी तीव्र होती है कि पर्यावरणीय चिंताएं पीछे छूट जाती हैं। उदाहरण के लिए, बड़े बांध और खनन परियोजनाएं जहाँ एक ओर ऊर्जा और रोजगार देती हैं, वहीं दूसरी ओर जंगलों का विनाश, जनजातीय विस्थापन और पारिस्थितिक असंतुलन पैदा करती हैं। नर्मदा घाटी परियोजना, कोयला खनन क्षेत्र या पहाड़ी इलाकों में बनने वाले हाइड्रो प्रोजेक्ट्स इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

पर्यावरण केवल पेड़-पौधों या जानवरों का समूह नहीं है, बल्कि यह हमारे अस्तित्व की मूलभूत शर्त है। स्वच्छ हवा, शुद्ध जल और उपजाऊ भूमि के बिना कोई भी सभ्यता स्थिर नहीं रह सकती। लेकिन विकास की अंधी दौड़ में मनुष्य ने इन प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया है। भूजल का अत्यधिक दोहन, रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग, प्लास्टिक कचरे का बढ़ता ढेर और शहरीकरण के कारण घटती हरियाली—ये सब हमारे पर्यावरण को संकट में डाल रहे हैं। यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाली पीढ़ियों को शुद्ध हवा और पानी भी विलासिता की वस्तु लगने लगेगी।

अब सवाल यह उठता है कि क्या विकास और पर्यावरण एक-दूसरे के विरोधी हैं? इसका उत्तर सीधा 'नहीं' है। विरोध पर्यावरण और विकास के बीच नहीं, बल्कि असंतुलित विकास के मॉडल और पर्यावरणीय संतुलन के बीच है। यदि विकास को स्थायी तरीके से किया जाए, तो दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। संवहनीय विकास का सिद्धांत इसी सोच पर आधारित है कि वर्तमान पीढ़ी अपनी आवश्यकताएँ इस प्रकार पूरी करे कि भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता न हो। यह विचार 1987 में विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग की रिपोर्ट 'आवर कॉमन फ्यूचर' में प्रतिपादित किया गया था। इस रिपोर्ट ने दुनिया को यह सोचने पर मजबूर किया कि विकास तभी सार्थक है जब वह पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित हो।

संवहनीय विकास के कई उदाहरण आज हमारे सामने हैं। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा जैसी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करता है। वृक्षारोपण और वनों का संरक्षण जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद करता है। वर्षा जल संचयन, जैविक खेती, और कचरा प्रबंधन जैसी तकनीकें पर्यावरण संरक्षण के

साथ-साथ आर्थिक लाभ भी देती हैं। यदि सरकारें और नागरिक मिलकर इन उपायों को अपनाएँ तो विकास की गति बनाए रखते हुए पर्यावरण की रक्षा की जा सकती है।

भारत ने भी पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कई कदम उठाए हैं। 1972 में आयोजित स्टॉकहोम सम्मेलन के बाद भारत ने पर्यावरण से संबंधित कई कानून बनाए, जैसे—पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986, वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम 1981, जल (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम 1974, और वन संरक्षण अधिनियम 1980। इसके अलावा राष्ट्रीय हरित अधिकरण की स्थापना भी इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इन कानूनों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विकास की योजनाएँ पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ रहें। साथ ही, पेरिस समझौते जैसे अंतरराष्ट्रीय प्रयास भी यह दर्शाते हैं कि दुनिया अब सामूहिक रूप से पर्यावरण की रक्षा के लिए चिंतित है।

फिर भी केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है। जब तक नागरिक स्वयं पर्यावरण के प्रति जागरूक नहीं होंगे, तब तक कोई भी नीति प्रभावी नहीं हो सकती। हमें अपने जीवन में छोटे-छोटे बदलाव लाने की आवश्यकता है—जैसे प्लास्टिक का उपयोग कम करना, बिजली और पानी की बचत करना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग बढ़ाना, पेड़ लगाना और पर्यावरण मित्र उत्पादों को अपनाना। ये छोटे कदम सामूहिक रूप से बड़े परिवर्तन ला सकते हैं।

आज के समय में पर्यावरणीय संकट केवल प्रकृति का नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व का संकट है। वैज्ञानिकों के अनुसार, यदि वर्तमान दर से प्रदूषण और तापमान वृद्धि जारी रही, तो अगले कुछ दशकों में पृथ्वी पर कई तटीय क्षेत्र जलमग्न हो जाएंगे, कृषि उत्पादन घट जाएगा और अनेक जीव प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएंगी। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिरता पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा। इसलिए आवश्यक है कि विकास की अवधारणा को केवल आर्थिक दृष्टि से न देखा जाए, बल्कि उसमें पर्यावरणीय और सामाजिक पहलुओं को भी शामिल किया जाए।

विकास का असली अर्थ तभी सार्थक है जब वह मनुष्य को सुख, सुरक्षा और स्वास्थ्य प्रदान करे। यदि विकास मनुष्य के जीवन को ही खतरे में डाल दे, तो वह विकास नहीं, विनाश है। इसीलिए आज नीति निर्माताओं को यह समझना होगा कि पर्यावरण की रक्षा विकास में बाधा नहीं, बल्कि उसकी बुनियाद है। उदाहरण के लिए, यदि हम प्रदूषण रहित तकनीक अपनाते हैं, तो हम ऊर्जा की बचत कर सकते हैं और स्वास्थ्य पर होने वाला व्यय भी घटा सकते हैं। हरित भवन, इलेक्ट्रिक वाहन और पर्यावरण अनुकूल उद्योग ऐसे उपाय हैं जो विकास को भी बढ़ावा देते हैं और पर्यावरण को भी संरक्षित रखते हैं।

आधुनिक विश्व में "हरित अर्थव्यवस्था" की अवधारणा तेजी से उभर रही है। इसका मूल विचार यही है कि आर्थिक प्रगति को इस प्रकार संचालित किया जाए कि पर्यावरणीय संसाधनों पर दबाव कम हो। उदाहरणस्वरूप, जैव प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यावरण पर्यटन और अपशिष्ट पुनर्चक्रण जैसे क्षेत्र आज रोजगार सृजन के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे रहे हैं। इस दिशा में यदि सरकारें उचित नीतियाँ बनाएं और उद्योग जगत हरित तकनीक को अपनाए, तो विकास और पर्यावरण के बीच सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है।

शिक्षा की भूमिका भी इस संघर्ष में अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब तक बच्चों और युवाओं को पर्यावरणीय नैतिकता और संवेदनशीलता नहीं सिखाई जाएगी, तब तक व्यवहार में परिवर्तन संभव नहीं है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पर्यावरण अध्ययन को केवल विषय के रूप में नहीं, बल्कि जीवनशैली के रूप में अपनाने की आवश्यकता है। जनजागरूकता अभियान, वृक्षारोपण कार्यक्रम, और सामुदायिक प्रयास इस दिशा में सार्थक कदम हो सकते हैं।

यह भी सत्य है कि पर्यावरण संरक्षण और विकास की राह अलग-अलग देशों के लिए समान नहीं हो सकती। विकसित देशों ने पहले ही पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचाया है और अब वे विकासशील देशों से संरक्षण की उम्मीद करते हैं। लेकिन विकासशील देशों के सामने गरीबी और बुनियादी जरूरतों का प्रश्न भी उतना ही गंभीर है। इसलिए वैश्विक स्तर पर न्यायसंगत संतुलन आवश्यक है, जिसमें विकसित देश अधिक जिम्मेदारी लें और विकासशील देशों को तकनीकी व आर्थिक सहयोग प्रदान करें ताकि वे सतत विकास की राह पर आगे बढ़ सकें।

अंततः यह कहना उचित होगा कि पर्यावरण और विकास एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। जब पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तभी विकास स्थायी रहेगा। हमें यह समझना होगा कि पृथ्वी हमारे अधिकार की वस्तु नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारी है। यदि हम प्रकृति का सम्मान करेंगे, तभी वह हमें जीवन देगी। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम विकास की परिभाषा को पुनः परिभाषित करें—ऐसा विकास जो केवल आर्थिक समृद्धि नहीं, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन और सामाजिक न्याय पर भी आधारित हो।

हिमांशु अग्रवाल
बालोद शाखा,
क्षे.का., रायपुर

सहकारिता और वसुधैव कुटुंबकम

भारतवर्ष की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपराओं में "सहकारिता" और "वसुधैव कुटुंबकम" जैसे मूल्य शाश्वत हैं। इन सिद्धांतों में न केवल भारत की आत्मा बसती है, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए एक आदर्श जीवनदर्शन भी निहित है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक, उपभोक्तावादी और राष्ट्रवादी सोच से ओतप्रोत युग में इन दो सिद्धांतों का महत्व और अधिक बढ़ गया है। सहकारिता जहाँ समाज के भीतर सहयोग, परस्पर सम्मान और समृद्धि की बात करती है, वहीं "वसुधैव कुटुंबकम" संपूर्ण पृथ्वी को एक परिवार के रूप में देखने की दृष्टि देता है।

सहकारिता का अर्थ और उसका विकास

"सहकारिता" का शाब्दिक अर्थ है – साथ मिलकर कार्य करना। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सीमाओं को पार कर सामूहिक शक्ति के माध्यम से अपने और समाज के हितों को साधता है। सहकारिता का मूल सिद्धांत है – "सबका साथ, सबका विकास।"

सहकारिता का महत्व विशेष रूप से ग्रामीण और आर्थिक क्षेत्रों में अत्यधिक देखा जाता है। जब छोटे-छोटे किसान, मजदूर या व्यापारी एकजुट होकर कार्य करते हैं, तो वे बड़ी समस्याओं का समाधान आसानी से कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, सहकारी समितियाँ किसानों को उचित मूल्य, ऋण सुविधा और तकनीकी सहायता प्रदान करती हैं।

सहकारिता केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। परिवार, समाज और राष्ट्र की एकता का आधार भी सहकारिता ही है।

मुख्य उद्देश्य:

- आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को सशक्त बनाना
- संसाधनों का साझा उपयोग
- निर्णयों में सहभागिता
- समानता और लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली

महत्वपूर्ण क्षेत्र जहाँ सहकारिता प्रभावी है:

- सहकारी बैंक
- दुग्ध उत्पादक सहकारी संस्थाएँ (अमूल, सुधा, गोकुळ)
- कृषि विपणन मंडियाँ
- श्रमिक सहकारी समितियाँ
- आवास सहकारी संस्थाएँ

सहकारिता केवल आर्थिक विकास का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में आत्मनिर्भरता और आपसी विश्वास का आधार भी है।

वसुधैव कुटुंबकम: भारतीय दर्शन की वैश्विक भावना

भारत की संस्कृति में प्राचीन काल से ही सहकारिता और विश्वबंधुत्व की भावना विद्यमान रही है। हमारे शास्त्रों, वेदों और उपनिषदों में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और "अतिथि देवो भव" जैसे विचार इसी भावना को व्यक्त करते हैं।

"वसुधैव कुटुंबकम" का शाब्दिक अर्थ है – "पूरी पृथ्वी एक ही परिवार है।" यह दर्शन विश्व को सीमाओं, रंग, भाषा या धर्म से परे जाकर एकता में बाँधता है।

इस सिद्धांत के अनुसार, किसी भी व्यक्ति, जाति, धर्म या राष्ट्र के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। सभी मनुष्य एक ही परिवार के सदस्य हैं और उनके बीच प्रेम, सम्मान और सहयोग का भाव होना चाहिए।

आज के वैश्वीकरण के युग में यह विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। दुनिया के विभिन्न देश एक-दूसरे से आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी रूप से जुड़े हुए हैं, ऐसे में "वसुधैव कुटुंबकम" का सिद्धांत विश्व शांति और समृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक बन जाता है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इसका महत्व :

- अंतरराष्ट्रीय शांति की स्थापना
- वैश्विक जलवायु परिवर्तन से संयुक्त रूप से लड़ना
- शरणार्थी संकट में मानवता की सेवा
- वैश्विक व्यापार और सहयोग

"वसुधैव कुटुंबकम" संयुक्त राष्ट्र के विचारों से मेल खाता है और भारत को 'विश्वगुरु' के रूप में स्थापित करने की नींव बनाता है।

वैश्विक समस्याओं के समाधान में वसुधैव कुटुंबकम

आज दुनिया कई गंभीर समस्याओं से जूझ रही है जैसे – जलवायु परिवर्तन, युद्ध, महामारी और गरीबी। इन समस्याओं का समाधान किसी एक देश के प्रयास से संभव नहीं है।

"वसुधैव कुटुंबकम" का सिद्धांत हमें यह सिखाता है कि इन समस्याओं से निपटने के लिए सभी देशों को मिलकर कार्य करना होगा। जब हम पूरी दुनिया को एक परिवार मानेंगे, तभी हम इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान निकाल सकेंगे।

उदाहरण के लिए, कोरोना महामारी के दौरान कई देशों ने एक-दूसरे की सहायता की, जो इस सिद्धांत का जीवंत उदाहरण है।

सहकारिता और वसुधैव कुटुंबकम का परस्पर संबंध

यदि गहराई से देखा जाए तो सहकारिता और वसुधैव कुटुंबकम दोनों एक ही मूल भावना के दो रूप हैं। सहकारिता जहाँ छोटे स्तर पर समाज को जोड़ती है, वहीं वसुधैव कुटुंबकम वैश्विक स्तर पर मानवता को एक सूत्र में बांधता है।

सहकारिता का अभ्यास हमें यह सिखाता है कि हम दूसरों के साथ मिलकर कैसे काम कर सकते हैं, जबकि वसुधैव कुटुंबकम हमें यह सिखाता है कि हम सभी को अपना मानकर कैसे व्यवहार करें।

इस प्रकार, सहकारिता एक व्यवहारिक दृष्टिकोण है और वसुधैव कुटुंबकम एक आदर्शवादी दर्शन है। जब ये दोनों मिलते हैं, तो एक ऐसा समाज बनता है जो न केवल समृद्ध होता है बल्कि मानवीय मूल्यों से भी परिपूर्ण होता है।

सहकारिता और वसुधैव कुटुंबकम दोनों ही सिद्धांतों की आत्मा "साझेदारी", "एकता" और

"सामूहिक कल्याण" है। जहाँ सहकारिता स्थानीय स्तर पर लोगों को जोड़ती है, वहीं वसुधैव कुटुंबकम वैश्विक स्तर पर मानवता को एक सूत्र में पिरोता है। दोनों मिलकर समाज में:

- सामाजिक न्याय की स्थापना
- अवसरों की समानता
- मानवाधिकारों की रक्षा
- शांति और स्थायित्व
- सतत विकास के लिए आधार बनाते हैं।

उदाहरण:

- अंतरराष्ट्रीय सहकारी संगठन (आईसीए) विश्व भर की सहकारी संस्थाओं को जोड़ता है।
- यूएनओ का चार्टर और भारत का "वसुधैव कुटुंबकम" दृष्टिकोण, दोनों ही वैश्विक शांति की बात करते हैं।

व्यावहारिक पहल: भारत की भूमिका

भारत ने विभिन्न अवसरों पर इन सिद्धांतों को व्यवहार में उतारा है:

- **जी20 2023 की थीम:** "वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर्स" – वसुधैव कुटुंबकम पर आधारित
- **कोविड-19 वैक्सीन मैत्री योजना:** भारत ने दर्जनों देशों को निःशुल्क टीके भेजे
- **अमूल जैसे सहकारी मॉडल:** ग्रामीण भारत को सशक्त बनाने का उदाहरण

नई पीढ़ी की भूमिका

युवाओं को इन सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए:

- सहकारी स्टार्टअप्स का निर्माण
- ग्लोबल सिटीजनशिप को अपनाना
- साझा संसाधनों के न्यायसंगत उपयोग को बढ़ावा देना
- सांस्कृतिक आदान-प्रदान और संवाद को प्रोत्साहन देना

अंततः यह कहा जा सकता है कि "सहकारिता" और "वसुधैव कुटुंबकम" दोनों ही मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक सिद्धांत हैं। सहकारिता हमें एकजुट होकर आगे बढ़ने की शक्ति देती है, जबकि वसुधैव कुटुंबकम हमें पूरे विश्व को अपना परिवार मानने की प्रेरणा देता है।

आज के युग में जब दुनिया विभाजन और संघर्ष की ओर बढ़ रही है, तब इन दोनों सिद्धांतों को अपनाना और भी आवश्यक हो गया है। यदि हम इन मूल्यों को अपने जीवन में उतारें, तो न केवल हमारा समाज बल्कि पूरा विश्व एक सुखी, समृद्ध और शांतिपूर्ण स्थान बन सकता है।

इस प्रकार, सहकारिता और वसुधैव कुटुंबकम केवल विचार नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवनशैली हैं, जो मानवता को एक नई दिशा प्रदान कर सकती हैं।

महेशकुमार सद्गुरु कात्रजकर
तिस्का शाखा,
क्षे.का., गोवा

काव्य सृजन

अनहद की ओर

शून्य के गर्भ में जो स्पंदन है-
वही तो प्रथम स्वर है,
जिससे उत्पन्न हुई यह सृष्टि का अनल,
और वही, मौन में लय होती जाती है,
जैसे नदी अंततः सागर को पहचान लेती है।

मनुष्य एक क्षणभंगुर दीपशिखा,
जो अनंत अंधकार में
अपने ही धुएँ से संवाद करता है।
वह खोजता है प्रकाश, पर नहीं जानता कि प्रकाश
कभी बाहर नहीं जलता।
वह भीतर का दीप है,
जो चित्त की निस्तब्धता में
अपने आप प्रज्वलित हो उठता है।

संसार एक निरंतर भ्रम-जाल,
जहाँ हर अनुभव
मायावी तंतु-सा लिपटा है
अनगिनत इच्छाओं के जाल में।

वह देखता है, पर पहचानता नहीं,
वह जीता है, पर जागता नहीं।

कभी किसी प्रहर,
जब समय अपनी गति भूल जाता है,
और वाणी मौन की शरण ले लेती है -
तब आत्मा के आकाश में
एक अनहद नाद उठता है।

वह नाद न किसी शास्त्र में लिखा है,
न किसी देवालय में गूँजता है।
वह तो वहाँ है,
जहाँ "मैं" का बोध
अपनी सीमाएँ त्याग देता है।

तीर्थंकर सूतधर
खुदरा ऋण शाखा
क्षे.का., गुवाहाटी

नए अनुभवों को अपनाने का साहस

मनुष्य का जीवन निरंतर परिवर्तन और सीखने की प्रक्रिया से भरा हुआ है। फिर भी अक्सर हम अपने आरामदायक दायरे, जिसे कम्फर्ट ज़ोन कहा जाता है, में ही रहना पसंद करते हैं। नई चीज़ें करने का विचार हमें कभी-कभी डराता है—कहीं असफल न हो जाएँ, लोग क्या कहेंगे, या हम यह कर पाएँगे या नहीं। लेकिन सच्चाई यह है कि जीवन में नई चीज़ें आज़माना हमारे मानसिक विकास, आत्मविश्वास और आत्म-पहचान के लिए अत्यंत आवश्यक है। जब हम नए अनुभवों के लिए स्वयं को तैयार करते हैं, तब हम अपने भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानते हैं और जीवन को अधिक अर्थपूर्ण बनाते हैं।

सबसे पहले यह समझना ज़रूरी है कि नई चीज़ें आज़माने से हमारे मन और मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जब हम किसी नए कार्य में हाथ आज़माते हैं—चाहे वह कोई नई भाषा सीखना हो, कोई खेल खेलना हो, किसी नई जगह की यात्रा करना हो या कोई नया कौशल सीखना हो—तब हमारा मस्तिष्क सक्रिय रूप से काम करने लगता है। यह मानसिक गतिविधि हमारे दिमाग को तेज़, लचीला और रचनात्मक बनाती है। एक ही प्रकार की दिनचर्या में बंधे रहने से मन कभी-कभी थका हुआ सा महसूस करने लगता है, लेकिन जब हम नई गतिविधियों में भाग लेते हैं तो मन में उत्साह और ताजगी का संचार होता है।

नई चीज़ें आज़माने का एक बड़ा लाभ यह भी है कि यह हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाता है। शुरुआत में किसी नए काम को लेकर डर और संकोच होना स्वाभाविक है। हमें लगता है कि हम शायद इसे सही तरीके से नहीं कर पाएँगे। परंतु जैसे-जैसे हम प्रयास करते हैं और धीरे-धीरे उसमें प्रगति करते हैं, वैसे-वैसे हमारे अंदर विश्वास पैदा होने लगता है कि हम कठिन परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं। यह आत्मविश्वास केवल उस एक काम तक सीमित नहीं रहता, बल्कि हमारे जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देने लगता है। हम अधिक साहसी बनते हैं और चुनौतियों को अवसर के रूप में देखने लगते हैं।

नई चीज़ें करने की प्रक्रिया हमें अपने बारे में बहुत कुछ सिखाती है। अक्सर हम स्वयं को उतना नहीं जानते जितना हम समझते हैं। लेकिन जब हम किसी नए अनुभव से गुजरते हैं, तब हमें अपनी क्षमताओं, रुचियों और सीमाओं का पता चलता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति सोचता है कि उसे सार्वजनिक रूप से बोलना पसंद नहीं है, लेकिन जब वह किसी छोटे कार्यक्रम में बोलने का अवसर लेता है, तब उसे महसूस होता है कि वह इस क्षेत्र में अच्छा कर सकता है। इसी तरह कई लोग नई गतिविधियों के माध्यम से अपनी छिपी हुई प्रतिभाओं को खोज लेते हैं—जैसे चित्रकला, लेखन, संगीत, या नेतृत्व क्षमता।

हालाँकि नई चीज़ों की शुरुआत हमेशा आसान नहीं होती। अक्सर हमारे मन में डर और संदेह होता है। हमें लगता है कि यदि हम असफल हो गए तो लोग हमारा मज़ाक उड़ाएँगे या हमें निराशा का सामना करना पड़ेगा। यही डर हमें आगे बढ़ने से रोकता है। इसके साथ-साथ आलस्य और आराम की आदत भी एक बड़ी बाधा बन जाती है। जब हम अपने परिचित वातावरण में रहते हैं, तो हमें सुरक्षित महसूस होता है। इसलिए हम जोखिम लेने से बचते हैं। लेकिन यदि हम जीवन में वास्तविक प्रगति करना चाहते हैं, तो हमें इस मानसिकता से बाहर निकलना होगा।

ऐसे समय में प्रेरणा की आवश्यकता होती है। प्रेरणा हमें आगे बढ़ने का साहस देती है। यह प्रेरणा हमें कई स्रोतों से मिल सकती है—किसी सफल व्यक्ति की कहानी से, किसी मित्र या परिवार के सदस्य के प्रोत्साहन से, या अपने ही भीतर उठने वाली उस आवाज़ से जो कहती है कि हमें कुछ नया करना चाहिए। जब हम दूसरों को चुनौतियों का सामना करते और सफलता प्राप्त करते देखते हैं, तब हमें भी विश्वास होता है कि हम अपने डर को पार कर सकते हैं।

जब हम अंततः अपने डर को पीछे छोड़कर कोई नया कदम उठाते हैं, तो अनुभव अत्यंत प्रेरणादायक होता है। भले ही शुरुआत में हम पूरी तरह सफल न हों, फिर भी उस प्रयास से हमें जो सीख मिलती है, वह अमूल्य होती है। हम समझते हैं कि असफलता वास्तव में अंत नहीं, बल्कि सीखने का एक चरण है। यह सोच हमें और भी अधिक साहसी बनाती है। धीरे-धीरे हम चुनौतियों को जीवन का स्वाभाविक हिस्सा मानने लगते हैं और उनसे घबराने के बजाय उन्हें स्वीकार करने लगते हैं।

नई चीज़ें आज़माने से हमारे जीवन में आशा और उत्साह भी बढ़ता है। जब हम किसी नए अनुभव से गुजरते हैं और उसमें कुछ सकारात्मक परिणाम देखते हैं, तो हमारे मन में यह विश्वास पैदा होता है कि भविष्य में भी कई अच्छे अवसर हमारा इंतज़ार कर रहे हैं। यह आशा हमें निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। जीवन की कठिन परिस्थितियों में भी हम सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखते हैं, क्योंकि हमें पता होता है कि हर नया प्रयास एक नई संभावना लेकर आता है।

इसके अलावा, नई चीज़ें करने से हमारा दृष्टिकोण व्यापक होता है। हम विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और जीवनशैलियों को समझने लगते हैं। इससे हमारी सोच अधिक खुली और सहनशील बनती है। हम दूसरों

के अनुभवों और विचारों का सम्मान करना सीखते हैं। यह गुण न केवल हमारे व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज में सामंजस्य और समझ को भी बढ़ावा देता है।

आज के तेज़ी से बदलते हुए युग में नई चीज़ें सीखना और अपनाना और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। तकनीक, शिक्षा, और कार्यक्षेत्र लगातार बदल रहे हैं। यदि हम केवल पुराने तरीकों से ही चिपके रहेंगे, तो हम पीछे रह सकते हैं। इसलिए हमें अपने भीतर जिज्ञासा और सीखने की इच्छा बनाए रखनी चाहिए। हर नया अनुभव हमें अधिक सक्षम और आत्मनिर्भर बनाता है।

अंततः कहा जा सकता है कि जीवन में नई चीज़ें आज़माना केवल मनोरंजन या उत्साह का साधन नहीं है, बल्कि यह हमारे मानसिक और व्यक्तिगत विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमें डर और आलस्य से बाहर निकलने का साहस देता है, हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाता है और हमें अपने वास्तविक स्वरूप से परिचित कराता है। शुरुआत में भले ही रास्ता कठिन लगे, लेकिन जब हम प्रेरणा के साथ पहला कदम उठाते हैं, तो आगे का मार्ग धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगता है।

इसलिए हमें अपने जीवन में समय-समय पर नए अनुभवों को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। चाहे वह कोई छोटा बदलाव ही क्यों न हो—जैसे कोई नया शौक शुरू करना, किसी नए स्थान की यात्रा करना, या किसी नई कला को सीखना—हर नया कदम हमें एक बेहतर और अधिक जागरूक व्यक्ति बनने की दिशा में ले जाता है। जब हम जीवन को इस खुले और साहसी दृष्टिकोण से जीते हैं, तब हमें न केवल सफलता मिलती है, बल्कि संतोष, आशा और निरंतर प्रेरणा भी प्राप्त होती है। यही जीवन की सच्ची समृद्धि है।

रोजी गुप्ता
क्षे.का., दिल्ली- उत्तर

काव्य सृजन

मैं भी राष्ट्र कर्मयोगी...

कठिन है, जटिल है
असंभव सा प्रतीत है,
दुर्गम है, अदम्य है,
अजेय सा विदित है

सेवा का प्रण लिया
निष्ठा का वचन दिया
समर्पण को ढाल बना
मैंने कर्मयोगी का संकल्प लिया।

मेरा सेवा ही धर्म है,
निष्ठा ही कर्म है,
हर असंभव की राह में
मेरी आस्था ही परिश्रम है।

मैं संकल्पित हूँ, मैं दृढ़ हूँ,
है कठिन पथ, पर अग्रसर हूँ,
समाज निर्माण का अंश हूँ,
मैं राष्ट्रीय कर्मयोगी से मग्न हूँ।

अंतर्मन में ठान लिया है
समृद्ध भारत का लक्ष्य लिया है
घनघोर स्याह सी रात है
पर उजियारा अपने साथ है

2047 का सूरज लाना है,
विकसित भारत बनाना है।
जहाँ जन-जन उजियारा हो,
हर हृदय में भारत प्यारा हो।

है कठिन पथ पर अडिग हूँ
कर्म-निष्ठा से मंजीत हूँ
मैं अदम्य हूँ, अजेय हूँ,
हां ! मैं भी राष्ट्रीय कर्मयोगी हूँ...

प्रवीण कुमार
क्षे.का., भागलपुर

वैष्णो देवी और हिमाचल प्रदेश के शक्ति पीठों की यात्रा

बचपन से ही गर्मियां मेरे लिए हमेशा खास रही हैं क्योंकि ये सिर्फ़ छुट्टियां नहीं होतीं, बल्कि वह समय होता है जब हम अपने परिवार के साथ जगहों की सैर करके यादें बनाते हैं। मैं भी अपने बच्चों को ऐसा ही अनुभव देना चाहती थी और मुझे उन्हें अलग-अलग जगहों पर घूमते और एक्सप्लोर करते देखकर खुशी होती है।

इस बार गर्मी की छुट्टियों में, हमारा परिवार वैष्णो देवी की आध्यात्मिक यात्रा पर गया, यह एक चुनौतीपूर्ण चढ़ाई और बहुत शांति से भरी यात्रा थी।

दिन 1 और 2 - हमने हैदराबाद से जम्मू के लिए फ़्लाइट ली। जम्मू पहुँचने के बाद हम सड़क के रास्ते कटरा के लिए निकले और वहाँ से रात 8 बजे वैष्णो देवी मंदिर के लिए ट्रेक पर निकले, जो 12 किलोमीटर का था। हालाँकि पैदल चलना मुश्किल था, लेकिन हम खुद को उत्साहित रखने के लिए "जय माता दी" का जप करके इसे कर पाए। हम रास्ते में शेल्टर में आराम करके यह सात घंटे का ट्रेक पूरा कर पाए। सुबह 3:30 बजे पहुँचना और माता के दर्शन करना, मंदिर की दिव्य आभा, सच में दिल को छू लेने वाला और विनम्र करने वाला अनुभव था। यह पूरी तरह से गहरी शांति और आध्यात्मिक जुड़ाव का एक क्षण था। माता वैष्णो देवी की दिव्य कृपा अपने साथ लेकर हम सुबह करीब 10 बजे चॉपर से कटरा वापस आए, जिसमें बस कुछ ही मिनट (5-7 मिनट) लगे। हमने टूर शुरू होने से पहले ही चॉपर बुक कर लिया था और इसका एक तरफ का किराया लगभग ₹6000 प्रति व्यक्ति था। चॉपर का अनुभव बहुत अच्छा था, दिल में डर था क्योंकि मुझे और मेरे छोटे बेटे को पायलट के पास में आगे की सीट पर बैठाया गया था। हमने दिन में आराम किया और कुछ लोकल शॉपिंग की, जिसमें कटरा में मशहूर ड्राई फ्रूट्स और कांसे की चीज़ें खरीदीं ।

दिन 3 और 4- हम हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला के लिए निकले और माता चामुंडा देवी के दर्शन किए, जिन्हें चामुंडा के नाम से भी जाना जाता है। यह शक्ति पीठों में से एक है और दूर-दूर से भक्त माता चामुंडा का आशीर्वाद लेने के लिए इस मंदिर में आते हैं। धर्मशाला में एक बहुत बड़ा क्रिकेट स्टेडियम है जहाँ कई इंटरनेशनल क्रिकेट मैच खेले गए हैं। धर्मशाला के दूसरे आकर्षण नामग्याल लामा मठ और भागसू नाग मंदिर थे। नामग्याल मठ सबसे मशहूर मठ है जो 14 वें दलाई लामा के रहने और पूजा की मुख्य जगह है। भागसू नाग मंदिर (भागसूनाथ मंदिर) हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में मैकलियोडगंज के पास एक पुराना और मशहूर हिंदू मंदिर है जो भगवान शिव और नाग देवता, भागसू नाग को समर्पित है। यह मंदिर अपनी बारीक नक्काशी, एक कुदरती मीठे पानी के कुंड के लिए मशहूर है जिसमें औषधीय गुण माने जाते हैं, जहाँ यात्री नहा सकते हैं। इस पवित्र कुंड में कई यात्री पवित्र डुबकी लगाते हैं। मंदिर में सितंबर में सालाना मेला लगता है जिसमें दुनिया भर से लोग आते हैं।

दिन 5- फिर हम चैतनपुरानी-ज्वाला जी/माता कांगड़ा जी (श्री बज्रेश्वरी देवी) गए, जो धर्मशाला से 95 किलोमीटर दूर है और सड़क से साढ़े चार घंटे का सफ़र था। यह हमारे परिवार के लिए लंबे समय से इंतज़ार किए जा रहे मंदिरों में से एक था। मंदिर की अपनी हमेशा जलने वाली नीली लपटों की वजह से दुनिया भर में अहमियत है, यह कुदरती आग मंदिर में कुछ जगहों पर बिना किसी फ्यूल के लगातार जलती रहती है। यह हिमाचल प्रदेश में रोशनी की देवी को समर्पित एक पवित्र हिंदू मंदिर है। इसे रोशनी के रूप में देवी को दिखाने वाले 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह

वह जगह है जहाँ देवी सती की जीभ धरती पर गिरी थी और नौ लपटों के नाम देवियों के अलग-अलग रूपों के नाम पर रखे गए हैं। साथ ही यह भी माना जाता है कि यह पांडवों का बनाया हुआ पहला मंदिर है। इस मंदिर की एक कहानी है जहाँ मुगल बादशाह अकबर ने पानी की नहरों और लोहे की मेज से आग बुझाने की कोशिश की थी, लेकिन नाकाम रहे। कहानी के मुताबिक, अकबर ने देवी को एक सोने का छाता दिया जो तांबे का हो गया, जिससे देवी की शक्ति के प्रति उनका सम्मान दिखा। यह छाता आज भी भक्तों के लिए मंदिर में रखा है। एक और कहानी के मुताबिक, अकबर ने मंदिर को तोड़ने का आदेश दिया और अपनी नाकाम कोशिशों के बाद उस जगह को बड़े-बड़े पत्थरों से ढक दिया, लेकिन बाद में वह भक्त बन गया। यह मंदिर अलौकिक घटनाओं का एक उदाहरण है। मंदिर में उन नौ ज्वालाओं के दर्शन करते समय सबसे आकर्षक और हैरान करने वाली बात उबलते पानी में लपट थी। आमतौर पर पानी डालने से लौ बुझ जाती है लेकिन यहां पानी डालने से लौ तेज़ी से जलती है। यह देखकर हमारे रोंगटे खड़े हो गए। मंदिर में लौ का वैज्ञानिक कारण धरती की पपड़ी में दरारों से ज़मीन के नीचे के जलाशयों से प्राकृतिक गैस, शायद मीथेन का लगातार रिसना माना जाता है। लेकिन अभी तक कोई भी वैज्ञानिक इस बात की पुष्टि नहीं कर सका है।

हम कुदरत की इस रचना से अपनी नज़रें नहीं हटा पा रहे थे और ऐसी खूबसूरती देखना अविश्वसनीय था और इस मंदिर में आकर सच में धन्य महसूस कर रहे थे।

दिन 6- अगले दिन हम हिमाचल प्रदेश में नैना देवी के लिए निकले। देवी का सुंदर मंदिर एक पहाड़ी के ऊपर है। इसलिए आप या तो सीढ़ियाँ चढ़ना शुरू कर सकते हैं या मंदिर तक पहुँचने के लिए रोपवे की सवारी का आनंद ले सकते हैं। हमने रोपवे की सवारी की और पहाड़ी पर चढ़कर सुंदर दृश्य देखना अद्‌त था। 51 शक्ति पीठों में से एक के रूप में पूजनीय, इस पवित्र जगह के बारे में माना जाता है कि यह वह जगह है जहाँ सती की आँखें गिरी थीं। दर्शन के बाद हम तीन घंटे की ड्राइव करके चिंतपूर्णी मंदिर गए, जिसे छिन्नमस्तिका शक्तिपीठ के नाम से भी जाना जाता है। गर्भगृह में माता चिंतपूर्णी विराजमान हैं, जो भक्तों का सारा तनाव और चिंताएँ दूर कर देती हैं। सच्चे मन से कोई भी इच्छा माँगें और वह जल्द ही पूरी होगी।

दिन 7- हम अमृतसर के लिए निकले। शाम 4 बजे अमृतसर पहुँचने पर हमने होटल में चेक-इन किया और फिर दर्शन के लिए गोल्डन टेम्पल गए। यह बहुत ही सुहानी शाम थी, मंदिर का नज़ारा और आस-पास की खूबसूरत लाइटिंग आँखों को सुकून देने वाली थी। मंदिर में अच्छा समय बिताने के बाद हम होटल वापस आ गए।

कुल मिलाकर, यह ज़िंदगी भर याद रहने वाला एक शानदार अनुभव था, जिसमें भौतिक चुनौतियों के साथ आध्यात्मिक लाभ भी थे और यह सिर्फ़ भौतिक सफ़र से कहीं ज़्यादा एक गहरी छाप छोड़ गया।

जी. राधिका
अं.का., विजयवाडा

काव्य सृजन

पिता

पूछा बेटे ने एक दिन बाप से,
घर भी न खरीदा गया आप से।
जीवन भर दर-दर की ठोकर ही खाऊंगा,
वसीयत में किराए का मकान ही पाऊंगा।

रहा मौन फिर कुछ बोला,
पिता ने दिल के रंज को खोला।
शर्मिंदा हूं कि कुछ बचा न सका,
पढ़ाया तो खूब पर सिखा न सका।

तेरे मन में एक सवाल होता,
तो फिर ये मलाल न होता।
तेरे खर्चे कैसे मैनेज करता हूं,
लाखों की फीस कैसे भरता हूं ।

सिक्कों से नोट जुटाना होता हैं,
क्या घर चलाना होता हैं।
ये एहसास तुम आप करोगे,
जब तुम भी बाप बनोगे।

घर लिया था अपनी कमाई से,
बिक गया बेटा तेरी पढ़ाई से।
मेरा भी एक गढ़ होता,
अगर तू अनपढ़ होता...
अगर तू अनपढ़ होता...

कुन्दन पाटीदार
मानव संसाधन विभाग
कें.का., मुंबई

विनोद कुमार शुक्ल -
अद्भुत साहित्यिक व्यक्तित्व

इस भागदौड़ भरे जीवन में हम अक्सर लोगों के भीतर छिपे मनुष्य को देखने का समय प्रायः नहीं निकाल पाते। ऐसे समय में साहित्य हमें ठहरने की शक्ति देता है। वह हमें मनुष्य को संवेदनशील प्राणी के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करता है। हिंदी साहित्य में विनोद कुमार शुक्ल ऐसे ही रचनाकार रहे हैं, जिनका संपूर्ण साहित्य मनुष्य की साधारण दिनचर्या, मौन भावनाओं और छोटे-छोटे अनुभवों से निर्मित है। वे जीवन के उन क्षणों को शब्द देते हैं, जिन पर सामान्यतः हमारा ध्यान नहीं जाता, किंतु वास्तव में हमारे अस्तित्व की जड़ में बसे होते हैं।

प्रारंभिक जीवन : सादगी से उपजा व्यक्तित्व

विनोद कुमार शुक्ल का जन्म 1 जनवरी 1937 को छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव में हुआ। यह वह भूभाग है, जहाँ जीवन आज भी प्रकृति, श्रम और आपसी संबंधों से गहराई से जुड़ा हुआ है। शायद यही कारण है कि उनकी रचनाओं में बनावटीपन नहीं, बल्कि मिट्टी की सोंधी गंध महसूस होती है। उन्होंने कृषि विज्ञान में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की और अध्यापन कार्य से जुड़े। शिक्षक के रूप में उनका जीवन अत्यंत अनुशासित और शांत रहा। न उन्होंने कभी स्वयं को बड़े लेखक के रूप में प्रस्तुत किया, न ही साहित्यिक जगत की चमक-दमक में शामिल होने की आकांक्षा दिखाई। उनका जीवन अपने आप में यह सिखाता है कि बड़प्पन दिखावे में नहीं, आचरण में होता है।

साहित्यिक यात्रा की शुरुआत

विनोद कुमार शुक्ल ने साहित्य की शुरुआत कविता से की। उनका पहला कविता-संग्रह “लगभग जय हिंद” अपने समय में एक अलग पहचान लेकर आया। यह कविता संग्रह नारेबाजी से दूर, राष्ट्र और समाज को मनुष्य की आंतरिक संवेदनाओं से जोड़ता है। उनकी कविताएँ ऊँचे मंच से नहीं बोली जातीं, बल्कि पाठक के पास आकर धीरे से बैठ जाती हैं। वे पाठक से संवाद नहीं करतीं, बल्कि उसके भीतर उतरकर मौन हो जाती हैं।

बाद में उन्होंने कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में प्रवेश किया। यहाँ भी उनकी भाषा और दृष्टि वही रही—सरल, सीधी और अत्यंत मानवीय।

“नौकर की कमीज” : आम आदमी का असाधारण दस्तावेज

उनका पहला उपन्यास “नौकर की कमीज” हिंदी साहित्य में एक मील का पत्थर माना जाता है। यह उपन्यास एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जो नौकरी करता है, सीमित साधनों में जीता है, और फिर भी अपने भीतर सपनों और संवेदनाओं का एक संसार सँजोए हुए है। यह उपन्यास पढ़ते हुए बार-बार ऐसा लगता है कि यह किसी एक पात्र की कहानी नहीं, बल्कि हम जैसे असंख्य कर्मचारियों की सामूहिक कथा है। बैंक, बीमा, डाक, शिक्षा—हर क्षेत्र में काम करने वाला कर्मचारी इस उपन्यास में स्वयं को देख सकता है। यह रचना हमें सिखाती है कि गरिमा पद में नहीं, कर्म में होती है—एक ऐसा संदेश जो बैंकिंग सेवा के मूल मूल्यों से भी गहराई से जुड़ा है।

लेखन की विशिष्टता : मौन का साहित्य

विनोद कुमार शुक्ल के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है उसका मौन।

उनकी रचनाओं में तीव्र घटनाएँ नहीं होतीं, बड़े संघर्ष नहीं होते, परंतु जीवन का सत्य हर पंक्ति में उपस्थित रहता है।

उनका प्रसिद्ध उपन्यास “दीवार में एक खिड़की रहती थी”, जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया, इसी मौन का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह रचना बताती है कि जीवन की सबसे ठोस दीवारों में भी कहीं न कहीं एक छोटी-सी खिड़की अवश्य होती है—जहाँ से आशा, रोशनी और विश्वास भीतर प्रवेश कर सकते हैं।

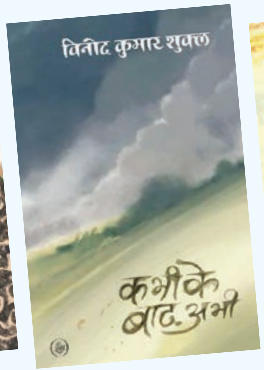

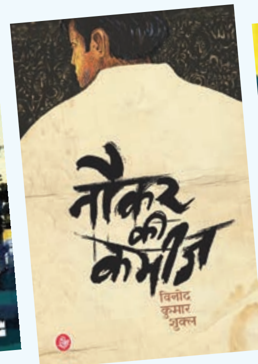

आज के प्रतिस्पर्धात्मक समय में, जब हम लक्ष्य-पूर्ति के दबाव में रहते हैं, यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक है।

साधारण जीवन का गहन दर्शन

विनोद कुमार शुक्ल ने अपने साहित्य में कभी असाधारण नायक नहीं गढ़े। उनके पात्र वही हैं, जिन्हें हम प्रतिदिन अपने आसपास देखते हैं—शिक्षक, कर्मचारी, गृहस्थ, बच्चे, बुज़ुर्ग।

उनकी दृष्टि में जीवन का सौंदर्य बड़े आयोजनों में नहीं, बल्कि छोटी-छोटी घटनाओं में छिपा होता है—जैसे किसी का चुपचाप बैठना, किसी का बिना कारण मुस्कुरा देना, या किसी का बिना कुछ कहे बहुत कुछ कह जाना।

बैंकिंग सेवा में कार्य करते हुए, जब हम ग्राहकों की समस्याएँ सुनते हैं, तब यदि हम इस दृष्टि को अपनाएँ, तो हमारा कार्य केवल औपचारिक न रहकर मानवीय बन सकता है।

भाषा : सरल, शुद्ध और आत्मीय

विनोद कुमार शुक्ल की भाषा न तो अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ है, न ही कृत्रिम रूप से बोलचाल की। उनकी भाषा सहज, शुद्ध और आत्मीय है। यह भाषा पाठक को डराती नहीं, बल्कि अपनापन देती है।

राजभाषा के क्षेत्र में कार्यरत हम अधिकारियों के लिए यह एक बड़ा उदाहरण है कि हिंदी को प्रभावी बनाने के लिए उसे कठिन नहीं, बल्कि संवेदनशील और सजीव बनाना आवश्यक है।

सम्मान और उपलब्धियाँ

विनोद कुमार शुक्ल को साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार जैसे सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उनके साहित्य को सराहा गया। किंतु इन सभी सम्मानों के बावजूद उनका जीवन अत्यंत साधारण रहा। यह गुण हमें बैंकिंग सेवा में भी प्रेरणा देता है—जहाँ पद और सम्मान से अधिक महत्व संस्था के प्रति निष्ठा और सेवा-भाव का होता है। बैंक कर्मचारियों के लिए प्रासंगिकता

विनोद कुमार शुक्ल का साहित्य हमें सिखाता है कि—

हर व्यक्ति अपने भीतर एक कहानी लेकर चलता है

"मौन भी संवाद का एक सशक्त माध्यम है

सादगी कमजोरी नहीं, बल्कि शक्ति है

कार्य चाहे कितना भी सामान्य क्यों न लगे, उसे ईमानदारी से करना ही सबसे बड़ा योगदान है"

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया जैसे विशाल सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक में, जहाँ हम समाज के हर वर्ग से जुड़े हैं, यह दृष्टि हमारे कार्य को और अधिक मानवीय बना सकती है।

विनोद कुमार शुक्ल केवल एक साहित्यकार नहीं थे, वे जीवन के शांत दार्शनिक थे। उनका लेखन हमें यह सिखाता है कि बिना ऊँची आवाज़ के भी गहरी बात कही जा सकती है, और बिना दिखावे के भी सार्थक जीवन जिया जा सकता है।

आज के तेज़ और प्रतिस्पर्धात्मक समय में उनका साहित्य हमें ठहरने, देखने और भीतर झाँकने की प्रेरणा देता है। यही उनकी सबसे बड़ी विरासत है—और यही कारण है कि वे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रासंगिक बने रहेंगे।

अभिषेक चौबे
क्षे.का., पुणे-मेट्रो

समझौता

"शर्मा जी, किन ख़यालों में खोए हुए हो, आज घर नहीं जाना है क्या", राजेश की आवाज सुनकर आंख खुली तो देखा घड़ी की सुईयां 6:30 बजाने को बेकरार थीं। पता नहीं कितने देर से मेरे मन में एक अजीब द्वंद की स्थिति बनी हुई थी। एक तरफ जहां मां-बाबूजी की दी हुई शिक्षा ईमानदारी के पथ पर अडिग रहने को प्रोत्साहित कर रही थी तो वहीं दूसरी तरफ समय द्वारा रचित मजबूरियां वक्त के साथ समझौता करने को मजबूर कर रहीं थी।

लोक निर्माण विभाग (पीडबल्यूडी) में मैंने अपनी नौकरी के 32 साल कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी से निभाए। जेई के पद पर कार्य करते हुए, मैंने जिले की बहुत सी सड़कों का निर्माण कराया और बड़े-बड़े कार्य किए कभी किसी भी कांट्रेक्टर से एक कप चाय तक नहीं पी। विभाग ही नहीं मुख्य निदेशालय तक मेरी इमानदारी के चर्चे थे। विभाग के अन्य जेई भी थे जिनके पास बड़ी-बड़ी कारें, अलीशान घर और खर्चीला रहन सहन था लेकिन मैं आज भी 15 साल पुरानी बाइक पर ही ऑफिस आता हूँ। कभी-कभी तो ऑफिस के अन्य साथी कर्मचारी भी मेरी इस तंग हालत और टूटी हुई बाइक का मजाक उड़ाया। लेकिन मैंने कभी इमानदारी का दामन ना छोड़ा।

बेटी की शादी की बात एक बड़े घर में चल रही थी, लड़का फौज में अफसर था लेकिन लड़के के पिता ने शादी के नाम पर 20 लाख नगदी की डिमांड की थी। मैंने जिंदगी की पूरी कमाई बच्चों की अच्छी पढ़ाई लिखाई और परवरिश में खर्च कर दी, इसलिए 20 लाख का जुगाड़ करना मुश्किल काम था, लेकिन रिश्ता अच्छे परिवार से था इसलिए मेरा साहस टूट रहा था। अभी कुछ दिन पहले ही मेरे जूनियर स्टाफ ने बेटी की शादी में 20 लाख की गाड़ी दी थी। बेटी के भविष्य को सोचते हुए अब कुछ अजीबोगरीब ख्याल मन में आने लगे थे। मन अनायास ही सोचने को मजबूर हो रहा था कि -

"इस ईमानदारी ने आखिर मुझे दिया क्या है? वह जो भ्रष्टाचार में लिप्त हैं, जीवन के सब सुख और ऐशो-आराम ले रहे हैं। लेकिन क्या मैं ईमानदार रहते हुए अपनी बेटी की शादी एक अच्छे घर में भी नहीं कर सकता?"

मन में अजीब बवंडर सा माहौल था, और कहीं न कहीं दिमाग का सुषुप्त भाग मुझे अपनी राह बदलने को आक्रोशित कर रहा था। अभी दो दिन पहले ही एक नया कॉन्टैक्टर टेंडर दिलवाने को लेकर 25 लाख की घूस का ऑफर देकर गया था। ईमानदारी की केंचुली में लिपटा हुआ मैं उस दिन तो कांट्रेक्टर पर बहुत भड़का और उसकी फाइल उठाकर कचरे में फेंक दी। लेकिन उसका विजिटिंग कार्ड अभी भी टेबल के कोने में पड़ा है। रह-रह कर उसकी बात दिमाग में आ रही थी और मन कर रहा था कि मेरे पास भी एक मौका आया है, जिससे मैं अपनी बिटिया का भविष्य सुरक्षित कर सकता हूँ। एक बार बस बिटिया की शादी कर दूँ, क्यों नहीं बस एक बार अपने उसूलों को ताक पर रख दूँ, क्यों नहीं एक बार माता-पिता की शिक्षा को बस कुछ लम्हों के लिए भूल जाऊं और अपनी बिटिया की शादी धूमधाम से करवा दूँ। लेकिन कहीं न कहीं दिमाग का उर्जित भाग यह भी चेता रहा था कि रिश्वत लेकर अपने कर्तव्य के साथ खिलवाड़ उचित नहीं होगा। किसी कांट्रेक्टर को रिश्वत लेकर काम देना निश्चित ही उचित नहीं होगा क्योंकि कल को उसके द्वारा बनाई गई रोड देश के काम आएगी। "यह तो देश के प्रति गद्दारी होगी"

फिर सोचा 'विभाग के अन्य सहकर्मी, अन्य कर्मचारी यही तो कर रहे हैं, फिर क्यों ना एक बार मैं भी अपनी बिटिया के लिए यह आहुती दे दूँ, क्यों ना एक बार अपनी ज़िद अपनी अकड़ कुछ देर के लिए थाम लूं, मैंने निश्चय कर लिया था, बिटिया के भविष्य के लिए एक बार, बस एक बार मुझे इसका सहारा लेना ही पड़ेगा, और क्यों ना लूं। विभाग में हर तरफ तो भ्रष्टाचार व्याप्त है एक मेरे ईमानदार रहने से क्या होगा। मुझे भी तो अपने काम करवाने के लिए कहीं ना कहीं रिश्वत देने की आवश्यकता पड़ती रहती है। हर तरफ तो भ्रष्टाचार व्याप्त है, तो मैं क्यों नहीं। मैंने निश्चय कर लिया था, कि 'मैं इस रिश्ते को ऐसे नहीं जाने दूंगा, कल सुबह ही फोन लगाकर उस कांट्रेक्टर को बुला लूंगा और सारी बात कर लूंगा' बस यही सोचते सोचते न जाने कब नींद आ गई।

सुबह देर से आंख खुली। रोज की तरह फ्रेश होकर चाय पीते हुए अखबार उठाया, तो चौंक पड़ा। विभाग के ही गुप्ता जी को रातों-रात सीबीआई ने रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया था। विस्तार से खबर पढ़ी तो पता लगा सीबीआई ने फर्जी कांट्रेक्टर के नाम से जाल बिछाया था और गुप्ता जी उसके झांसे में आ गए। कांट्रेक्टर का नाम पढ़ा तो पैरों तले जमीन खिसक गई "अरे यह तो वही कांट्रेक्टर है जिससे मैं आज सौदा करने जा रहा था।" गुप्ता जी को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया गया और रिश्वत लेने के जुर्म में जेल में डाल दिया गया।

"मैं यह क्या करने जा रहा था, वह तो वक्त अच्छा था जो बच गया"। इस कृत्य से गुप्ता जी का पूरा कैरियर ही चौपट हो गया। उनका परिवार कहीं मुंह दिखाने के लायक नहीं रहा। मुझे अपनी सोच पर शर्म आ रही थी, मैं यह क्या करने जा रहा था। परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, परंतु गलत रास्ते पर चल कर आप कुछ दिन की सुख समृद्धि तो पा सकते हैं, लेकिन इस राह पर पग-पग पर खतरे हैं, तथा एक ऐसी दुर्घटना आपका सम्पूर्ण करियर को नष्ट कर परिवार की इज्ज़त को खाक में मिला सकती है। ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वक्त और उस दिन की इमानदारी ने बचा लिया। मैंने कसम खाई कि जिंदगी में फिर कभी ऐसा ख्याल गलती से भी दिमाग में नहीं लाऊंगा। माता-पिता ने जो शिक्षा दी है वही मूल्य मैं अपने बच्चों में देखना चाहता हूं। मैं नहीं चाहता कि मेरा कोई बच्चा इस तरह अपना जीवन बर्बाद करे।

मैं चाय पीते हुए इन्हीं ख्यालों में खोया हुआ था, तभी दरवाजे पर हुई दस्तक ने वास्तविकता में

लाकर खड़ा किया। दरवाजा खोल कर देखा तो लड़के का परिवार गुलदस्ता लिए खड़े था। अकस्मात् आने का कारण समझ नहीं आ रहा था, तो संकुचाते हुए पूछा । लड़के की माताजी ने कहा हम अपनी बहु को शगुन देने आये हैं ।

'लेकिन मैं आपकी शर्त पूरी करने में असमर्थ हूँ' मैंने सफाई दी

जिसपर लड़के के पिता जी ने मिठाई का डब्बा निकालते हुए मेरा मुँह मीठा करा कर विस्तार से बताया । मेरा दूसरा बेटा सीबीआई में है और वह चाहता था कि हम एक अच्छे, चरित्रवान व् ईमानदार परिवार के साथ रिश्ता जोड़ें। इसलिए ही आपके विभाग में सीबीआई द्वारा जांच कराई गयी थी । आपके विभाग में ठेकेदार सीबीआई द्वारा ही भेजा गया था ।

मुझे मेरी ईमानदारी की कीमत वसूल होती दिखाई दे रही थी। खुद की सोच और अपने उसूलों पर गौरवान्वित महसूस कर रहा था ।

भ्रष्टाचार वास्तव में एक बहुत बड़ी बीमारी है और हमें अपनी अप्रतिम महत्वाकांक्षाओं से बाहर निकल कर अपनी आय के अनुसार ही अपना व्यय बजट बनाने की जरूरत है। कम समय में ज्यादा महत्त्वकांक्षएं रखने वाले लोग अक्सर पथभ्रष्ट होकर भ्रष्टाचार का दामन थाम लेते हैं। लेकिन हमें सत्य के पथ पर अडिग रहने की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार तभी मिटेगा जब हमारे ख्यालों में भी कभी भ्रष्टाचार न आए, भ्रष्टाचार तब मिटेगा जब सुविधा लेने के लिए सुविधा शुल्क के तौर पर रिश्वत देने वाले यह प्रथा बंद करेंगे। वस्तुत: यह मेरी 34 वर्षों की सत्यनिष्ठा ही थी जिससे मैं इस बुराई के दामन में समाये जाने से निकल कर आत्मसंतुष्टी व खुशहाली की ओर आगे बढ़ पाया।

रिश्वत लेने वाला तब तक कुछ मांग सकता है जब तक आप देने के लिए तैयार हैं जिस दिन आप भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज बुलंद करेंगे उस दिन रिश्वत मांगने वाला भी किसी बिल में जाकर छुप जाएगा, स्पष्ट है कि, यदि रिश्वत देने वाले न होंगे, तो रिश्वत लेने वाले भी न रहेंगे। इसलिए रिश्वत देने और लेने के खिलाफ मजबूत आवाज उठाने की जरूरत है ताकि हम भ्रष्टाचार मुक्त होकर एक बेहतर भारत बनाने की दिशा में मजबूत कदम रख सकें।

अभिषेक राज
क्षे.का., बड़ौदा

काव्य सृजन

ऋतुराज

मैं ऋतुराज हूँ, तुम्हारे खुशियों का राज हूँ
नाम वसंत खुशमिजाज़ हूँ।
न गम है न चिंता, जिधर चाहूँ उधर जाऊँ
रोके कोई न टोके कोई, तुझे क्या-क्या बतलाऊँ
तेरे द्वारे खड़ा पैगाम हूँ, मैं ऋतुराज हूँ
तेरी खुशियों का राज हूँ, नाम वसंत खुशमिजाज़ हूँ।
उठो जागो पास आओ, देखो फूलों की क्यारी
बलखाती फूलों की डाली, लाल गुलाबी नीली पीली
नई फूलों की हरियाली, सरसों की शान निराली
कभी पास बुलाती, कभी स्पर्श दे जाती
तेरी चाहतों का साज हूँ,
मैं ऋतुराज हूँ, तेरी खुशियों का राज हूँ
नाम वसंत खुशमिजाज़ हूँ।
बनकर स्वचन्द मुसाफिर, मैं अनवरत अथक चला
नदी मिले पर्वत मिले, सागर सुगम संगम मिले
स्नेह दिया प्यार मिले, यायावर घटा साथ मिले
बातें बढ़ी तारीफ मिली, मैं उलफत का प्याम हूँ
मैं ऋतुराज हूँ, तेरी खुशियों का राज हूँ
नाम वसंत खुशमिजाज़ हूँ।
रंगीन दिशा पोशाक सुनहरी, पहन के उतरे भौरें तितली
भौरा आया गीत सुनाया, तितली रानी हंसी उड़ाई
मंद हवा छिपकर मुस्काई, देखो कलियाँ ली अंगड़ाई
और तुम्हें क्या समझाऊँ, आशिकों का आशिक
मैं ऋतुराज हूँ, तेरी खुशियों का राज हूँ
नाम वसंत खुशमिजाज़ हूँ।

सोनम
क्षे.का.,धनबाद

मैडम जी से बेटी तक

शुक्रिया फुलरक

बैंकिंग की दुनिया में पोस्टिंग कई जगह होती है — शहर, कस्बे, मेट्रो। लेकिन कुछ पड़ाव ऐसे होते हैं जो आपको बदल देते हैं। मेरे लिए वह पड़ाव था फुलरक। न सिर्फ मेरी पहली ग्रामीण शाखा, बल्कि एक शाखा प्रबंधक के रूप में मेरा पहला कार्यकाल भी। यहाँ आने से पहले एक अजीब सी हलचल थी मन में — क्या होगा, कैसा होगा। पर जो हुआ, वो उम्मीद से कहीं ज़्यादा खूबसूरत था।

पहला सबक: घूंघट के पीछे की ताकत

शुरुआत में एक तरह का सांस्कृतिक झटका लगा। मैंने पहले कभी इतनी महिलाओं को एक साथ घूंघट में नहीं देखा था। पर जल्द ही यह धारणा टूट गई कि घूंघट यानी दायरे। यहाँ की औरतें घूंघट में रहकर भी खेतों में पसीना बहाती हैं, 'डांगरों' को संभालती हैं, और घर-बाहर के सारे काम बखूबी करती हैं। उन्होंने मुझे सिखाया मेहनत किसी बहाने की मोहताज नहीं होती। परंपराओं के बीच भी डटकर काम करना जानती हैं ये औरतें।

हरियाणा के लोगों की बोली भले ही थोड़ी कड़वी लगे, पर दिल के ये बड़े सच्चे और साफ हैं। यह फर्क मुझे यहाँ आकर ही समझ आया।

खाट पर ड्यू डिलिजेंस: असली बैंकिंग यही है

शहर में बैंकिंग 'एसी कैबिन' और फाइलों में होती है। यहाँ ड्यू डिलिजेंस ग्राहक के घर जाकर, उनकी खाट पर बैठकर होती है। शहर में शायद ₹50 लाख का कॉर्पोरेट लोन करके भी वह तसल्ली नहीं मिलती, जो यहाँ किसी ज़रूरतमंद के ₹50 हज़ार के डेब्ट स्वैप लोन से मिलती है। क्योंकि उस पैसे की ज़रूरत आप महसूस कर सकते हैं।

जब पीएम स्वनिधि के लाभार्थी सड़क पर मिलते ही हाथ जोड़ते हैं, तो लगता है हाँ, कुछ सार्थक किया। केसीसी लोन के लिए शहर में गौशाला जाना सिर्फ त्योहारों तक सीमित था, पर यहाँ तबेले-तबेले घूमना दिनचर्या बन गई। किसानों के साथ बैठकर उनके पशुओं और फसल की बातें करना यही तो जमीन से जुड़ना है।

चौपाल की मुख्य सीट: एक अहसास जो शब्दों से परे है

हरियाणा की मिट्टी में सम्मान देने का अपना ही अंदाज़ है। एक विज़िट के दौरान गाँव के एएसआई साहब बड़े मान से मुझे पूरे गाँव का दौरा करवाते रहे, और फिर मुझे गाँव की चौपाल पर ले गए। जहाँ गाँव के बुज़ुर्ग और अनुभवी लोग बैठते हैं वहाँ, अपनी उम्र से तिगुनी उम्र के दिग्गजों के बीच, मुझे मुख्य सीट पर बिठाया गया।

जब वे बड़े-बुज़ुर्ग गाँव की समस्याओं पर, विकास पर मेरी राय माँगते थे, तो उस पल मुझे अपनी नौकरी की गरिमा का गहरा एहसास हुआ। मैं वहाँ सिर्फ एक बैंक अधिकारी नहीं थी मैं एक संस्था का चेहरा थी, और इन लोगों ने उसे सच्चे मन से स्वीकारा था।

काम की गहराई: कई गाँव, कई ज़िंदगियाँ

फुलरक की हमारी शाखा का प्रभाव सिर्फ एक गाँव तक नहीं रहा। आस-पास के कई गाँवों में कैंप लगाए, एमएसएमई ऋणों के ज़रिये छोटे उद्यमियों को पंख दिए, सोलर पैनल लोन से घरों में रोशनी की नई राह खुली। बीएलबीसी की बैठकों में शामिल होना और एसएचजी (स्वयं सहायता समूह) की मीटिंग्स की अध्यक्षता करना — यह सिर्फ काम नहीं, उन महिलाओं के सशक्तिकरण का जीवंत अनुभव था।

और जब एकाउंट ओपनिंग कैम्पेन आया तो गाँव के पंडित जी और हमारे केसीसी ग्राहक खुद ही 5-5 खाते खुलवाने लेकर आ गए। उन्होंने इसे हमारा काम नहीं, अपना काम समझा। यही भरोसा एक शाखा प्रमुख की असली कमाई है।

इसी अपनेपन और जन-भागीदारी का नतीजा था कि एक विशेष कैंप में हमने एक ही दिन में 50 बचत खाते खोले — जबकि ग्रामीण शाखा के लिए निर्धारित लक्ष्य था मात्र 25। और यह सिर्फ आँकड़ा नहीं था हर खाता किसी परिवार का बैंकिंग से पहला नाता था। मिशन 2026 के तहत हमारी शाखा ने आवंटित लक्ष्य का 200% हासिल किया। क्षेत्रीय कार्यालय करनाल की ग्रामीण श्रेणी शाखा में हमें प्रथम स्थान मिला और क्षेत्र प्रमुख सर के हाथों उपलब्धि प्रमाण पत्र से नवाज़ा गया। पर उस दिन की सबसे बड़ी खुशी पुरस्कार नहीं था वो पल था जब मंच पर मेरे साथ हमारे कार्यालय

सहायक श्री अमित जी का भी नाम पुकारा गया। वे भावुक हो गए। और उनकी आँखें देखकर मैं समझ गई यह जीत किसी एक की नहीं थी। यह उन गाँव वालों की जीत थी जो खुद चलकर खाते खुलवाने आए, उस टीम की जीत थी जिसने हर कदम पर साथ दिया, और उस भरोसे की जीत थी जो फुलरक की माटी ने हम पर किया।

लस्सी, खरबूजा और वो अपनापन जिसका कोई मोल नहीं होता

यहाँ कोई टिफ़िन सर्विस नहीं थी पर ताज़ी लस्सी और घर के दूध की कभी कमी नहीं रही। विज़िट पर जाओ, और कोई ग्राहक यूँ ही अपने खेत से ताज़ा खरबूजा थमा देता है बिना किसी औपचारिकता के, बस दिल से। ग्राहकों के घर रुकने पर उन्होंने बिल्कुल अपनी बेटी की तरह मेरा ख्याल रखा।

मैंने यहाँ कन्या पूजन देखा, होली खेली, भंडारों में शामिल हुई, शादियों में गई। एसएचजी की महिलाएँ कब मेरी 'सखी' बन गईं पता ही नहीं चला। अब जाकर लगता है कि मैंने असली हरियाणा देखा और जिया है।

"मैडम जी, आप कहीं भी रहो — हमारे बच्चों की शादी में आना ही होगा। और अपनी शादी में हमें भी बुलाना!"

ऐसे वादे लेने वाले लोग सिर्फ ग्राहक नहीं — परिवार हैं।

और यही है असली हाइलाइट

जब मैं अपनी गाड़ी खुद चलाकर गाँव की गलियों से गुज़रती हूँ, तो वहाँ की छोटी-छोटी लड़कियाँ उम्मीद भरी नज़रों से देखती हैं। वे पास आकर कहती हैं — 'दीदी, हमें भी आपके जैसा बनना है। जब आप अपनी गाड़ी चलाकर आती हो न, बहुत अच्छा लगता है।' और फिर पूछती हैं — 'दीदी, हम भी यूनियन बैंक में कैसे आ सकते हैं?'

उन नन्हीं आँखों में जब आप खुद के लिए एक रोल मॉडल देखते हैं तो वह पल किसी भी ईनाम या मानदेय से कहीं बड़ा होता है। वह एहसास ही इस नौकरी की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

जिनके बिना यह सफर अधूरा था

यह कार्यकाल इतना सुगम और यादगार नहीं होता, अगर मेरे स्टाफ का अटूट सहयोग और यहाँ के लोगों का नि:स्वार्थ प्रेम न होता। हर चुनौती में हम एक टीम की तरह खड़े रहे। और शायद इसीलिए आज मेरे माता-पिता भी मुझसे दूर रहकर निश्चिंत हैं क्योंकि उन्हें पता है कि उनकी बेटी नेक दिल लोगों के बीच, सुरक्षित है।

मैं यहाँ से एक दिन विदा लूँगी — पर फुलरक मुझमें हमेशा जीवित रहेगा। शहर के औपचारिक “धन्यवाद/ 'थैंक यू' पर यहाँ के बुज़ुर्गों का सिर पर हाथ रखकर दिया गया आशीर्वाद — 'जीती रह बेटी' — हमेशा भारी पड़ेगा। इस नौकरी का शुक्रगुज़ार होना बनता है जिसने मुझे सिर्फ बैंकर नहीं, इन लोगों की 'अपनी मैडम जी', 'बेटी', और शायद किसी के लिए एक 'प्रेरणा' भी बनाया।

शुक्रिया फुलरक!

साक्षी सिंह
फुलरक शाखा,
क्षे.का., करनाल

काव्य सृजन

मैं खुद को फिर से पाने चला हूं

खुद को मैं वापस,
पाने लगा हूं,
कमियों को अपने,
अब मैं अपनाने लगा हूं,
खुद पे थोड़ा ज़्यादा,
मैं अब हक़ जताने लगा हूं,
खुद को अब मैं,
पूरी शिद्दत से अपनाने लगा हूं,
चाहने लगा हूं मैं खुद को जितना,
खुद के मैं उतने करीब आने लगा हूं।

क्यों ना आज,
खुद को चुन लूं,
कुछ बोल प्यार के,
खुद से सुन लूं,
यूहीं बस बैठे,
क्यों ना खुद को निहारूं मैं,
क्यों ना आज,
खुद कि नज़र उतारूं मैं।

मै खुद को फिर से,
पाने चला हूं,
खुशियों को अपने मैं,
अपनाने चला हूं,
ख्वाबों को अपने मैं,
हक़ीक़त बनाने चला हूं,
खुद पे थोड़ा प्यार मैं,
लुटाने चला हूं,
मैं खुद को फिर से,
पाने चला हूं

मनोज कुमार श्रीवास्तव
साहेबगंज शाखा
क्षे.का., गोरखपुर

एक अविस्मरणीय यात्रा

मुंबई आए मुझे पांच साल से ज्यादा हो गए हैं और पिछले ढाई सालों से मुंबई की जीवन रेखा कही जाने वाली "मुंबई लोकल" का लुत्फ उठा रहा हूं या ये कहूं कि "लोकल" अपने जुल्मों सितम से मेरा लुत्फ उठा रही है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

जुलाई 2025 में जब मुझे बैंक द्वारा दिया गया आवास मिला था तो मैं चेंबूर से घाटकोपर आ गया था। मुंबई लोकल की दृष्टि से देखें तो हार्बर लाइन से सेंट्रल लाइन पर पहुंच गया । हार्बर लाइन में भी भीड़ होती है लेकिन सेंट्रल लाइन का मतलब भीड़ नहीं, भगदड़ है। इस लाइन के कुछ-कुछ स्टेशन ऐसे हैं जहां ऑफिस आवर्स में मेरे जैसा इंसान न चढ़ सकता है, न उतर सकता है । इसके लिए दादर बदनाम है, कुर्ला बदनाम है मुझे भी पता था । लेकिन इस बात का जरा भी इल्म नहीं था कि...!

घाटकोपर में मेरा पहला दिन...सुबह थोड़ी दिक्कत के साथ मैं ऑफिस पहुंच गया । सेंट्रल लाइन ने पहले दिन ही अपना रंग दिखा दिया। स्टेशन से बाहर निकलते वक्त मेरी नज़र ट्रेन के इंजन पर पड़ी तो लगा जैसे वो मुस्कुरा रहा था। उस मुस्कुराहट में मुझे खुशी का नहीं थोड़ी क्रूरता का आभास हुआ ।

ऑफिस में काम करते-करते धीरे-धीरे उस इंजन को मैं भूल गया । शाम को मैंने छत्रपति शिवाजी स्टेशन से घाटकोपर की ट्रेन ली । क्योंकि लोकल वहीं से शुरू होती है तो बैठने के लिए जगह मिल गई । मन में ख्याल आया कि खामखां ये लाइन इतनी बदनाम है । इन्हीं ख्यालों के बीच ट्रेन अपनी गति से आगे बढ़ रही थी और शायद उससे भी तीव्र गति से उसके अंदर की भीड़ बढ़ने लगी थी ।

परेल स्टेशन पर चढ़ने वाले न जाने कितने लोगों के कदम जब मेरे डब्बे के फ्लोर से टकराए तो ऐसा लगा कि किसी अपराधी की तलाश में पुलिस की टुकड़ी ने धावा बोल दिया है। थोड़ी देर में डब्बा खचाखच भर चुका था और बाकी डब्बों का भी वही हाल रहा होगा। जैसे-जैसे गाड़ी घाटकोपर स्टेशन के नजदीक आ रही थी उतरने वालों की संख्या दरवाजे पर जमा होने लगी थी और मैं भी जैसे-तैसे उस संख्या को बढ़ाने, उस भीड़ में शामिल हो गया।

घाटकोपर के प्लेटफॉर्म का शुरुआती हिस्सा आ गया था, ट्रेन धीरे होने लगी और मैंने जो देखा वो अविस्मरणीय था । हर एक डब्बे के सामने प्लेटफॉर्म पर ट्रेन से बिल्कुल सटे हुए अनगिनत लोग खड़े थे...अनगिनत मतलब अनगिनत !

लोग चलती ट्रेन से उतरे जा रहे थे या यूं कहिए कि कूदे जा रहे थे । मुझे इस बात की बिल्कुल चिंता नहीं थी कि मैं कैसे उतरूंगा । दरअसल मैं उस समय एक अलग ही दुनिया में पहुंच चुका था ।

यहां बताना चाहूंगा मेरा बचपन से सपना था गाना गाने की कला में महारथ हासिल करना। खैर! उस दिन जब घाटकोपर स्टेशन पर अपार भीड़ को देखा तो मेरे दिमाग से कुछ देर के लिए उतरने का ख्याल गायब हो गया। मैं ट्रेन के दरवाजे पर पहुंचा तो उतने लोगों को सामने देखकर मुझे अपने बचपन का सपना साकार होता हुआ नज़र आया... लगा कि मैं कुछ पल के लिए बिना कुछ गाए एक बहुत बड़ा गायक बन गया हूं और सामने खड़ी जनता मुझे ही देखने, मुझे ही सुनने आई है। थोड़ी देर के लिए ही सही मैं खुद को एक सिंगर, एक परफॉर्मर समझने लगा। मन किया कि मैं अपने श्रोताओं के ऊपर छलांग लगा दूं और वो मुझे अपना हाथों से उठा ले और पूरा माहौल जोशनुमा हो जाए...जैसा कि हम कुछ सिनेमा में देख चुके हैं।

इन्हीं ख्यालों में खोया हुआ मैं लगभग उतर ही चुका था कि सामने से आने वाले मेरे काल्पनिक श्रोताओं ने जिन्होंने कुछ देर पहले मुझे सर आंखों पर बिठाया था, बिना कुछ पूछे बिना कुछ जाने धकेलते हुए फिर से चढ़ा दिया । पलक झपकते ही मैं इस दरवाजे से उस दरवाजे तक पहुंच गया। डूबता हुआ आदमी जैसे तिनके की तलाश करता है मैने भी पूरी कोशिश की, लेकिन नाकाम रहा ।

"मुंबई लोकल" घाटकोपर स्टेशन छोड़ चुकी थी और विक्रोली की तरफ़ भागी जा रही थी...और मुझे अचानक सुबह इंजन की क्रूर मुस्कुराहट थोड़ी और क्रूर लगने लगी थी ।

राजेश मिश्रा
कार्यनीति विभाग,
कें.का., मुंबई

तेज धूप और गर्मी के मौसम में सेहत

आज के समय में गर्मी का मौसम पहले की अपेक्षा से अधिक तीव्र और चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। तेज धूप, बढ़ता तापमान और गर्म हवाएं (लू) हमारे शरीर की कार्यक्षमता को प्रभावित करती हैं। विशेष रूप से जो लोग रोजमर्रा के कामकाज, कार्यालय, बैंक या बाहर आने-जाने में व्यस्त रहते हैं, उनके लिए इस मौसम में स्वास्थ्य का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। थोड़ी-सी लापरवाही से थकान, चक्कर, सिरदर्द, त्वचा संबंधी समस्याएं और यहां तक कि लू लगने जैसी गंभीर स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। इसलिए जरूरी है कि हम कुछ सरल, व्यावहारिक और रोजमर्रा में अपनाए जा सकने वाले उपायों को अपनी आदत बना लें, ताकि हम पूरे दिन स्वस्थ, ऊर्जावान और सुरक्षित रह सकें।

तेज धूप में होने वाली सामान्य समस्याएं

- **अत्यधिक पसीना और पानी की कमी (डिहाइड्रेशन)**

  तेज गर्मी में शरीर से अधिक मात्रा में पसीना निकलता है, जिससे पानी और जरूरी लवण कम हो जाते हैं। इससे कमजोरी, चक्कर और सुस्ती महसूस हो सकती है।

- **लू लगना (हीट स्ट्रोक)**

  जब शरीर का तापमान बहुत बढ़ जाता है और उसे नियंत्रित नहीं कर पाता, तो लू लग सकती है। यह एक गंभीर स्थिति होती है, जिसमें तुरंत ध्यान देना जरूरी है।

- **त्वचा और आंखों पर असर**

  `लगातार धूप में रहने से त्वचा झुलस सकती है, घमौरियां हो सकती हैं और आंखों में जलन या सिरदर्द की समस्या हो सकती है।

- **थकान और कार्यक्षमता में कमी**

  गर्मी में शरीर जल्दी थक जाता है, जिससे काम करने की ऊर्जा और मनोबल दोनों प्रभावित होते हैं।

तेज धूप में सेहत का ख्याल रखने के सरल और प्रभावी उपाय

- **पानी पीने की आदत को प्राथमिकता बनाएं**

  दिनभर में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में बार-बार पानी पीना चाहिए, भले ही प्यास न लगे। घर से निकलते समय पानी की बोतल साथ रखना एक छोटी-सी लेकिन बहुत महत्वपूर्ण आदत है। नींबू पानी, छाछ, नारियल पानी या साधारण नमक-चीनी का घोल शरीर को तुरंत ऊर्जा और ठंडक देता है।

- **घर से निकलने से पहले छोटी-सी तैयारी जरूर करें**

  तेज धूप में बाहर जाने से पहले सिर को ढकना, छाता या टोपी का उपयोग करना और हल्के रंग के सूती कपड़े पहनना बहुत लाभकारी होता है। यह तैयारी हमें पूरे दिन धूप के दुष्प्रभाव से बचाने में मदद करती है।

- **खान-पान में हल्के और ताजे भोजन को प्राथमिकता दें**

  गर्मी में भारी, तैलीय और बहुत मसालेदार भोजन से बचना चाहिए।

  इसके बजाय हरी सब्जियां, मौसमी फल जैसे तरबूज, खीरा और दही का सेवन शरीर को ठंडा और ऊर्जावान बनाए रखता है।

- **समय का सही प्रबंधन करें**

  दोपहर 12 बजे से 3 बजे के बीच धूप सबसे तेज होती है, इसलिए यदि संभव हो तो इस समय बाहर जाने से बचना चाहिए। जरूरी बाहरी काम सुबह या शाम के समय करना अधिक सुरक्षित और आरामदायक होता है।

- **शरीर को ठंडा और स्वच्छ बनाए रखें**

  दिन में एक या दो बार स्नान करना, हल्के कपड़े पहनना और साफ-सफाई का ध्यान रखना गर्मी से राहत देता है। घर में पंखा या कूलर का उपयोग करें । अधिक देर तक धूप में रहने के बाद तुरंत ठंडे स्थान पर विश्राम करें। इसके साथ ही पर्याप्त आराम और नींद लेना भी उतना ही जरूरी है।

यदि लू लगने के लक्षण दिखाई दें तो तुरंत क्या करें ?

यदि किसी व्यक्ति को तेज धूप के कारण अचानक चक्कर, तेज सिरदर्द, उल्टी, अत्यधिक पसीना या बेहोशी महसूस हो, तो तुरंत उसे छायादार और ठंडी जगह पर आराम देना चाहिए। उसे धीरे-धीरे ठंडा पानी या ओआरएस का घोल पिलाना चाहिए और शरीर पर ठंडे पानी की पट्टी रखनी चाहिए।

यदि स्थिति गंभीर लगे, तो बिना देर किए डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

- **विशेष सावधानियां (बच्चों और बुजुर्गों के लिए)**

  बच्चों और बुजुर्गों को ज्यादा समय तक धूप में न रहने दें। उन्हें समय-समय पर पानी और तरल पदार्थ देते रहें। बाहर जाने पर सिर को ढकना अनिवार्य करें।

तेज धूप और गर्मी के मौसम में सेहत का ध्यान रखना कोई कठिन कार्य नहीं है, बल्कि यह हमारी रोजमर्रा की छोटी-छोटी आदतों पर निर्भर करता है। यदि हम नियमित रूप से पर्याप्त पानी पिएं, हल्का और संतुलित भोजन करें, धूप से बचाव के साधनों का उपयोग करें और अपने शरीर को आराम दें, तो हम गर्मी के मौसम को भी सुरक्षित और सहज तरीके से बिता सकते हैं।

अंततः, स्वस्थ शरीर ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। इसलिए "सावधानी और सही आदतें" ही गर्मी में सेहत की सबसे बड़ी सुरक्षा हैं।

मंगेश टिकार
क्षे.का., अमरावती

कलम का सिपाही:

युगप्रवर्तक साहित्यकार की महागाथा

अमृत राय द्वारा रचित हंस प्रकाशन से प्रकाशित यह पुस्तक 'कलम का सिपाही' मात्र एक जीवनी नहीं, बल्कि हिंदी साहित्य के 'उपन्यास सम्राट' मुंशी प्रेमचंद के जीवन, संघर्ष और उनके वैचारिक विकास का एक जीवंत दस्तावेज है। 1963 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित यह कृति जीवनी-लेखन के क्षेत्र में एक मील का पत्थर मानी जाती है।

मैं सोचता था कि महान शायर अकबर इलाहाबादी ने यह शेर किसके लिए कहा होगा?

"न तीर निकालो न तलवार निकालो,

जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।"

फिर जब मैंने मुंशीजी के जीवन चरित पर आधारित यह पुस्तक पढ़ी तो मुझे समझ आया कि लेखक ने इस पुस्तक का नाम `कलम का सिपाही' क्यों रखा।

पुस्तक के मर्म- स्थल के रूप में निम्नलिखित बिंदुओं को देखा जा सकता है।

पृष्ठभूमि और संरचना

अमृत राय, जो स्वयं प्रेमचंद के पुत्र थे, ने इस जीवनी को लिखने के लिए केवल पारिवारिक स्मृतियों का सहारा नहीं लिया, बल्कि व्यापक शोध, पत्रों और प्रेमचंद के समकालीनों के साक्ष्यों को आधार बनाया। पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता इसकी प्रामाणिकता और तटस्थता है। लेखक ने अपने पिता के महिमामंडन के बजाय एक 'इंसान' और एक 'लेखक' के द्वंद्व को बारीकी से उकेरा है। कुछ-कुछ ठीक वैसे ही जैसे की मुंशी प्रेमचंद की कृति गोदान में होरी अपने सभी गुणों अवगुणों के साथ नायक के रूप में रचना में अपनी पूरी ताकत के साथ मौजूद है।

अभावों से उपजा रचनाकार

जीवनी की शुरुआत प्रेमचंद (धनपत राय) के

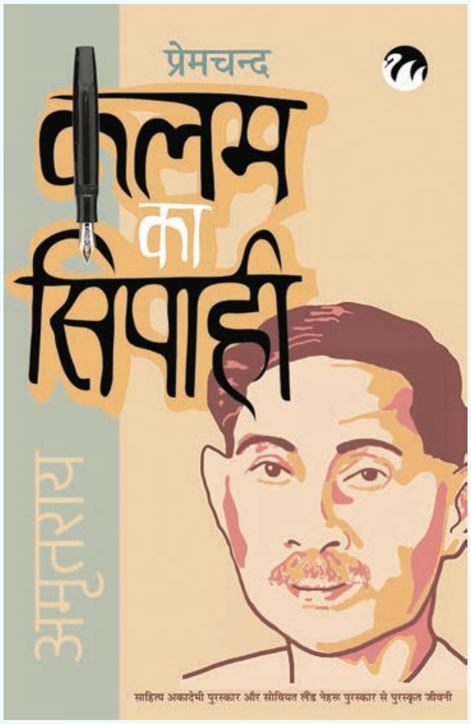

बचपन के संघर्षों से होती है। लमही के उस साधारण बालक के जीवन में सौतेली माँ का व्यवहार, गरीबी और ट्यूशन पढ़ाकर अपनी शिक्षा पूरी करने की जद्दोजहद को अमृत राय ने अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। ये अभाव ही थे जिन्होंने प्रेमचंद को आम आदमी की पीड़ा समझने की दृष्टि दी।

सामाजिक और राजनीतिक चेतना

प्रेमचंद का काल भारतीय पुनर्जागरण और स्वतंत्रता संग्राम का काल था। 'कलम का सिपाही' में दिखाया गया है कि कैसे एक सरकारी मुलाजिम अपनी 'सोजे-वतन' जैसी कहानियों के माध्यम से देशप्रेम की अलख जगाता है और अंततः गांधीजी के आह्वान पर सरकारी नौकरी को तिलांजलि दे देता है।

लेखक ने प्रेमचंद के वैचारिक संक्रमण को बखूबी दर्शाया है: • आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर बढ़ते कदम; • आर्य समाज के प्रभाव से लेकर साम्यवादी विचारधारा के प्रति उनके झुकाव का विश्लेषण; • दलितों, किसानों और महिलाओं की दयनीय स्थिति पर उनकी गहरी संवेदनशीलता; • बढ़ता हिंदु-मुस्लिम संघर्ष और समकालीन राजनीति।

लेखन प्रक्रिया और आर्थिक संघर्ष

पुस्तक का एक बड़ा हिस्सा प्रेमचंद के 'साहित्यिक विलाप' और संघर्ष पर केंद्रित है। 'हंस' और 'जागरण' जैसी पत्रिकाओं को चलाने के लिए उन्होंने अपनी गाढ़ी कमाई और स्वास्थ्य दोनों दांव पर लगा दिए। अमृत राय लिखते हैं कि प्रेमचंद ने कभी भी 'बाजार' के लिए नहीं लिखा; उन्होंने हमेशा 'सत्य' और 'शिव' के लिए लिखा।

"वह कलम से लड़ने वाला सिपाही था, जिसने गरीबी को अपना स्थायी पता बना लिया था, लेकिन स्वाभिमान से कभी समझौता नहीं किया।" विषम आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने प्रेस को बंद नहीं होने दिया ताकि उससे कुछ लोगों की रोजी-रोटी चलती रहे और राष्ट्रीय आंदोलन में सहयोग मिलता रहे।

शिल्प और भाषा शैली

अमृत राय की भाषा शैली अत्यंत सधी हुई और प्रवाहमयी है। उन्होंने जीवनी को एक कहानी की तरह बुना है, जिससे पाठक प्रेमचंद के जीवन के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाता है। पुस्तक में प्रेमचंद के पत्रों का उद्धरण देना सोने पर सुहागा जैसा है, क्योंकि वे पाठक को सीधे प्रेमचंद के अंतर्मन में झांकने का अवसर देते हैं।

'कलम का सिपाही' इतनी जरूरी पुस्तक क्यों है?

यह जीवनी हमें बताती है कि:

1. **साहित्यकार का दायित्व:** एक लेखक का धर्म समाज के सोए हुए विवेक को जगाना है।

2. **यथार्थ का चित्रण:** 'गोदान' की रचना के पीछे का जो मानसिक संघर्ष और ग्रामीण परिवेश की समझ थी, वह इस जीवनी में स्पष्ट होती है।
3. **सादगी:** इतने बड़े साहित्यकार होने के बावजूद प्रेमचंद का जीवन अत्यंत साधारण रहा, जो आज के चकाचौंध वाले दौर में दुर्लभ है।
4. यदि पुस्तक को ध्यान से पढ़ें तो हम पाएंगे कि मुंशी जी के कथा -साहित्य के कई पात्र उनके अपने जीवन से आते हैं। उदाहरणार्थ : अपने जीवन की परेशानियों को लेकर उन्होंने एक बार मुंशी दयानारायण निगम को एक पत्र में लिखा "हमारा काम तो केवल खेलना है– खूब दिल लगाकर खेलना– खूब जी– तोड़ खेलना, अपने को हार से इस तरह बचाना मानों हम दोनों लोकों की संपत्ति खो बैठेंगे। किन्तु हारने के पश्चात् – पटखनी खाने के बाद, धूल झाड़ खड़े हो जाना चाहिए और फिर ताल ठोंक कर विरोधी से कहना चाहिए कि एक बार फिर खेलेंगे। यही प्रतिध्वनि आगे चलकर उनके उपन्यास "रंगभूमि" के नायक "सूरदास" के चरित्र में सुनाई देती है।

पुस्तक समीक्षा इस पुस्तक के रस का आभास मात्र है। संपूर्ण रसास्वादन के लिए इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिए। सारांशतः हम यह कह सकते हैं कि कलम का सिपाही' हिंदी साहित्य की एक अनिवार्य कृति है। यह हमें सिखाती है कि महान साहित्य केवल प्रतिभा से नहीं, बल्कि अडिग धैर्य, अटूट ईमानदारी और जनता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता से पैदा होता है। अमृत राय ने इस ग्रंथ के माध्यम से न केवल अपने पिता को श्रद्धांजलि दी है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रकाश स्तंभ तैयार किया है जो यह बताता है कि एक सच्चे लेखक की राह कैसी होती है।

यह पुस्तक हर उस पाठक के लिए पठनीय है जो भारतीय समाज, साहित्य और एक संघर्षशील व्यक्तित्व के अंतर्संबंधों को समझना चाहता है।

'कलम का सिपाही' पर प्रमुख आलोचकों ने इसे हिंदी की सर्वश्रेष्ठ जीवनी माना है।

लगभग सभी आलोचक इस बात पर सहमत हैं कि यह जीवनी भावुकता के बजाय तथ्यों पर आधारित है। इसमें प्रेमचंद की आर्थिक तंगी, लेखन के प्रति जिद और उनके सरल स्वभाव को बिना किसी लाग-लपेट के प्रस्तुत किया गया है।

शैलेन्द्र कुमार
क्षे.का., दिल्ली-उत्तर

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को डीएफएस से विशेष श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार

वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के अंतर्गत राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बेहतर ढंग से लागू करने तथा तकनीकी नवोन्मेषी के उत्कृष्ट उपयोग के लिए, वित्तीय सेवाएं विभाग के नियंत्रणाधीन सभी संगठनों में से यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने विशेष श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। दि: 10.04.2026 को उदयपुर में आयोजित कार्यक्रम में श्री चन्द्रदीप कुमार झा, सांख्यिकीय सलाहकार, वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के कर-कमलों से उक्त सम्मान श्री अजय कुमार, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, जयपुर ने प्राप्त किया।

दि: 10.04.2026 को उदयपुर में आयोजित कार्यक्रम में वित्तीय वर्ष 2025-26 में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में किए गए प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय प्रयास के लिए श्री विवेकानन्द, सहायक महाप्रबंधक-राभा को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलनों में यूनियन बैंक के विभिन्न कार्यालयों तथा नराकास संयोजक कार्यालयों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2024 25 के लिए राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार किए गए हैं। दिनांक 20.01.2026 को इंदौर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में आयोजित सम्मेलन में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री बंडी संजय कुमार तथा इंदौर सम्मेलन में माननीय सांसद श्री शंकर लालवानी के कर कमलों से अं. का., भोपाल हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री राजीव कुमार झा, अं. प्र., भोपाल एवं श्री अनुराग कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.); क्षे. का., नेल्लूर हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री बंडारू श्याम प्रसाद, क्षे. प्र., नेल्लूर एवं श्री जितेन्द्र गुप्ता, वरिष्ठ प्रबंधक, (रा.भा.); नराकास, कोच्चि हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सेन पुरकल, सहायक महाप्रबंधक, अं. का., एर्णाकुलम तथा सुश्री बिनु टी. एस., वरिष्ठ प्रबंधक, (रा.भा.); नराकास, जबलपुर हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री समीर कुमार, क्षे. प्र., जबलपुर एवं अध्यक्ष, नराकास, जबलपुर; नराकास, श्रीकाकुलम हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री पैडि राजा, क्षे. प्र., श्रीकाकुलम एवं अध्यक्ष, नराकास तथा श्री बिजय कुमार चौधरी, प्रबंधक (रा.भा.) ;

दिनांक 20.02.2026 को अगरतला में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री बंडी संजय कुमार के कर कमलों से क्षे. का., जोधपुर हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री धीरज शर्मा, क्षे. प्र., जोधपुर एवं श्री विकास तिवाड़ी, वरिष्ठ प्रबंधक, (रा.भा.); क्षे. का., बरेली हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री बृजेश कुमार तिवारी, क्षे. प्र., बरेली एवं श्री राधा रमन शर्मा, प्रबंधक, (रा.भा.)। इस अवसर पर राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई और दृष्टि दिव्यांगों को एआई संचालित चश्मे भी वितरित किये गए।

अंचल कार्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, नेल्लूर

नराकास, कोच्ची

नराकास, जबलपुर

नराकास, श्रीकाकुलम

क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली

राजभाषा प्रदर्शनी

राजभाषा पुरस्कार/ समाचार

नराकास, बरेली द्वारा वर्ष 2025 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 14.02.2026 को डॉ. छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक(का.), क्षे. का. का.(उत्तर-2) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री प्रेम प्रकाश उपाध्याय, उप क्षेत्र प्रमुख तथा श्री राधा रमन शर्मा, प्रबंधक (रा.भा.)।

नराकास, बड़ौदा द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 23.01.2026 को श्री प्रमोद सांगोले, सहायक निदेशक(का.), क्षे.का.का.(पश्चिम), मुंबई से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री आशीष सुवालका, क्षेत्र प्रमुख तथा सुश्री उपासना सिरसैया, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.)।

नराकास, समस्तीपुर द्वारा वर्ष 2025 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, समस्तीपुर को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 09.01.2026 को डॉ विचित्रसेन गुप्त , उप निदेशक(का.), क्षे. का. का.(कोलकाता) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख ।

नराकास, मोगा द्वारा वर्ष 2025 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना की मोगा शाखा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 16.01.2026 को श्री चिरंजीव सिंह, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अमित कुमार झा, प्रबंधक (रा.भा.)।

नराकास, नोएडा द्वारा वर्ष 2025 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, गाजियाबाद की नोएडा सेक्टर-62 शाखा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 10.02.2026 को श्री अनुराग त्रिपाठी, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री प्रदीप कुमार दत्ता, शाखा प्रमुख तथा श्री विशाल दीक्षित, प्रबंधक(रा.भा.) ।

नराकास, उदयपुर द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 06.03.2026 को श्री हरिप्रसाद मीना, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री मुकेश कुमार मीना, उप क्षेत्र प्रमुख तथा श्री दीपक कुमार वर्मा, प्रबंधक(रा.भा.)।

नराकास, तिरुचिरापल्ली द्वारा वर्ष 2025 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुचिरापल्ली को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 29.01.2026 को श्री निर्मल कुमार दुबे, उप निदेशक(का.) क्षे. का. का.(दक्षिण-पश्चिम), कोच्चि एवं श्री बालक राम नेगी, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री ए. मुरलिधर, उप क्षेत्र प्रमुख, तथा श्री जनार्दन कुमार, सहायक प्रबंधक(रा.भा.)

नराकास, ठाणे द्वारा वर्ष 2025 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई-ठाणे को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 17.02.2026 को श्री विभोर अग्रवाल, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अमित कुमार भाटिया, क्षेत्र प्रमुख, मुंबई-ठाणे तथा श्री शिवाजी बांबेरे, प्रबंधक।

नराकास, सेलम द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, सेलम को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 28.01.2026 को श्री पन्नालाल, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री एम. एन. मंजुनाथ, उप क्षेत्र प्रमुख तथा श्री आशीष, सहायक प्रबंधक(रा.भा.)।

नराकास, फतेहगढ़ साहिब जी द्वारा वर्ष 2025 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना की फतेहगढ़ साहिब शाखा को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 21.01.2026 को सुश्री सविता, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सारांश रावत, शाखा प्रमुख।

दिनांक 08.01.2026 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक(का.), क्षे. का. का.(दक्षिण) द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, हासन का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

दिनांक 14.01.2026 को डॉ. छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक(का.), क्षे. का. का.(उत्तर-2) द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

दिनांक 13.02.2026 को श्री हरीश सिंह चौहान, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का.(पश्चिम) द्वारा सीबीडी बेलापुर शाखा का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

दिनांक 20.02.2026 को अंचल कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा कार्यपालकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन श्री कल्याण वर्मा, अंचल प्रमुख, बेंगलूरु द्वारा किया गया। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में डॉ. एस. एन. सिंह, निदेशक (सेवानिवृत्त), भारत सरकार, राजभाषा विभाग, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली उपस्थित रहे।

दिनांक 23.02.2026 को अंचल कार्यालय, भोपाल द्वारा नराकास, भोपाल के तत्वावधान में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया, इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, उप निदेशक(का.), क्षे.का.का.(मध्य), भोपाल उपस्थित रहे।

दिनांक 23.03.2026 को अंचल कार्यालय, जयपुर द्वारा कार्यपालकों हेतु ‘आत्मनिर्भर भारत: हिंदी और भारतीय भाषाओं की भूमिका’ विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अतिथि वक्ता के रूप में श्री अमित आजाद, कवि एवं गीतकार को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर श्री अजय कुमार, अंचल प्रमुख एवं श्री इश्तियाक अरशद, उप अंचल प्रमुख प्रतिभागियों के साथ।

दिनांक 09.01.2026 को अंचल कार्यालय, पुणे द्वारा “सूचना प्रोद्यौगिकी का मानव व्यवहार पर प्रभाव” विषय पर कार्यपालकों हेतु हिंदी में तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. आनंद उपाध्याय, उप प्रधानाचार्य एवं महाप्रबंधक, कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, भारतीय रिज़र्व बैंक, पुणे तथा श्री विपिन शुक्ला, अंचल प्रमुख इस कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों के साथ।

दिनांक 21.02.2026 को डॉ एच.टी. वासप्पा, अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में अंचल कार्यालय, विशाखपट्टणम द्वारा अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में “अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस: महत्व और उद्देश्य” विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 21.02.2026 को अंचल कार्यालय, पुणे द्वारा अर्धवार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन श्री विपिन शुक्ला, अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया।

नराकास, कर्नूल की 37वीं अर्ध-वार्षिक बैठक दिनांक 12.02.2026 को श्री पी नरसिम्हा राव, अध्यक्ष, नराकास, कर्नूल व क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में आयोजित की गई। श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (दक्षिण), बेंगलूरु, इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित रहे।

दिनांक 09.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, श्रीकाकुलम द्वारा नराकास, श्रीकाकुलम के तत्वावधान में तकनीकी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दिनांक 13.02.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, रीवा द्वारा नराकास, रीवा के तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्‌घाटन श्री अजय खरे, अध्यक्ष, नराकास एवं क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया।

दिनाकं 03.02.2026 को नराकास, रामनगर के सदस्यों हेतु आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्‌घाटन श्री मोहन कुमार, अध्यक्ष, नराकास एवं एलडीम द्वारा किया गया।

दिनांक 09.01.2026 को केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम एवं आर्ष साहित्य परिषद द्वारा केरल राज्य के माननीय राज्यपाल राजेन्द्र विश्वानाथ अरलेकर की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित बहुभाषा भारती राष्ट्रीय सम्मान समारोह में श्री नरेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख दीप प्रज्जवलन करते हुए। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ करने के प्रयत्न में अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम एवं क्षेत्रीय कार्यालय तिरुवनंतपुरम को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

दिनांक 23.01. 2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु-दक्षिण द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ श्री आनंद नायक, उप क्षेत्र प्रमुख।

दिनांक 10.02.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दिनांक 06.02.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । समापन सत्र में श्री विनोदी सूर्यवंशी, उप क्षेत्र प्रमुख ने प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

दिनांक 10.02.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, तृश्शूर में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

केंद्रीय कार्यालय के तत्वावधान में
यूबीकेसी तथा विभिन्न ज़ेडएलसी में आयोजित दो दिवसीय
कंप्यूटर आधारित हिंदी कार्यशाला

दिनांक 16.01.2026 से 17.01.2026 स्थान – यूबीकेसी

दिनांक 12.01.2026 से 13.01.2026 स्थान – गुरुग्राम

दिनांक 12.01.2026 से 13.01.2026 स्थान – भुवनेश्वर

दिनांक 11.01.2026 से 12.01.2026 स्थान – भोपाल

दिनांक 16.01.2026 से 17.01.2026 स्थान – हैदराबाद

दिनांक 12.01.2026 से 13.01.2026 स्थान – लखनऊ

दिनांक 16.01.2026 से 17.01.2026 स्थान – मंगलूरु

दिनांक 12.01.2026 से 13.01.2026 स्थान – मुंबई

आपकी नज़र में

बैंक की तिमाही हिन्दी गृह पत्रिका "यूनियन सृजन" का सितंबर अंक, जो राजभाषा विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ है, हिंदी भाषा के संवर्धन और प्रसार की दिशा में एक सराहनीय पहल है। यह अंक न केवल राजभाषा हिंदी के महत्व को रेखांकित करता है, बल्कि बैंक के कर्मचारियों में हिंदी के प्रति जागरूकता और आत्मीयता भी बढ़ाता है।

पत्रिका की सामग्री विविधतापूर्ण और संतुलित है। इसमें राजभाषा नीति, उसके अनुपालन, तथा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने से संबंधित लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक हैं। साथ ही, रचनात्मक लेखन, कविता और अनुभव आधारित लेख पाठकों को जोड़कर रखते हैं।

विशेषांक में प्रस्तुत लेखों की भाषा सरल, प्रभावी और पठनीय है, जिससे सभी स्तर के कर्मचारी आसानी से जुड़ पाते हैं। संपादन और प्रस्तुतीकरण भी आकर्षक एवं सुव्यवस्थित है, जो पत्रिका की गुणवत्ता को और बढ़ाता है।

इसके अतिरिक्त, बैंक की विभिन्न शाखाओं और कर्मचारियों की सहभागिता इस अंक को और अधिक जीवंत बनाती है। यह प्रयास संगठन में एक सकारात्मक और रचनात्मक वातावरण को प्रोत्साहित करता है।

अजय कुमार
अंचल प्रमुख, जयपुर

"यूनियन सृजन" (अक्तूबर–दिसंबर 2025) विशेषांक एक अत्यंत उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक पत्रिका के रूप में प्रस्तुत हुआ है। यह अंक भौगोलिक उपदर्शन (जीआई टैग) जैसे महत्वपूर्ण और समकालीन विषय पर केंद्रित है, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक, कृषि एवं शिल्प परंपराओं को प्रभावी ढंग से उजागर करता है। इस पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरल, सहज और प्रभावशाली हिंदी भाषा है, जिसके माध्यम से जटिल विषयों को भी आम पाठकों के लिए समझना आसान हो जाता है। संपादकीय लेखों में जीआई टैग की अवधारणा, उसका महत्व, पंजीकरण प्रक्रिया तथा आर्थिक और सामाजिक प्रभावों को अत्यंत व्यवस्थित और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है।

पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न लेख न केवल जानकारी प्रदान करते हैं, बल्कि पाठकों को प्रेरित भी करते हैं कि वे अपने देश की परंपराओं, कारीगरी और स्थानीय उत्पादों के महत्व को समझें और उनका सम्मान करें। इसमें कृषि, एमएसएमई, महिला सशक्तिकरण, ई-कॉमर्स तथा पर्यटन जैसे विविध पहलुओं को समाहित कर विषय को बहुआयामी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। विशेष रूप से यह सराहनीय है कि पत्रिका में जीआई उत्पादों के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने, कारीगरों और किसानों को आत्मनिर्भर बनाने तथा वैश्विक बाजार में भारत की पहचान को मजबूत करने पर जोर दिया गया है। साथ ही, डिजिटल बैंकिंग, साइबर सुरक्षा और वित्तीय समावेशन जैसे आधुनिक विषयों को भी इसमें प्रभावी ढंग से जोड़ा गया है। समग्र रूप से, "यूनियन सृजन" का यह अंक ज्ञान, संस्कृति और आर्थिक दृष्टि का सुंदर संगम है। यह न केवल पठनीय और संग्रहणीय है, बल्कि पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी और प्रेरणादायक भी सिद्ध होता है। संपादकीय मंडल एवं सभी योगदानकर्ताओं का यह प्रयास निस्संदेह प्रशंसनीय है।

एम रवींद्र बाबु
अंचल प्रमुख, हैदराबाद

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, लखनऊ अंचल की ओर से समस्त पाठकों, रचनाकारों एवं बैंक परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ। 'यूनियन सृजन' के अक्टूबर-दिसंबर 2025 जी.आई. उत्पाद विशेषांक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है। यह अंक भारतीय संस्कृति, परंपरा, हस्तकला, कृषि उत्पादों तथा स्थानीय प्रतिभा की समृद्ध विरासत को सुंदर रूप में प्रस्तुत करता है।

भारत विविधताओं का देश है और प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट पहचान, कला-कौशल तथा उत्पादों के लिए जाना जाता है। जी.आई. उत्पाद केवल वस्तुएँ नहीं, बल्कि हमारे इतिहास, परिश्रम, परंपरा और स्थानीय अस्मिता के प्रतीक हैं। इस विशेषांक में देश के विभिन्न राज्यों के प्रसिद्ध जी.आई. उत्पादों का समावेश न केवल ज्ञानवर्धक है, बल्कि "वोकल फॉर लोकल" और "आत्मनिर्भर भारत" की भावना को भी सशक्त करता है।

'यूनियन सृजन' सदैव रचनात्मकता, नवाचार और ज्ञानवर्धन का प्रभावी मंच रहा है। यह पत्रिका बैंक परिवार की प्रतिभाओं को अभिव्यक्ति देने के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विषयों पर जागरूकता का भी कार्य करती है। यह विशेषांक इस दिशा में एक सराहनीय और प्रेरणादायक प्रयास है।

मैं इस उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, समस्त रचनाकारों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। आपके प्रयासों से यह अंक अत्यंत आकर्षक, उपयोगी एवं संग्रहणीय बना है। मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक सभी पाठकों को नई जानकारी, प्रेरणा और अपने देश की समृद्ध धरोहर पर गर्व का अनुभव कराएगा।

ईश्वर से कामना है कि 'यूनियन सृजन' इसी प्रकार निरंतर प्रगति के नए आयाम स्थापित करती रहे और बैंक परिवार को सृजन, संवाद एवं उत्कृष्टता की नई ऊर्जा प्रदान करती रहे।

राजेश कुमार
अंचल प्रमुख, लखनऊ

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या का निरीक्षण दि. 20.01.2026

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के समिति सदस्य श्री सतीश कुमार गौतम के कर-कमलों से निरीक्षण संबंधी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव, क्षेत्र प्रमुख,अयोध्या। साथ हैं श्री राजेश कुमार, अंचल प्रमुख, लखनऊ, श्री विकास कुमार, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.), श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक(रा.भा.), श्रीमती अपूर्वा सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक(रा.भा.), श्री रतन कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.), श्री चंद्रदीप कुमार झा, सांख्यकीय सलाहकार, वित्तीय सेवाएँ विभाग तथा श्री धर्मवीर, उप निदेशक(रा.भा.), वित्तीय सेवाएँ विभाग।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी का निरीक्षण दि. 22.01.2026

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के समिति सदस्य श्री नीरज डांगी के कर-कमलों से निरीक्षण संबंधी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री शैलेंद्र कुमार, क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी। साथ हैं श्री बैजनाथ सिंह, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, वाराणसी, श्री विकास कुमार, महाप्रबंधक(मा.सं. एवं रा.भा.), श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक(रा.भा.), श्री अखिलेश कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक(रा.भा.), श्री अतुल सिंह, प्रबंधक (रा .भा.), श्री चंद्रदीप कुमार झा, सांख्यकीय सलाहकार, वित्तीय सेवाएँ विभाग तथा श्री धर्मवीर, उप निदेशक(रा.भा.), वित्तीय सेवाएँ विभाग।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे-मेट्रो का निरीक्षण दि. 19.02.2026

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के समिति के संयोजक श्री श्रीरंग आप्पा बारणे के कर-कमलों से निरीक्षण संबंधी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री मयंक भारद्वाज, क्षेत्र प्रमुख, पुणे-मेट्रो। साथ हैं श्री विपिन शुक्ला, अंचल प्रमुख, पुणे, श्री विकास कुमार, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.), श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक(रा.भा.), सुश्री पुजा वर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक(रा.भा.), श्री अभिषेक कुमार चौबे, प्रबंधक (रा.भा.), श्री चंद्रदीप कुमार झा, सांख्यकीय सलाहकार, वित्तीय सेवाएँ विभाग तथा श्री धर्मवीर, उप निदेशक(रा.भा.), वित्तीय सेवाएँ विभाग।

RNI No. MAH HIN/2016/68433

निःशुल्क वितरण हेतु

मरीन ड्राइव, मुंबई
पूजा वर्मा
अं. का., पुणे